सिखयुद्ध ।

दोनों युद्धोंका इतिहास ।

—०◇०—

कलकत्ता

२४ । १ कोलुटोलाष्ट्रीट, बङ्गवासी ष्टीम-मेशिन-प्रेसमें

श्रीकेवलराम चट्टोपाध्याय द्वारा

मुद्रित और प्रकाशित ।

ना —

सम्वत् १९५१ ।

सिखयुद्ध

दोनों युद्धोंका इतिहास।

कलकत्ता

३४।१ कोलुटोलाष्ट्रीट, बङ्गवासी ष्टीम-मेशिन-प्रेसमें

श्रीकेवलराम चट्टोपाध्याय द्वारा

भ्रम-संशोधन।

।के '४६ वें पृष्ठ अर्थात् तीसरे अध्यायके प्रथम पृष्ठकी
क्तिसे १२ वीं पंक्तितक यों पढ़ना ;—इश्तिहार जारी
उनका नाम सर हेनरी हार्डिञ्ज था। उन दिनों
सेना।तियोंमें उनका यश बड़े सम्मानके साथ गाया
ा। वह युरोपमें डांवाडोल मचानेवाले महावीर
नका अलौकिक युद्धकौशल देख चुके थे। उन दिनोंके
सेनापति, लाट गफसे चुपके मिलकर उन्होंने सिखयुद्धकी
र ली। आगे सन १८४५ ई०की १२वीं,—

और

४८ वें पृष्ठ अर्थात् तीसरे अध्यायके तीसरे पृष्ठकी १०वीं
"सेनापति वेलिङ्गटनको"—इस फिकरेके बदले "अङ्गरेज
।तको" यह फिकरा पढ़ना।

भूमिका।

इतिहास जातिका जीवन-वृत्तान्त है,—क्योंकर जातिका जन्म होता है, क्योंकर शिक्षा दीक्षा प्राप्तकर ज्ञान गौरव आदिसे जाति संसारमें परिचित होती है, आगे कालवश किन कारणोंकी उत्पत्तिसे जातिकी लय होजाती है, इत्यादि जातिकी उत्पत्ति, उन्नति तथा लयके विषय एक इतिहासहीमें लक्षित होते हैं। इस लिये इतिहासका पढ़ना उत्पत्ति अथवा उन्नतिशील जातिके लिये जितना प्रयोजनीय है, लय होती हुई अथवा अनेकानेक विघ्न विपत्तियोंसे कुटकर हर घड़ी लयका लक्षण दिखाती हुई, जातिके लिये उससे कहीं बढ़कर प्रयोजनीय है।

सिख जाति * संसार-विदित जाति है। अन्धकारमें जन्म लेकर, जन्मके दिनसे ही अत्याचारोंके कुठारोंकी हजारों चोट अङ्गोंपर धारणकर वह जैसी वीर्य्यमयी वीर जाति बन गई थी और आगे हिन्दुओंके राजा नामसे च्युत होनेके दिनों, जैसा विशाल राज्य स्थापन करके भी जिस प्रकार सर्व्वग्रासी, कराल कालके भयावने गालमें वीर्य्य, उत्साह, रणकौशल आदि अपनी सर्व्व उन्नतिके कारणरूपी गुणोंकी तिलाञ्जलि देकर वृहत् हिन्दू जातिकी अन्य शाखाओंसे प्राय: एक हो गई है, वह सामान्य शिक्षाका विषय नहीं है। सिखोंके सिर उठानेकी सामान्य

---

* सिख वृहत् हिन्दू जातिकी शाखा नामसे ही परिचित हैं। यहां जाति शब्दसे उस शाखाहीको जानना योग्य है।

पैदा मात्र करनेके दिनों, जिन्होंने महावीर गुरु गोविन्द सिंह और उनके लोहेकी मूर्त्तिसमान चेलोंपर औरङ्गजेब बादशाह और उसके अत्याचारकी मूर्त्तिरूपी मुलकी मददकारियोंकी संसार-डरा-वनी कठोरता देखी थी, उनको कब मालूम हुआ था, कि सदाके वीर-प्रतिष्ठासे सुमण्डित अफगान वीरोंको भी लड़ाईमें गीदड़ोंकी तरह भागनेमें लाचार करनेवाले, महावीर रणजीत सिंहका जन्म होगा और उनसे महाराज्य स्थापित होकर संसारसे राज-पूजा लेनेवाली प्रचण्ड वृटिश जातिसे भी सिखोंकी पूजा होगी? और जिन्होंने पञ्जाबके प्रसन्न दिन आंखोंसे देखे थे, उन्होंने कब सोचा था, कि यह राज्य, यह चटक मटक, यह साहस, यह उत्साह सबही दो दिनमें लय-सागरके बुलबुले बन जायंगे तथा पञ्जाब-केशरीके पुत्र-रत्नको स्वराज्य, स्वजन, स्वधर्म्म—एक बातमें पितासे प्राप्त सर्व्वस्वसे हाथ धोकर विदेशी, भिन्नधर्म्मी राजाकी कृपा मात्रका भिखारी बनकर जीवनकी गठरी ढोते हुए म्लेच्छोंकी कबरमें सोना पड़ेगा? पर विधाताकी अलङ्घ्य विधिसे यह सभी बात सङ्घटित हुई है। जो इन विष-योंका सच्चा इतिहास विशेष शिक्षाकी वस्तु होना आश्चर्य ही क्या है?

सिख जातिका इतिहास तो शिक्षाप्रद है ही; पर उस इतिहासका अन्तिम भाग अर्थात् रणजीत सिंहके महाराज्यकी लय और उसके साथ साथ सिख जातिके सिखपनमें बट्टा लगा-नेका वृत्तान्त बहुत ही प्रयोजनीय विषय है—विशेषकर इन दिनों लयके दुःखदायी लक्षणोंको दिखाती हुई, हिन्दू जातिके लोगोंके लिये सर्व्वथा आलोचना-योग्य है। हमारा यह "सिखयुद्ध" नामका इतिहास सिख जातिके इतिहासका वही

भाग है। वास्तवमें यह केवल सिख जातिका सौभाग्य डूबनेका ही इतिहास नहीं है ; इससे सम्पूर्ण भारतके सौभाग्यसे भी विशेष सम्बन्ध है। सिखयुद्धने ही पञ्जावके साथ साथ सम्पूर्ण भारतके भी स्वाधीनता-सूर्य्यको अस्तकर भारतमें नया जमाना उपस्थित किया है। यद्यपि भारतके अनेक अंश सिखयुद्धके बहुत पहिले अङ्गरेजोंके हाथ लग गये थे, पर जिस दिन सोवरांवके युद्धमें अपने खूनसे हिन्दुस्थानके नक्शेको संपूर्ण लालकर पञ्जावके वीरोंने अपने मृत राजा रणजीत सिंहकी भविष्यद्वाणी पूरी की, उसी दिनसे भारतकी ठीक ठीक विजय हुई ; उसी दिनसे ब्रिटिश सिंहको आरामकी नींद सोनेका अवसर हुआ ; उसी दिनसे भारतवासियोंकी आशा, रुचि, सुख, दुःख आदि जीवनके सम्पूर्ण भावोंकी गति एकबार ही पलट गई—अथवा यहांतक कहा जा सकता है, कि इस प्रायः आधी सदीमें भारतवासियोंके पूर्व्वसे एक प्रकार भिन्न ही जीव बन जानेका आरम्भ उसी युद्धमें सिखोंकी पराजयसे होने लगा है। इस लिये इस जातीय परिवर्त्तनके कारणरूपी सिखयुद्धका इतिहास मनुष्यमात्र, विशेषकर भारतवासी मात्रके लिये आलोचनाका विषय निःसन्देह है।

इतिहासमें प्रायः घटनावली ही दर्ज रहती है ; पर इतिहास पढ़नेमें उक्त घटनावलीसे केवल किस्सा मात्र पढ़नेका आनन्द न उठाकर उन घटनाओंका पारस्परिक सम्बन्ध विचारना उनके प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष फलोंको निर्णय करना आदि इतिहास पढ़नेवालोंके लिये बहुत ही जरूरी है। नहीं तो इतिहास पढ़नेका फल नहीं प्राप्त होता है। अवश्यही इस पुस्तकके स्थान स्थानमें इस प्रकार सम्बन्ध तथा उक्त फल आदि

सुझानेकी चेष्टा की गई है; पर पाठकोंकी वैसी प्रवृत्तिके विना वह चेष्टा निरर्थक ही होगी। एक तो सिख-युद्धका इतिहास अपना जातीय इतिहास है; तिसपर उसके बाद दिन भी बहुत नहीं गुजरे हैं; सो उन घटनाओंको वर्त्तमानसे मिलाकर ध्यानसे फल आदि निर्णय करना बहुत कठिन नहीं है। अङ्गरेज महाबली निःसन्देह हैं; इसके उपरान्त मानों सौभाग्य-लक्ष्मीने भारतके प्रत्येक खण्डको अति प्रसन्नता पूर्वक उनका हस्तामलक बनाकर भारतवासियोंको उनके अधीन बना दिया। अङ्गरेजी सौभाग्य-लक्ष्मीके यह सब कौशल सर्व्वथा विचारने योग्य विषय हैं। जिन्हें इन सब विषयोंको सोचने समझनेकी शक्ति अथवा रुचि भी नहीं है, उनको इतिहास न पढ़ना ही अच्छा है; क्योंकि पढ़नेसे फायदा न होगा। पर यदि ऐसे लोगोंको भी इस इतिहासको आलोचनाके साथ पढ़नेकी प्रवृत्ति कुछ भी हो, तो हम परिश्रमको सार्थक समझेंगे।

ग्रन्थकार

सिखयुद्ध ।

पहिला अध्याय ।

पञ्जाबकी दशा ।

सन् १८३९ ई॰की २०वीं जूनको भारतके एक महाप्राणकी इस संसारसे विदा होगई। जिस महावीरका प्यारा नाम स्मरण करते पञ्जाब-वासियोंकी आजकी कमजोर नसें भी फड़क उठती हैं, जिनका अफगान-डरावना नाम अभीतक अफगान-माताके लिये बच्चेको सुलानेका मन्त्रसा बना हुआ है, संसार-विजयी अङ्गरेजोंको भी जिन्हें "पञ्जाब-केशरी"की गौरव-मण्डित उपाधि देकर वीर नामकी पूजा करना पड़ी थी, उस पञ्जाब-राज्यके प्रतिष्ठाता, वर्त्तमान युगके एकमात्र परिचित राजनीतिज्ञ वीरचूड़ामणि महाराज रणजीत सिंहका देहान्त होगया। शुभक्षणमें जन्मे हुए इस महापुरुषके जीवनसे ज्ञात होना मनुष्य मात्रका कर्त्तव्य है। पर हमको यहां केवल उनके बनाये राज्यसे ही प्रयोजन है। उन दिनोंके अफगान-नरेशसे लाहौर मात्रके शासनका भार प्राप्त कर उन्होंने अपने बुद्धिबल तथा भुजबलसे जो विशाल राज्य स्थापन किया था, वह आजके पञ्जाबसे कहीं बड़ा था। जो बृहत् राज्य आज काश्मीर नामसे प्रसिद्ध है; वह तथा उसके अन्तर्गत गिलगिट आदि

रणजीतके बनाये पञ्जाब राज्यके अन्तर्गत थे। इन प्रदेशोंको राज्यकी उत्तर सीमा और लाहौरहीको राजधानी स्थिर रखकर उन्होंने दक्खिनमें मुलतान और पश्चिममें अफगानोंसे छीन लेकर पिशावर तक राज्य बढ़ाया था; केवल पूर्व्वमें अपनी सुबुद्धि-जटित राजनीतिसे सतलजके इस पार बढ़कर प्रतिदिन चढ़ते बढ़ते हुए अङ्गरेजोंके साथ रार मचाना अनुचित समझा था। यदि लाहौरका शासनभार पानेके चार वर्षके अन्दर ही सन् १८०४ ई०में अङ्गरेजोंने वहांतक अपना अधिकार न फैलाया होता, तो इधरके भी अनेकानेक खण्डोंका पञ्जाबकेशरीके अधीन हो जाना असम्भव नहीं था। ऐसेही वृहत् राज्यको अपने पीछे अयोग्य सन्तानोंके झगड़ेका माल बनाकर पञ्जाब-नरेश रणजीत सिंह उनसठ वर्षकी अवस्थामें परलोक सिधारे।

राजाके बाद बड़े राजकुमारको राज्य मिलनेकी हिन्दुओंकी सनातन सुन्दर रीतिने पञ्जाबके लिये सुफल प्रसव नहीं किया। यदि रणजीतकी मृत्युके बाद पञ्जाबमें भिन्न व्यवस्था होनेकी सम्भावना रहती और विधिको वह बात मञ्जूर होती, तो कदाचित इतनी जल्दी पञ्जाब-केशरीके प्रिय राज्यका सर्व्वनाश न होता। खड्ग सिंह रणजीतके जेठे बेटे और नौनिहाल सिंह रणजीतके पोते तथा खड्गके पुत्र थे। राजस्थान—मेवाड़के ध्रुवतारा राणा प्रताप सिंहको बड़े दुःखसे प्रगट करना पड़ा था, कि यदि मेरे दादाजी राणा संग्राम सिंह और मेरे बीच कोई मेवाड़की महिमा-भरी राज-गद्दीका कण्टक न होता, तो मेवाड़के लिये बड़ा सुमङ्गल होता। यह बात मेवाड़से दसगुनी अधिक पञ्जाबके लिये घटित हो सकती है। सुबुद्धि, साहस, उत्साह आदि राजाके योग्य गुणोंसे एकबारही रहित खड्ग सिंहके गद्दीपर

बैठनेमें देर न हुई, कि पुराने विज्ञ मन्त्री ध्यान सिंह निकाले जाकर राज्यके अमङ्गलकी चेष्टा करते हुए, अपने सिख नाममें ग्लानिका धब्बा लेने लगे और खड्गके प्यारे, मूर्ख, निकम्मे तथा सर्व्वथा विश्वासके अयोग्य चेत सिंहको मन्त्रीका पद मिलना भी राज्यके लिये सब प्रकार अमङ्गलकारी हुआ। "चौपट्ट" राजा अपने "अन्धेर"कारी मन्त्रीपर राज्यका भार सौंपकर ऐशके सोतेमें डूब गये। राजभवनमें शराबके फव्वारे छूटने लगे; औरोंकी बात जाने दीजिये, अयोग्य पिताके घृणित व्यवहारोंसे राज्यके भविष्यतके अन्धकारमय देखकर उमरमें कच्चे पर बुद्धिमें प्रवीण पुत्र नौनिहाल सिंहको भी बड़ी आशङ्का हुई। आशङ्का निर्म्मूल न थी। शेर सिंह नामक एक सिखने अपनेको रणजीत सिंहका पुत्र कहकर खड्गसे चेटा तथा हरबतमें योग्य होनेके दावेके साथ उन दिनोंके अङ्गरेज बड़े लाट अकलण्ड बहादुरकी दस्तन्दाजीसे गद्दी पानेकी चेष्टा की थी। लाट साहबको यह प्रार्थना पूर्ण कर वास्तवमें उन दिनोंके सर्दार-रहित सिखोंको चिढ़ाना मञ्जूर होनेसे यदि शेरको गद्दी न भी मिलती, तो राज्यका और भी जल्द सर्व्वनाश होना असम्भव न था।

इस समयतक सिख जातिकी प्रचण्डता पूर्व्ववत् बनी थी। धर्म्मवीर नानकने जो धर्म्मसंप्रदाय स्थापन किया था; उनके बादके अनेकानेक गुरुओंने अपने प्रबल वीरतायुक्त धर्म्मभावसे जिस मनुष्य-मण्डलीमें धर्म्मके लिये सर्व्वस्व गंवानेकी वीराग्नि बाल दी थी, रणजीतकी अपूर्व्व जय-लालसाने जिसे संसार-विजयकी अनोखी कामनासे उत्साहित किया था, उसकी प्रचण्डताका विशेष परिचय देनेका प्रयोजन नहीं है। रणजीतकी भांति राजनीतिज्ञ राजाको यदि कुछ अधिक दिन राज्य करनेका

अवसर होता, तो इस अटल वीर-मण्डलीमें राज्य-शासनयोग्य सुबुद्धिका आना सर्व्वथा सम्भव होता। पर दुर्भाग्य वश वह अवसर उनको बहुत सामान्य ही प्राप्त हुआ था। रणजीतके दिन अधिकतर राज्य जमानेमें ही व्यतीत हुए थे। गद्दीपर स्वच्छन्दतासे बैठकर शासनकी सुनीति प्रगट करनेका मौका बहुत थोड़ा ही मिला था। इस लिये इस वीर-राज्यमें दुर्ब्बल राज्योंकी भांति कुटिल बुद्धि, परस्परमें पूर्ण प्रेम भावकी कमी, तथा फूट आदिका सामान्य विस्तार न था। रणजीतके स्थापित राज्यमें छोटे छोटे राजा अनेक थे। उन्होंने रणजीतको अपनीसी अवस्थासे बढ़ते देखा था; सो उनके चित्त भी उस प्रकार जयकी आशासे एकवारही वर्जित न थे। एक रण-जीतके प्रतिष्ठित राजवंशकी अधीनता स्वीकार करनेवाली खालसा सेनाका अनन्त विश्वास सबकी कुटिल बुद्धिको दवाये रखता था। पर यह सेना रणजीतकी अधीनताके गौरवसे फूलकर राजपदके अयोग्य निरे मूर्ख दुराचारी खड्ग सिंहके कुशासनसे क्योंकर प्रसन्न हो सकती थी? इस वीरमण्डलीमें बड़ा असन्तोष फैल गया था। सो राजा प्रजामें इस प्रकार अप्रेमके दिनोंसे राज्यकामी बलवन्त पड़ोसी राजाके लिये राज्य-लाभकी लालसा पूरी करनेका और क्या अच्छा अवसर हाथ लग सकता था? इस मिसमें हमको अङ्गरेज अजण्ट करनल वेड साहबका नाम लेना पड़ता है। करनल वेडने प्रजाके घोर असन्तोषकारी राजा खड्ग सिंह और कुमन्त्री चेत सिंहका पक्ष लिया और मानो बलदर्पित प्रजाका असन्तोष बेहद्द कर देनेके वास्ते ही खुलाखुली प्रगट किया, "चाहे जैसी ही विपद क्यों न आवे, हम खड्ग सिंहके एक बालपर भी आंच न आने देंगे।"

इस प्रकार सिख-जातिकी अप्रसन्नताके बदले राजाके गुरु खड्गको अपना प्रेमी बनाकर वह राज्यमें सिखोंकी हानिकारी, पर अङ्गरेजोंके फायदेकी बहुतेरी चाल दिखाने लगे।

रणजीतके पोते खड्ग-पुत्र नौनिहाल सिंहका उल्लेख पहिले कर चुके हैं; इस प्रवीण बालककी गम्भीरता देखकर लोगोंने उसे दूसरा रणजीत विचारा था, स्वयं रणजीत सिंह ही उसकी सुबुद्धि और रणकौशलसे मोहित होकर कहा करते थे, "मेरी मृत्युके बाद पञ्जाबवासी इस लड़केको ही अपना सच्चा राजा पावेंगे।" बालक नौनिहाल सिंहको राज्यकी यह शोचनीय दशा देखकर आंसू गिराने पड़े। उन्होंने विलक्षण विचार लिया, कि कुटिल मन्त्री चेत सिंह और अङ्गरेजी स्वार्थमात्र चाहनेवाले कारनल वेडके रहते पिताकी मतिगति सुधरनेकी सम्भावना नहीं है। और सुप्रबन्धके बिना इतनी खूनखराबीसे स्थापित विशाल राज्यके टिकनेकी सम्भावना भी नहीं है। सो नौनिहाल सिंहको हृदयमें रोकर पिताको इन कुमन्त्रियोंसे बचानेकी तदबीर करना पड़ी। राज्यरक्षाके लिये कुमारने अपने सदाके विरोधी जम्मूके राजा ध्यान सिंहकी शरण ली। ध्यान सिंह लाहौर दरबारके अधीन राजा थे। पर वह सदासे हरेक उत्साहशील नरेशोंकी भांति शक्ति प्राप्त करनेकी बड़ी लालसा रखते थे। रणजीत सिंहकी मृत्युके बाद एकमात्र कुमार नौनिहाल सिंहकी प्रबल बुद्धिमानी ही उनकी लालसाकी बाधक थी। पर आज स्वयं नौनिहाल ही उनकी शक्तिके भिखारी हैं। ध्यान सिंहके हौसिलेका पुरुष ऐसे मौकेको कब त्याग सकता है? ध्यान सिंहने शीघ्रही लाहौर पहुंचकर दरबारमें राजाके सामने ही मन्त्री चेत सिंहकी जान ली। इस प्रकार

शत्रुसे शत्रुका वध कराके कुमार नौनिहालने करनल वेडसे पार पानेकी दरखास्त सिखोंके जरिये अङ्गरेज कर्त्तारोंके यहां कराई। यहां भी कुमारकी बुद्धिमानी ही सूचित हुई। करनल वेडके बारेमें चेत सिंहकासा वर्त्ताव न कर महावली अङ्गरेजोंको चिढ़ानेसे बाज रहना अठारह वर्षके बालकके लिये सामान्य बुद्धिकी बात न थी। अङ्गरेजोंने भी इतनी जल्दी सिखोंको अप्रसन्न करनेका सु-अवसर न समझा। लाट आकलण्डने करनल वेडको लाहौरसे हटाकर सन् १८४० ई०के अप्रेल महीनेमें क्लार्क साहबको लाहौरका अजण्ट नियुक्त किया। पर पञ्जाब-वासियोंने शीघ्रही समझ लिया, कि सभी गोरे एक होते हैं। क्लार्क साहब करनल वेडकी भांति राजा खड्ग सिंहका पक्ष लेकर अङ्गरेजोंका स्वार्थजाल फैलाने लगे।

जम्मूके राजा लोग पहिलेसे तो बहुत बढ़ चढ़ रहे ही थे। फिर चेत सिंहकी हत्याकी बहादुरी प्रगट करनेके दिनसे उनका हौसिला विलक्षण बढ़ गया। सो कुमार नौनिहालको इन्हे दबानेकी फिक्रमें होना पड़ा। राज्यमें अनेक विरोधी दलोंका होना और उनका परस्परके विरोधसे दुर्बल होना, राज्यकी लालसावाले पड़ोसी राजाके लिये बहुत ही प्रार्थनीय है। नहीं जानते, अङ्गरेज अजण्ट क्लार्क साहबके चित्तमें ऐसी चिन्ता उपस्थित हुई थी, कि नहीं ; पर उनका कार्य्य ऐसेही सन्देहका कारण हुआ था। जम्मूके नरेशोंको दबाकर राज्यमें शान्ति फैलानेके लिये कुमार नौनिहाल जो प्रबन्ध कर रहे थे, एक विचित्र कौशलसे क्लार्क साहब उसके बाधक हुए। करनल वेडने अपने जमानेमें कुमार नौनिहालके चरित्रपर जो कलङ्क लगाया था, क्लार्क साहबने उसे पुष्ट किया। करनल वेडने सिर्फ जबानी कहा

था, कि कुमार नौनिहाल अफगान सरदारोंसे अङ्गरेजोंके विरुद्ध साजिश करते हैं ; लार्ड साहबने उस अभियोगकी चिट्ठी भी निकाली। साबित करना चाहा, कि कुमार अपनी मोहरदार चिट्ठी भेजकर अङ्गरेजोंके बनाये अफगान अमीर शाह सुजाकी प्रजाको उभाड़ते हैं, और अङ्गरेजोंके कट्टर दुश्मन दोस्त मुहम्मदको धनकी सहायता देना इकरार करते हैं। पर बुद्धिमान नौनिहाल सिंहके लिये इन चिट्ठियोंको जाली सिद्धकर अपने चरित्रको निष्कलङ्क प्रगट करना तथा सत्यकी महिमासे निन्दाकारियोंका मुंह काला करना असम्भव न था। उन्होंने यह सब तो किया ; पर इन चेष्टाओंमें फंसे रहनेके कारण जम्मूके नरेशोंके अनूठे होसिलेकी सुशिक्षा देनेमें बड़ी देर पड़ गई ; यहांतक कि शत्रुओंको साजिश करके इनके प्राण लेनेका मौका मिल गया। पञ्जाबका एक अनमोल रत्न खो गया। रणजीतके बाद पञ्जाब राज्यके राजा होकर पञ्जाबियोंकी महिमा बढ़ानेमें एकमात्र समर्थ युवा कुमार नौनिहाल सिंह २० वर्षकी आयुमें सिख जातिको रुलाकर मृत्युलोकको पधारे। एक वर्ष राज्य करनेके बाद सन् १८४० ई०के नवम्बर महीनेमें खड्ग सिंहकी मृत्यु होगई थी। पिताकी प्रेत-क्रिया समाप्त कर कुमार नौनिहाल सिंह जम्मू नरेश ध्यान सिंहके भाई गुलाब सिंहके जेठे बेटे उत्तम सिंहके साथ हाथीपर बैठे एक तोरणके नीचेसे जा रहे थे। इतनेमें तोरणका गिर जाना उनकी मृत्युका कारण बताया गया। पर कोई अङ्गरेज इतिहास लिखनेवाले भी जम्मू नरेशोंको इस मृत्युमें गुप्त चाल रहनेके कलङ्कसे रिहाई न दे सके।

पञ्जाबकी राजगद्दी खड्ग सिंहकी मृत्युके बाद खाली हुई। कुमार नौनिहालकी शोकमयी अकाल-मृत्युसे राजा होने योग्य,

और शेर सिंहको राज्यका अधिकार पानेके सम्पूर्ण योग्यपात्र सिद्ध करते हुए जाहिरा अपनेको सिख राज्यके परम हितैषी दिखाने लगे। किसीके मनमें अपने विरुद्ध कोई सन्देह न उठने देनेके लिये उन्होंने और एक कौशल किया। अपने बड़े भाई गुलाब सिंह और पुत्र हीरा सिंहको लाहौरके दरबारमें रखकर वह जम्मू पधारे और जाते समय शेर सिंहको लिखा, "मैंने सर्दारों तथा सेनाओंको आपके स्वागत करनेकी सुबुद्धि दी है ; आप आकर अब बिना बखेड़े राजगद्दी दखल कर सकते हैं।" इस चिट्ठीको पाते ही शेर सिंह फूले अङ्ग न समाये और अङ्गरेज अजगटको भी कह सुनकर अपने हौसिलेके पक्षमें बना लिया। इस प्रकार सब भांति साजिशकी पाबन्दी कर सन् १८४२ ई०की १३ वीं जनवरीको मुकेरियांसे पधारकर शेर सिंह लाहौरके पासही फतहगढ़में पहुंचे। ध्यान सिंहके जालमें फंसे हुए बाशिन्दोंने शेर सिंहका आदर सत्कार किया। इतनी देरके बाद महारानी चांद कौरकी आंखें खुलीं। पर तब आत्म-रक्षाका उपाय निश्चय करना असम्भवसा होगया था। केवल शहरका फाटक बन्द करनेकी आज्ञा मात्र देकर उनको अपने भाग्यकी करामात देखते रहना पड़ा। फाटक बन्द करनेकी आज्ञा अवश्यही मानी गई ; पर फ़ाटकके रखवाले भी तो ध्यान सिंहके प्रबन्धके पुतले बन गये थे। शहरमें घुसकर शेर सिंहको किले तक पहुंचनेमें कोई दिक्कत न हुई। अब गुलाब सिंह और हीरा सिंह दुर्गको बचानेके बहाने तोप दागने लगे। तुरन्त ही ध्यान सिंहने छोटे भाई सुचेत सिंह और फरासीसी लड़ाके बेन्तुराकी अधीनतामें बड़ी सेना चढ़ा लाकर तोपोंका दगना बन्द कराया। इस प्रकार घोर विश्वासघातसे पञ्जाबके

सच्चे अधिकारीके वंशसे पञ्जाबकी राजगद्दी छीन ली गई। शेर सिंहको राणा बनाकर उनके मन्त्री बननेकी बड़ी आशा ध्यान सिंहने इस विश्वास-घातके बदलेमें पूरी की। चांद कौरके खर्च निवाहनेके वास्ते एक जागीरकी व्यवस्था की गई; अपनी जागीर जायदादको शेरके सेवकोंकी लूटका माल बनाकर अङ्गरेजोंकी शरणमें भागकर महारानीके दुर्ब्बल सहाय अतर सिंह और अजीत सिंहने जान बचाई। और जुलाई महीनेमें नौनिहाल सिंहकी विधवा स्त्रीके एक मृत सन्तान प्रसव करनेसे राजा शेर सिंह एकबारही निष्कण्टक हुए।

सिख जातिको अपनी भूल अनुभव करनेमें देर न हुई। गद्दी पाते ही शेर सिंह ऐशके सोतेमें डूब गये। वेश्या और मदिराका मजा उड़ानेमें पहिले सामान्य सरदार मात्र रहनेके लिये जो कुछ असुबीता भोगना पड़ता था, अब राज्याधिकारी राजा होनेसे उसकी कसर खूब मिटने लगी। ध्यान सिंहकी राजनीतिक बुद्धिसे शेर सिंहके राजा होते मात्रही सेनाकी तनखाह एक रुपयेके हिसाबसे बढ़ जाना अवश्यही उसके आनन्दका कारण हुआ था। पर राणाका यह अयोग्य चरित्र प्रगट होनेसे उस आनन्दके बदले उसे केवल पश्चात्ताप ही सहना पड़ा। ध्यान सिंहको हजार कुटिलताका दोष लगाया जावे, अपने कार्य्यसे निर्म्मल सिख-चरित्रको विश्वासघातकी स्याहीसे कलङ्कित करनेकी हजार निन्दा उनके माथे मढ़ी जावे; पर कट्टरसे कट्टर विरोधीको भी उनकी राज्यशासन-शक्तिकी प्रशंसा करना पड़ती है। यदि वह खयालके वशीभूत होकर उस प्रकार कुकार्य्योंसे अपनेको दूषित न करते तो निःसन्देह, उनके समान वीर धीर तथा रणजीत सिंहके गौरवमय मन्त्रित्वसे सुशिक्षित राजनीतिज्ञ

पुरुष-सिख-जातिका दुर्लभ रत्न गिना जाता। पर राजा शेर सिंहके चरित्रने दुर्ज्जय खालसा सेनामें इस कदर घृणा भर दी थी कि उनकी भी राजनीतिक बुद्धिकी एक न चली। अब खालसा सेना ऐसे राजासे एक प्रकार स्वतन्त्र बनकर अपने विरोधियोंका नाश करने लगी। सिख राज्यमें स्थित बहुतेरे गोरे अपने हठधर्मसे लोगोंके इस प्रकार विरागभाजन होगये थे, कि सिख सेनाका ऐसा वर्त्ताव देखकर उनको जान लेकर भागनेमें राह न मिली। अत्याचारियोंके शासित करनेकी वह न्यारी चाल सेनाने केवल राजधानीहीमें आबद्ध नहीं रखी, काश्मीर पिशावर आदि पञ्जाब राज्यके दूर दूर प्रान्तोंमें भी इसका पूर्ण वर्त्ताव होने लगा। पर सेनाके एक प्रकार नेता-हीन होने पर भी यह वर्त्ताव केवल अत्याचारीमात्र ही पर घटित होता था—इतना विचार सेनाके लिये गौरव और राज्यकी हितैषिताका कम प्रमाण नहीं है।

महाराज शेर सिंहने स्वयं ही सेनामें जो इस उत्साहकी आग बाल दी, उसे रोकनेमें अपनेको असमर्थ जानकर उनकी घबराहटका पार न रहा। सदासे राज्यके भूखे अङ्गरेजोंके लिये, पराये राज्यकी यह अशान्त दशा मेवेकी भांति प्रतीत होनेसे कब बच सकती थी? ऐसे अवसरमें पञ्जाबपर हस्तक्षेप करनेकी लालसा प्रगट करना अङ्गरेजी चरित्रके लिये कुछ भी अस्वाभाविक न था। पञ्जाब-नरेशकी पूरी अनिच्छा रहने पर भी, अङ्गरेजोंने उनसे यह प्रस्ताव किया, कि हम बारह हजार हटिश वीरोंके साथ पञ्जाबमें घुसकर तुम्हारी [illegible] सेनाको दबा देनेके लिये तय्यार [illegible] हैं; इसके बदलेमें तुम्हे हमको ४० लाख रुपया और सतलजके दक्षिणके खण्डोंको दे देना होगा। इस प्रस्तावसे

बेतरह घबराकर शेर सिंहको लिखना पड़ा, कि आपका प्रस्ताव मान लेनेसे अपनी प्रबल सेनाके हाथसे मेरी जान जाते देर न लगेगी। वास्तवमें विदेशियोंका स्वराज्यपर हस्तक्षेप होना सिखोंके लिये ऐसाही असह्य था। अङ्गरेजी राज्यमें भागे हुए जेठे भाईको सहायतासे सरदार नौल सिंहको पञ्जाबमें अङ्गरेजी सेना चढ़ा लानेकी चेष्टा करते देखकर उनकी अधीन सेनाने ही उनके खूनसे इस पाप इच्छाका तर्पण करनेमें जरा भी विलम्ब न किया। शेर सिंहके सौभाग्यवश अङ्गरेजोंके प्रस्तावानुसार कार्य्य करनेसे पहिले ही सिख सेना अत्याचारियोंका बदला लेकर शान्त होगई। परन्तु इसीसे क्या हो?—ऐसे शुभ अवसरको एकवार ही त्याग देना तो अङ्गरेजी प्रकृतिके विरुद्ध था। उन दिनोंके अफगानस्थानमें स्थित अङ्गरेज अजराट्ने प्रकाश किया, कि अबसे पञ्जाब राज्यसे हमारी बनाई सन्धि टूट गई और पिशावरको हम सिखोंसे छीन लेकर अफगानोंको भेंट करेंगे। प्रसिद्ध ऐतिहासिक कनिङ्गम साहब लिखते हैं, कि यद्यपि पहिले कलकत्तेकी लाट-कौन्सिलको अपने प्रतिनिधि अजराट्के ऐसी बात जाहिर करनेसे नाराजी हुई थी, पर पीछे इस इस्तिहारसे अफगानोंमें अङ्गरेजोंपर आन्तरिक प्रेम उपजानेकी अनोखी आशासे कौन्सिलके मेम्बर लोग इतने प्रसन्न हुए, कि सिखोंके असन्तोषकी परवा न की।

सिख लोग अङ्गरेजोंसे सन्धि रहनेके घमण्डसे निश्चिन्त थे। अब इस प्रकारकी उक्ति युक्ति सुनकर चकित होगये। पहिले भी अवश्यही एकाध बार अविश्वासका कारण हुआ था, जिसका कुछ कुछ हाल हम भी जता चुके हैं; पर इस समयसे अविश्वास क्रमशः बढ़ने लगा। इन अविश्वासोंका हाल दूसरे

अध्यायमें प्रगट करेंगे। यहां सिर्फ पञ्जाबकी भीतरी दशा ही सूचित करना है। वास्तवमें यही भीतरी झगड़ीली दशाही पञ्जाब राज्यके लिये काल-स्वरूप हुई। ऐसा न होनेसे रणजीत-गठित नवीन युद्धनीतिके अनुसार युरोपीय योद्धाओंसे सुशिक्षित, अपनी अदम्य वीरतासे संसारके नेत्र झलकानेवाली महावीर खालसा सेनाके रहते, कब किस विजातीय राजाके लिये पञ्जाब-वासियोंको चिढ़ानेकी हिम्मत होती? कब इन नर-सिंहोंसे रक्षित पञ्जाब राज्यकी अकालमें लय होती? पर विधिकी विधि ऐसी ही थी—किसे मालूम हो सकता है, कि उस मङ्गलमयकी लीला, किस गुप्त मङ्गलके अर्थ प्रकट होती है?

उस प्रकार उक्तिके बाद ही अङ्गरेजोंकी अफगानस्थानमें बड़ी बेइज्जती हुई। इस इतिहाससे उसका किसी किसी विषयमें सम्बन्ध रहनेसे उसका संक्षेप वृत्तान्त दूसरे अध्यायमें देना होगा। यहां सिर्फ इतनाही कहनेसे यथेष्ट होगा, कि उस बेइज्जतीका बदला लेनेके लिये अङ्गरेजोंको सिखोंकी भी सहायता लेना पड़ी। और शायद इसी स्वीकृत सहायताकी कृतज्ञता अथवा किसी दूसरे राजनीतिक कारणसे पूर्व्वोक्त युक्ति जलदी काममें न लाई गई। बल्कि उन दिनोंके लाट एलेनबराने सिखोंकी सहायता खुलाखुली मान कर, और फीरोजपुरमें अपनी तथा सिख सेनाओंकी नकली लड़ाई दिखानेके मिसमें दोस्तीका डङ्का जोरसे बजाकर सिखोंके हृदयमें उपजे हुए अविश्वासको दूर करना चाहा। पर पत्थरपर लकीर होनेसे वह कभी मिटती नहीं; वीर सिखोंके हृदयका अविश्वास भी नहीं छूटा; बल्कि सिख लोग विचारने लगे, कि इस विचित्र कौशली अङ्गरेज जातिकी इस

दोकोंकी चालमें भी कुछ गुप्त मतलब न हो। यदि अङ्गरेजोंने इसके बादके बर्त्तावोंसे इस सन्देहको सत्य प्रगट न किया होता, तो अवश्यही सिखोंका यह अविश्वास निन्दाकी वस्तु निःसन्देह कहला सकता। इन राजनीतिक चालोंके दिनों भी यद्यपि राजा शेर सिंहका चरित्र कुछ भी न सुधरा था यद्यपि पूर्व्ववत् राजनीति-कुशल ध्यान सिंहके हाथ राज्यका सब भार अर्पणकर कुत्सित विलास हीको वह जीवनका सार समझे हुए थे, तौभी सिख जातिका उनसे पहिलेकी भांति खुलाखुली विरोध न था ; बल्कि उसे क्रमशः इस प्रकारकी राजवृत्ति सहनेका अभ्यास हो रहा था। ऐसेही अवसरपर किसी गुप्त हत्यारेके कायर हाथसे वीरमाता चांद कौरकी हत्या होगई। इस समाचारने सिख जातिको चकित किया। कोई भी हत्या-मामलेमें शेर सिंहको निर्दोष न मान सका। ध्यान सिंहके सहस्रों चेष्टा करने पर भी सिख जातिकी घोर घृणा इस चरित्र-रहित राजा नामधारी पर पुनः स्थापित हुई।

शेर सिंहके गद्दी छीनते समय सिन्धींवाले अतर सिंहके अङ्गरेजी अधिकारमें भाग जानेका हाल पाठकोंको स्मरण होगा। अतर सिंहने अङ्गरेजोंको खुशामदसे इस प्रकार मोह लिया था, कि अङ्गरेजोंने सिन्धनवालोंसे राजा शेर सिंहका झगड़ा मेटनेके लिये प्रयत्न किया। अङ्गरेजोंकी जिदसे हजार अप्रीति रहने पर भी शेर सिंहने सिन्धांवाले सरदारोंको फिर राजधानीमें बुलानेका विचार किया। ध्यान सिंहकी शक्ति इन दिनों इतनी प्रबल होगई थी, कि उन्होंने इस विषयमें छेड़छाड़-कर अङ्गरेजोंको चिढ़ाना अनुचित समझा। लहना सिंह कैदसे छूटकर और अतर तथा अजीत सिंह फिर बुलाये जाकर राज-

धानीमें रहने लगे। उनकी लुटी हुई जमीन जायदाद भी लौटा दी गई। जिन सिन्धांवाले सरदारोंने मधुर वचनसे अङ्गरेजोंको भी प्रसन्न किया था, शेर सिंहको मोहित करना उनके लिये कुछ भी कठिन न था। ध्यान सिंहकी शक्ति घट गई; इनकी कुपरामर्शसे राज्यका संपूर्ण कार्य होते रहना सिख जातिको भी असह्य होने लगा। मन्त्री ध्यान सिंहमें स्वार्थसिद्धिके अर्थ कुकार्य्यतक करनेकी प्रवृत्ति रहने पर भी उनका स्वार्थ प्रजामें बहुत असन्तोष नहीं फैलाता था; क्योंकि वह स्वार्थ केवल स्वयं शक्तिमान होनेका था; और शक्ति प्राप्त करके वह उस शक्तिको प्रजाके हितार्थ चलाते थे। पर सिन्धांवाले शक्ति लाभ कर उस शक्तिको प्रजाके हित अहित पर ध्यान न देकर केवल अपने फायदेके लिये चलाते थे। इस प्रकार घृणित स्वार्थ प्रबल स्वाधीनता-प्रेमी सिख जातिको क्योंकर सह्य हो? पर युद्धमें, कट्टर शत्रुके सामने सिख जातिकी धीरता जिस प्रकार चिर-परिचित है, सांसारिक कार्य्यमें भी सिखवीर उस स्वाभाविक धैर्य्यसे च्युत नहीं होते हैं। सिख-चरित्रके इसी प्रशंसायोग्य गुणसे ही सिंधांवालोंकी रचा हुई और अति घृणित जाल फैलाकर वे राज्यमें घोर अशान्ति फैलानेमें समर्थ हुए।

सदा छायाकी भांति साथ घूमनेवाले सिन्धांवालोंने नशेमें मत्त राजासे मन्त्री ध्यान सिंहकी हत्याका परवाना लिखकर दस्तखत करा लिये। आगे ध्यान सिंहको वह आज्ञापत्र दिखाकर उस अटल राजनीतिज्ञको भी मगजमें सन्देहका चक्कर ला दिया। शेर सिंहकी अकृतज्ञताके इस स्पष्ट प्रमाण तथा जाल-साजोंकी अखण्डनीय युक्ति तर्क तथा अपनी हत्याके आज्ञासूचक और भी अनेक सबूत देखकर ध्यान सिंह

अन्तमें क्रोधके वशीभूत होगये। कुचक्री सिन्धांवालोंका अभीष्ट सिद्ध हुआ। उन्होंने राजाके वधका भी एक आज्ञापत्र बनाकर क्रोधसे मत्त मन्त्रीसे उसपर दस्तखत करा लिये। षाणिशकी विकट मध्धिमासे राजा मन्त्री दोनो परस्परके हत्यारे बने। सिन्धांवालोंमेंसे राजाके सबसे अधिक प्रियपात्र बने हुए, अजीत सिंहने घृणा, डाह और विजय-सूचक हंसी हंस-कर मित्रोंसे कहा, "कल ही वारकार दूंगा।" प्रतिज्ञा पूरी हुई; शेर सिंह, अजीतकी प्रार्थनासे सेनाओंका अखाड़ा बुलाकर वहीं खेल देखते हुए मारे गये; उनके पुत्र कुमार प्रताप सिंह भी न बचे। वह इष्टदेवकी पूजामें मग्न थे। उसी दशामें वह पिताके साथी बनाये गये। दरबारमें ध्यान सिंह बुलाये गये। उन्होंने एक लहमेके लिये भी नहीं सोचा था, कि उनकी आज्ञा इतनी शीघ्र मानी जावेगी। झटपट आकर शेरका कटा रुण्ड देखकर चकित होगये; पास ही कुमारका रक्तमण्डित मस्तक देखकर उनके हृदयमें हत्यारोंपर घोर घृणाका उदय हुआ। पर सिन्धांवालोंहीके दलकी अधिकाई देखकर वह ओंठ काटते ही रह गये, जाहिरा कुछ न बोले। सिन्धांवालोंके सङ्ग दुर्गके भीतर पंहुचने पर लहना सिंहने मन्त्रीका हाथ थामकर पूछा, "कहिये अब राजा कौन हो?" ध्यान सिंह बोले, "दलीप सिंहके, सिंवा अब किसी दूसरेको तो नहीं देखते?" लहना सिंहने कहा, "क्या खूब, दलीप राजा हो और तुम उसके मन्त्री; और हम इतनी मिहनत करके मट्टी चाटें?" इस प्रकार सम्मानरहित वचनसे जलकर ध्यानसिंह वहांसे चलने लगे। उस समय गुरुमुख सिंहने इशारेसे कहा, "क्या देखते हो, शिकार भागा जाता है।" इतना सुनते ही निठुर

अजीतकी गोली लगी; ध्यान सिंह धरतीपर लोट गये। मृत्यु-समाचार शीघ्रही राजधानीमें फैल गया। ध्यान सिंहके पुत्र हीरा सिंह उस समय पिशावरके सेनापति फरासीसी अविटे-वलके मकानपर राजा शेर सिंहकी हत्याकी चर्चासे दुःख प्रगट करते थे। इतनेमें पिताके परिणामको सुनकर एकबार ही विकल होगये। जब शोकका प्रथम धक्का दूर हुआ, तब उनके हृदयमें बदला लेनेके लिये बड़ी ईर्षा भड़क उठी। उन्होंने बड़ी विनयसे सर्दारोंको वहीं बुलाया और सबके आनेपर अपनी गर्दन झुकाकर कहा, "आज मेरे पिता मारे गये हैं। मैं अब पितृहीन निःसहाय हूं। आप लोग या तो मुझे पिताका साथी बनाइये और नहीं तो जीका मलाल मेटनेके लिये मित्रकी सहायता कीजिये।" सरदार लोग हीराकी विनयसे विचलित हुए। सभोंने एक स्वरसे सहायताकी प्रतिज्ञा की। बाहरवाली खालसा सेनाने भी उनकी प्रतिज्ञामें अपनी सम्मति मिलाकर सबको उत्साहित किया। वास्तवमें हीराका प्रस्ताव किसीकी इच्छाके विरुद्ध नहीं था। सेना शेर सिंहकी भांति कुचरित्र तथा राजा नामके अयोग्य राजाकी मृत्युसे चाहे कातर न हो, पर कार्यदक्ष ध्यान सिंहकी मृत्युसे सबको थोड़ा बहुत शोक था; सो हीराकी आशा पूर्ण क्यों न हो?

उधर सिन्धांवाले भी निश्चेष्ट न थे। अजीत सिंह, रणजीत सिंहके छोटे पुत्र और शेष एकमात्र वारिस दलीप सिंहको गद्दीपर बैठाकर आप मन्त्री बन गया। पर हीरा सिंहका उत्साह कठोर प्रतिज्ञासे गठित हुआ था। उस प्रतिज्ञाको पूर्ण करनेमें पिताके हत्यारोंके खूनसे तर्पण करना उनके चित्तको

शान्तिका एकमात्र उपाय था। उसी भयावने दिनकी रात्रिको वह सेनासहित किलेके द्वारपर पहुंचे। किलेसे तोपें दगने लगीं। सारी रात दोनों ओरकी कठोर लड़ाई चली। सवेरे सेनापति फरासीसी वेञ्चुरा छः तोपोंके साथ हीरा सिंहसे आ मिले। लहना सिंह मारा गया; अजीत सिंह पहिले जान लेकर भागने पर भी पीछे एक मुसल्मान सिपाहीसे मारा गया। किला हस्तगत हुआ। ध्यान सिंहकी हत्याके लिये इशारा किये हुए, गुरुमुख सिंहको भी यमराजका पाहुना बनना पड़ा। सिन्धांवाले एकबार ही दब गये; केवल एक अतर सिंह दुर्गमें न रहनेसे बचा; पर उसको भी अङ्गरेजी राज्यमें भागकर प्राण बचाने पड़े। दुर्गसे हीराके विरुद्ध लड़नेवाले, सरदारोंने माफी मांगी। कहा, "जब कि सिन्धांवाले दुर्गके अधिकारी बने थे तो हमें उनकी ही आज्ञा माननी पड़ी थी। पर अब हम आपके अधीन हैं।" हीरा सिंहने इनको माफकर सबसे पहिले बालक दलीपके पैर चूमकर राजभक्ति प्रगट की। दूसरे दिन यथारीति दलीप सिंहको राजटीका दिया गया; हीरा सिंह मन्त्रीके पदपर सुशोभित हुए। इस समय बालक महाराजकी अवस्था केवल पांच ही वर्षकी थी। इस लिये उनकी माता महारानी झिन्दां उनकी निगरां बनी।

बालक महाराज दलीप सिंहके विषयमें अङ्गरेज ऐतिहासिकोंने कहा है, कि इसकी पांच वर्षकी अवस्थासे तेज-बुद्धिका परिचय मिलता था। बड़े होकर यदि राज्य करनेका सौभाग्य उनको होता तो वह पिताके अयोग्य पुत्र प्रतीत न होते। पर जब सोचते हैं, कि पञ्जाबकी राजगद्दी उनके दुर्भाग्यकी यादगारी स्थिर रखकर गायब होगई, तब उनकी

इस बुद्धिमानीका उल्लेख मनको और भी व्याकुल करता है। और जब कि अवस्थाकी अल्पता हेतु राज्यसे उनका कुछ भी सम्बन्ध न रहना कहना ही ठीक है, तब उस विषयको छोड़कर सच्ची राजशक्तियुक्त राजमाता महारानी झिन्दां और मन्त्री हीरा सिंह सम्बन्धीमें कुछ परिचय देना उचित जंचता है। महारानी झिन्दांमें राज्य शासन-योग्य शक्ति न रहने पर भी तप्तस्वर्णाभ रूपराशिसे नारी-दुर्लभ वीरताकी ऐसी झलक प्रगट होती थी, कि उनके दिनों क्रमशः हतोत्साह होती हुई, खालसा सेनाकी नसोंको रणजीत सिंहके दिनोंकी पुरानी वीरता फिर आश्रय करने लगी थी। एक तो अनुपम रूप-लावण्यकी खानि, तिसपर चरित्रमें वीरताकी वह्नि,—इन कारणोंसे बुढ़ापेमें इस युवती स्त्रीरत्नके प्रेममें वीरसिंह सिखकेशरी और भी अधिकाईके साथ आबद्ध थे। इस लिये वह पतिके अति प्रिय "महबूबा" सम्बोधनसे सदा गौरववती थी। सिखोंकी बड़ी प्यारी वस्तु सुन्दर वीरताके अतिरिक्त, इस नारीकी विज्ञ राज-नीतिक योग्य नम्रता सिखमात्रकी प्रसन्नता अपार कर देती थी। इतिहास लिखनेवालोंने किसी किसी सिखके सन्देहकी दुहाई देकर इनके चरित्रको निष्कलङ्क प्रगट नहीं किया है; बल्कि बहुतेरोंने सिख-सिंहकी इस विधवा अबलाको व्यभिचारिणी सिद्ध करनेके लिये यथाशक्ति वकालत करनेकी बदनामी ही उठाई है। पर किसीने यह नहीं विचारा, कि इनके हाथमें राजशक्ति देखकर बहुतेरे शक्तिप्रेमियोंके मनमें डाहकी अग्नि प्रज्वलित होना असम्भव नहीं था जो हो इनके चरित्रसे पञ्जाबके राजनीतिक इतिहासका स्वल्प ही सम्बन्ध है। जितना है, उतना यथास्थानमें प्रकाशित होगा। पर कट्टर निन्दाकारी भी

इस बातको अस्वीकार नहीं कर सकते, कि महारानी झिन्दांकी गम्भीरताके कारण उन दिनों पञ्जाब दरबारका रोब खूब जमा हुआ था, यहांतक कि युरोपकी राज-सभाओंसे उसकी अनेक विषयोंमें बड़ाई थी।

दरबारकी बड़ाईके विषयमें मन्त्री हीरा सिंहकी योग्यता भी कम प्रशंसनीय न थी। इस सुन्दरमूर्त्ति युवामें अवश्यही वीरताकी अधिकाई न रहना सर्व्व-स्वीकृत है। पर वीरताकी कसर महारानी झिन्दांके वीर-चरित्रसे पूरी होती थी। और हीरा सिंहकी तेज बुद्धि तथा सूक्ष्म राजनीतिक अनुभवोंके कारण महारानी राजमाताका वह अभाव किसीको लक्षित नहीं होता था। महाराज रणजीत सिंहकी प्यारी रानी और प्रिय सहचर हीरा सिंह दोनोंकी मिलित शक्तिसे राज्यने बहुत दिनके बाद बहुत कुछ अच्छी शोभा धारण की। प्रसिद्ध है, कि महाराज रणजीत हीरा सिंहको सुन्दर चेहरा और चतुर बुद्धिके कारण इतना चाहते थे, कि नरेशके सम्मुख बैठनेका दुर्लभ अधिकार बाहरी लोगोंमें केवल हीराहीको अठारह वर्षकी अवस्थासे प्राप्त हुआ था। विज्ञ बुद्धिमान ध्यान सिंहके इस पुत्र-रत्नको बहुत दिनों पञ्जाब-केशरीके सङ्ग करनेसे जो राजबुद्धि प्राप्त हुई थी, और कई भाषाओं तथा विशेष करके अङ्गरेजीमें सुपण्डित होनेसे जिसकी बड़ी पुष्टि हुई थी, उसके सहारे उनको अङ्गरेजी राज्यके पड़ोसमें रहत सिख राज्यको अच्छी दक्षताके साथ चलानेका बड़ा सुबीता होगया था। इतने गौरवके पदसे एकबार ही न फूल उठना उनकी योग्यताका एक पुष्ट लक्षण था।

एक तो हीरा सिंह स्वयं बुद्धिमान थे; तिसपर उनको

जल्ला पण्डित नामक एक विदेशी विज्ञ राजनीतिज्ञ पुरुष सदुपदेश देनेको मिल गये थे। शासनका भार पानेसे कुछ ही दिन बाद उनको जैसी अनसोची गुरु विपद उपस्थित हुई थी, ऐसे विज्ञ उपदेशकके विना उससे तरना सहज न होता। और लोगोंकी बात जाने दीजिये, उनके ताऊ सुचेत सिंह ही उनकी शक्ति छीननेको उद्यत हुए। इनके उपरान्त अपनेको राजा दलीपका मामा कहकर जवाहिर सिंह तथा दूसरे बहुतेरे फुटकल वीरोंने मन्त्रीका गौरवमय पद प्राप्त करनेके लिये राज्यमें बड़ी अशान्ति फैलाई। हीरा सिंहने पहिले राज्यकी सबसे अधिक शक्तियुक्त खालसा सेनाको जिस प्रकार प्रसन्न कर लिया था, उससे उसीकी सहायतासे शत्रुओंको दबाना सम्भव जानने पर भी इस समय निष्ठुरताके लिये सेनाके अप्रिय, पर सदाके कट्टर प्रतिज्ञा-पालक चचा गुलाब सिंहकी सहायता मांगना उचित जंचा। बहुतेरे ऐसा भी अनुमान करते हैं, जल्ला पण्डित उपदेशसे इस चालके चलनेका अभिप्राय विद्रोहियोंमें गुलाब सिंहको मिलनेका मौका न देकर सहजमें शान्ति प्राप्त करनेका था। जो हो, सुचेत सिंह लड़कर परलोक सिधारे; जवाहिर सिंह दब गये और सिन्धांवालोंमेंसे शेष वीर अतर सिंहसे मिलकर कश्मीरा और पिशौरा नामक दो राज्यकामी सिख रणजीत सिंहके पुत्र होनेके बहाने गद्दीके दावेके साथ विद्रोह मचाने पर इस प्रकार दबे कि फिर किसीको सिर उठानेकी सामर्थ न रही। लड़ाईमें अतर सिंहके साथ साथ कश्मीरा सिंहका भी देहान्त हुआ।

इतने दिन चुप रहनेके बाद अङ्गरेज फिर बोले। अंगरेजोंकी यह अनधिकार-चर्चा मृत सुचेत सिंहकी जायदादके सम्बन्धमें हुई, सुचेत निःसन्तान मरे थे। ऐसी दशामें वह जायदाद राजघरानेमें

आनेकी प्राचीन रीति सिखोंमें जारी रहनेके उपरान्त राज-विद्रोही होनेके कारण सुचेतकी जायदादके सम्बन्धमें वैसा बर्त्ताव करनेकी तो कुछ बाधा ही न थी। पर तौभी अङ्ग-रेजोंने बिना कारण इस मामलेमें दस्तन्दाजी की। कहा, सुचेतकी जायदादपर दखल पाने न पानेका विचार वृटिश अदालतमें होना चाहिये। स्वाधीन राज्यके साथ अङ्गरेजोंके अनूठे हठसे ऐसा वर्त्ताव करने पर भी धीरजमें वट्टा न लगना विदेशी दस्तन्दाजी सदा नापसन्द करनेवाले सिखोंके लिये कम प्रशंसाकी बात नहीं थी। आगे अङ्गरेजी अदा-लतमें भी सिख दरबारके हवाले जायदाद कर देना उचित जंचने पर भी हठकारी अङ्गरेज कर्म्मचारियोंने वह विचार न माना। दरवारको लिखा, कि यदि सुचेतके भाई गुलाब सिंह और भतीजे हीरा सिंह इस रुपयेको महाराज दलीपको देना चाहें, तो हम सुचेतकी जायदाद छोड़ सकते हैं। पर दरवारको ऐसी चिट्ठीका जवाब देकर वेइज्जती उठाना उचित न जंचा ; बस अङ्गरेज सुचेतके १५ लाख रुपये खा गये। यहां कह देना अच्छा है, कि यह रुपये अङ्गरेजी राज्यमें रहनेके कारण अङ्गरेजोंके हाथ आगये थे।

इस बखेड़ेके बाद ही हीराके सौभाग्यका सितारा मानो, जल्द ही बुझनेके लिये पूरी रौनकसे चमका। एक तो राज्यके लोग हीराके काम काजसे पहिलेसे ही प्रसन्न होने लगे थे ; फिर अङ्गरेजोंके साथ इस आखिरी दिलेर वर्त्तावने उनको और भी प्रसन्न किया। इस सौभाग्यके आनन्दमें बहुत दिन गंवानेके पहिले ही हीराके दिन पूरे होगये। जिस सीढ़ीसे वह उन्नतिके शिखर पर चढ़े थे, वही सीढ़ी—वही राजनीतिज्ञ

विदेशी पण्डित जल्ला ही उनके सर्व्वनाशका कारण हुआ। उसने अपने स्वभावके रूखेपनसे सर्दारोंको चिढ़ा देनेके उपरान्त एक रोज राजभवनके कोठेसे लाल सिंहको ताकते देखकर राजमाता झिन्दांके स्वभावपर भी कठोर कटाक्ष किया। इसीसे हीराका भाग्य एकबार ही बदल गया। उन्हें अपने उपदेशक जल्ला पण्डित समेत राजधानीसे भागना पड़ा। पर इससे भी रिहाई न मिली। दोनोंहीको राजमाताकी क्रोधाग्नि बुझानेके लिये राहमें हत्यारेके हाथकी बलि बनना पड़ा। जिस सुबुद्धि तथा शासनकी सुन्दर शक्तिसे पञ्जाब कुछ काल फिर भले दिन देखने लगा था, उसकी लयके साथ साथ राज्य, जातीय झगड़ेमें पुनः फंसकर सर्व्वनाशके समुद्रकी ओर बढ़ने लगा।

हीरा सिंहकी मृत्युके बाद जवाहिर सिंहको मन्त्रीके खाली पदपर बैठनेका दूसरा कोई कण्टक न रहा; पर जिस शक्तिसे इस विशाल राज्यका शासन करना सम्भव है, जवाहिर उससे एकबार ही वञ्चित था। इस समय गुलाब सिंह भी राज्यकी हितेच्छा प्रगट न कर सके। एक तो जम्मूनरेश गुलाब सिंह खालसा-सेनाके अप्रिय थे ही, फिर पञ्जाबके अधीन रियाया नरेशोंको राजशक्तिके विरुद्ध उभाड़नेकी घृणित चेष्टासे खालसाको उन्होंने जामेके बाहर कर दिया। जम्मूकी तरफ बड़ी सेना चली। अपनी फौजको इसकी तुलनासे निकम्मी समझकर वह धनसे खालसाके सरदारोंको प्रसन्न करने लगे; पर उनकी चालाकी एक न चली। कैदीकी भांति लाहौरमें पकड़ आये और वहां जुर्म्मानेके बतौर १८ लाख रुपया देकर जान बचाई। इसके उपरान्त अपनी उचित जागीर छोड़कर वंशावलीके अधिकृत प्रायः सब खण्डोंको दरबारके हवाले कर देना पड़ा।

गुलाब सिंहको दबानेके बाद खालसा सेना मुलतानके नये दीवान मूलराजपर टूटी। मूलराज रणजीत सिंहके दिनोंके दीवान, परिचित बुद्धिमान तथा अकथनीय दयावान सुजानमलके पुत्र थे। पर ऐसे सर्व्वगुणशाली पुरुषका पुत्र होकर भी केवल लालाको ही मूलराजके जीवनका लक्ष्य हुई थी। छोटे भाईके दाविके साथ कुछ जागीर मांगने पर मूलराजने उसे कैदकर अपनी दीवानी निष्कण्टक कर ली। लाहौर-दरवारको उचित खिराज न देकर अपनी खतन्त्रता प्रगट करने लगा; दीवानी पर आरूढ़ होनेका नियमित नजराना देनेसे भी इनकार किया। बस खालसासे अब इसको ढिठाई सही नहीं गई। सेना मूलराजके लिये तय्यार होने लगी। इतने दिन बाद मूलराजने अपनी चुद्रताका अनुभव किया। सन् १८४५ ई०के सितम्बर महीनेमें अठारह लाख रुपया देकर तथा अपने राज्यके कुछ छोटे छोटे अंशोंसे हाथ धोकर दरवारको प्रसन्न करना पड़ा।

मूलराजके इस प्रकार बहकनेके पहिले और एक अशान्ति-कारी छोटी घटना हो चुकी थी। वह पिशौरा सिंहकी दूसरी बार राजगद्दी पानेकी चेष्टा थी। पर विना विलम्ब फिर उसे जान लेकर भागना पड़ा था। उसने फिर तीसरी बार वैसा ही पागलपन प्रगटकर अपने जीवन-दानसे आशाकी निवृत्ति कर ली। वह अटकके किलेको अपने अधीन बनाकर समझने लगा, अब मैं महाराज होगया हूं; और प्रचार भी सर्व्वत्र वैसा ही करने लगा। उसी चण सरदार छत्र सिंह उसपर चढ़ गये; और कुछ दिन उसी अटक किलेमें कैद रखकर राजधानी लाहौरमें पकड़ लाये। वहीं जवाहिर सिंहने उसका काम

तमाम कराया। जवाहिर सिंह अब तक मन्त्रीके पदपर आरूढ़ रहके भी वास्तवमें किसी विषयमें हस्तक्षेप नहीं करते थे। खालसा सेना ही सब कार्य्योंको निबाह रही थी। यों ही निकम्मे बने रहना ही उनके लिये मङ्गल था; क्योंकि सचमुच निकम्मे होनेके उपरान्त उनमें एक दमड़ीकी योग्यता अथवा सुबुद्धि न थी। इस दशामें निकम्मे बने रहनेसे न उनकी बुद्धि और प्रवृत्तिकी ओछाई जाहिर होती और न खालसा सेना उनकी नाम भरकी मन्त्रीगरीकी बाधक होती। पर इतनी बुद्धि भी रहनेसे वह निकम्मे ही क्यों कहलाते? गिरे हुए पिशौराकी हत्याकी निष्ठुरतासे उन्होंने खालसाको बहुत चिढ़ा दिया; खालसा सभाके जङ्गी विचारसे उनकी हत्या ही इस हत्याकी सजा समझी गई।

जवाहिर सिंह निकम्मे थे, पर उनके साथ साथ पञ्जाबके मन्त्री पदका भी लोप होगया। एक तो इस पदपर बैठकर विशाल पञ्जाब राज्यका शासन करनेकी शक्ति रखनेवाला पुरुष उन दिनों दुर्लभ क्या, था ही नहीं। तिसपर खालसा सेनाके वर्त्तावने बड़े बड़े सिंह समान हृदयवाले पुरुषोंको भी भीत चकित किया था। यहां तक कि जम्मू नरेश गुलाब सिंहसे भी वारवार ऐसी प्रार्थना करनेपर प्रसन्न होना दूर रहे, वह खालसाके भयसे कांपने लगे। जिस खालसाने महावीर गुलाब सिंहको डराया था, जिसने चतुर-चूडामणि मूलराजको दबाया था, जिसने राज्यके प्रधान कर्मचारीको भी अपने विचारानुसार दण्डित किया था, उसके शासनके लिये तथा उसके साथ साथ विशाल राज्यके भिन्न भिन्न झगड़ालू सम्प्रदायोंको दबानेके लिये किसीकी हिम्मत न हुई। राज्यने एक भयावनी निराशाकी

छवि धारण की। राजगद्दीपर एक बालक अधिष्ठित है; राज्य शासनके लिये एक नारीके हाथमें शासनशक्ति विराजित है— और उस बालक और इस युवतीसे सम्पूर्ण स्वतन्त्र एक भीषण रणमत्त सेना सदा अपनी प्रबलता प्रगट करनेको उद्यत है। प्रजाके प्राणोंमें शङ्का-सूचक घबराहट क्यों न प्रत्यक्ष हो? ऐसे ही अवसरपर पास ही लेटे हुए वृटिश सिंहके कराल गर्जनसे पञ्जाबमें घोर डांवाडोल मचने लगा। निशदिन सर्व्वत्र विपद हीकी चर्चा होने लगी।

दूसरा अध्याय।

युद्धकी कारण।

सामान्य वणिक्-वेशधारी अङ्गरेज भारतमें आकर क्रमशः बढ़ने लगे। खण्डके बाद खण्ड, प्रदेशके बाद प्रदेश क्रमशः उनके अधीन होने लगे। महाराज चक्रवर्त्ती आज अनन्त बल-विक्रमसे वृहत् राज्यका शासन कर रहे हैं; उनकी विजयिनी सेनाकी सिंहचालसे धरती डोल रही है। पर कल ही उस राज्य, उस राजा, उस सेना—सबहीका नाम मट्टीमें मिल गया; उस भूखण्डपर वृटिश वीरकी भीम गर्जन सुनाई देने लगी। ऐसे कितने राजा, कितने राज्य लय होगये थे; सर्व्वत्र केवल अङ्गरेजोंका भुजबल, अनन्त बुद्धिबल, और परदेशी छल कौशल लच्चित हो रहे थे। अन्य फुटकल राजाओंकी बात जाने दीजिये;—जिस मुगल बादशाहके कर्म्म-चारियोंसे किसी भूखण्डपर वाणिज्य करनेका हुक्म-नामा हासिल करने अथवा किसी अन्य कृपाकी भिच्चा मांगनेके लिये अङ्गरेजोंको कुछ ही दिन पहिले कोर्निशपर कोर्निश बजाला न पड़ी थी, उसी मुगल नरेशकी वंशावलीको रोटीकी मुहताज बनकर अङ्गरेजोंके द्वारपर भिखारी किसी कातरता प्रगट करना पड़ी। सो ऐसे विराट बुद्धिशाली वीरोंके मुकाबिलेमें कौन राजा गद्दीपर बैठे अपने राज्यको निःशङ्क जान सकता था? जो राज्य तबतक लय होनेसे बचे थे, उनके राजा सर्पके सम्मुख पड़े मेढकको भांति हर घड़ी सिकुड़ रहे थे; हजार वीर

होने पर भी सिखजाति कभी अपनी स्वाधीनताकी स्थिरतापर निश्चिन्त नहीं हो सकी थी। जब सिख-सिंह रणजीतने भी ऐसी शङ्काके लक्षण दिखाये थे, तब अन्य सिखोंकी क्या गिनती की जावे? फिर इस साधारण सन्देहके उपरान्त समय समय पर अपनी सन्धिके नियमानुसार न चलकर कई एक अङ्गरेज कर्म्मचारियोंने जिन कार्य्योंसे सिखोंका सन्देह बेहद्कर दिया था, इस अध्यायमें उनमेंसे कुछका उल्लेख करना है।

आज अङ्गरेज लोग जिस रूसके भयसे अन्धकारसा देख रहे हैं, वह बहुत दिन पहिलेसे अङ्गरेजोंको आशङ्कित करने लगा है। उसी भयने अङ्गरेजोंको अफगान राज्यपर किसी कदर मजबूत बननेकी सलाह दी। बस सन् १८३८ ई०में अफगान राज्यपर हमला करनेका डङ्का बजाया गया। उन दिनों अफगानस्थानपर इतिहास-प्रसिद्ध मरहटा-गौरवनाशी, पानी-पत-समर-विजयी अहमद शाह अब्दालीकी सन्तान शाह सुजाको गद्दीसे निकालकर बरखजई जातिका महावीर दोस्त मुहम्मद खां राज्य कर रहा था, और शाह शुजा तीस वर्षसे लुधियानेमें अङ्गरेजोंके आसरे दिन बिता रहा था। इसेही राज्यपर बैठाकर अङ्गरेजोंको अपना अभीष्ट सिद्ध करनेका विचार हुआ। युद्धयात्राके दिनों पञ्जाब-केशरी रणजीत सिंह जीवित थे; सो अङ्गरेजोंने अपनी सेना उनके राज्यसे चढ़ा ले जानेकी प्रार्थना करनेका साहस न किया। पर अफगान-युद्ध जीतकर सन् १८३८ ई०की २७ वीं जूनको गजनीकी लड़ाईमें कामयाबी होनेके बाद शाह शुजाको गद्दीपर बैठाकर तथा वहां मजबूत बने रहनेके लिये पांच हजार सेना रखकर अङ्गरेज जब लौटने गेल तब रणजीतका देहान्त होगया था; सेनाको सिखराज्यके

अन्दरसे लौटा लानेका प्रस्ताव किया गया। सिख लोग अङ्गरेजोंकी नीयत देखकर प्रस्तावको अस्वीकार न सके। पर सेना ले जानेका पथ दिखाकर सिखोंने अङ्गरेजोंसे प्रतिज्ञा करा ली, कि फिर कभी सेना ले जानेका प्रयोजन होनेसे वे सिख-राज्यसे न जायंगे।

जल्दी ही फिर अफगानस्थानमें सेना ले जानेका प्रयोजन हुआ। शाह शुजाको अफगानस्थान ले जाते समय अङ्गरेजोंने अवश्यही अफगान प्रजाको बड़ा प्रिय प्रगट किया था; पर अफगान जातिकी कठोर विरुद्धतासे उस वाक्यकी असत्यता शीघ्रही प्रमाणित हुई। अंगरेज फिर सिख-राज्यसे सेना रसद आदि ले जाने लगे। पूर्व्व प्रतिज्ञाकी बात चेता देनेपर भी वे निवृत्त न हुए; सिख लोग भीत चकित होकर अङ्गरेज सेनाकी सङ्गीन बन्दूककी तेज चमकसे ओंठ काटते हुए आंखें टिमटिमाने लगे। सन्धिकी मर्य्यादा बिगड़कर अङ्गरेजोंने सिख राज्यके पड़ोसमें स्थित सिन्धके अमीरोंका राज्य हर लिया था; और इस राज्यके हर लेनेके मूलमें सिन्ध राज्य होते हुए प्रथम बार अफगानस्थानपर अङ्गरेजोंका सेना चढ़ा ले जाना ही था। इस लिये सिखराज्यसे सिखोंके न चाहनेपर भी जबरदस्ती सेना ले जाना पञ्जावियोंके लिये जैसे गहरे भयका कारण हुआ था वह कहना न होगा। इस घटनाके बादही पूर्व्व अध्यायमें प्रकाशित सिखोंसे सन्धि टूट जानेका इश्तहार देना और पिशावरको सिखोंसे छीनकर शाह शुजाको दे देनेका प्रस्ताव करना सिखोंके लिये जैसी घबराहटकी बात हुई वह केवल अनुभव करनेही योग्य है। अस्त्रधारी महावीरोंका इतनी चिढ़से जलना और

धीरज खोकर एकायक युद्धकी अग्नि वाल न देना काम प्रशंसाका विषय नहीं है।

जब इतने असन्तोष, अविश्वास तथा क्रोधकी महाअग्निमें सिखोंका हवन हो रहा था, तब उस अग्निमें और भी घी छोड़नेसे अङ्गरेज बाज न आये। शाह शुजाके खान्दानको काबुल ले जाते हुए अन्ध जमां शाहकी सहायता करनेके लिये अङ्गरेजोंने मेजर ब्राडफुट साहबको सेना सहित भेजा। ब्राडफुट साहब अपनी बड़ी सेना सिखराज्यसे ही ले जाने लगे। उन्हीं दिनों महाबली सिख-सेना अपने शत्रुओंको पूर्व्व अध्यायमें प्रकाशित जबरदस्तीसे दमन कर रही थी। सिख दरबारने अङ्गरेजोंके अनोखे वर्त्तावसे बहुत चिढ़नेपर भी मेजर ब्राडफुटको अपनी सेनाके क्रोधसे बचाने तथा निरापद राहसे लेजानेके लिये अपनी ओरसे कुछ सेना भेजकर अपूर्व्व धीरजका उदाहरण दिखाया। पर विराट बुद्धिमान ब्राडफुट साहबने सिख दरबारके इस मित्र व्यवहारको भी शत्रुताकी चाल विचारकर सहायता करनेको आई हुई सिख-सेनापर रावीनदीके रेतमें आक्रमण किया। उनकी बुद्धिमानी यहीं अन्त नहीं हुई; कार्य्यवश कुछ अन्य सिखसेनाको अपने सामनेसे जाते देखकर उसपर गोरी सेना दौड़ाई। पर इस प्रकार अनर्थ साधन करनेपर भी वह बिना विपद सेनासहित पिशावर पहुंचाये गये। वहां उनकी चुलबुली और भी बढ़ी। वहांकी शान्त मित्र सिख-सेनाको देखकर भी उन्होंने रणसाज धारणकरके अटक नदीका नावोंका पुल तुड़वा दिया और पञ्जाब राज्यकी अधीनता माननेवाली अफगान प्रजाको सिख-नरेशके विरुद्ध उभाड़नेकी कोशिश की। आगे सड़कपर चलते हुए कुछ सिपाहियोंको

छोड़कर अशरफ़ानका विलकुल बदला दिया। इस समय पिशावरके सेनापति फ़रासीसी आविटेवल साहबने बड़ी घबराहटके साथ आकलैंडसे मुलाक़ात की और बहुत समझ बुझाकर साहबको अफ़ग़ानस्थान पथरवाया।

सिक्खोंको इस प्रकार हकनाहक बोर अप्रसन्न करनेके बाद भी अङ्गरेजोंको उनकी सहायता मांगना पड़ी और सिक्खोंने उनकी प्रार्थना यथाशक्ति पूर्ण करके जो सज्जनता दिखाई वह संसारके इतिहासमें दुर्लभ है। शाह शुजाको अफ़ग़ान-स्थानके सिंहासन पर बैठाकर अङ्गरेज सेनापति एल-फ़िनष्टोन साहब पांच हज़ार सेनाके सहारे उनकी निगहबानी करने लगे। वास्तवमें शाह शुजाके नामसे अफ़ग़ान राज्यमें अङ्गरेजी शासन चलने लगा। प्रबल स्वाधीनता प्रेमी अफ़ग़ान जाति एक तो जबरदस्ती सिरपर सवार कराये हुए नये अमीरसे अप्रसन्न थे; तिसपर राज्यमें उन विदेशियोंका रहना और अनेक विषयोंमें उन्हींकी राजनीति मानी जाना उनको बहुत नागवार मालूम होने लगा। इस अप्रसन्नताको अङ्गरेज अपना निठुर तथा अविचारी चालसे और भी बढ़ाने लगे। पूर्व-प्रान्तके गिलजई जातिको पहिले अङ्गरेजोंके विरुद्ध खड़े होनेका इलजाम लगाकर गोली बारूदसे एक प्रकार निर्मूल कर दिया। कामसक्त गोरे केवल बजारकी स्त्रियोंसे प्रसन्न न होकर अफ़ग़ान लोगोंके घरोंमें भी घुसने लगे। बहुतेरोंकी बहू बेटी सदाके लिये कलङ्किनी होगई। अङ्गरेज सेनाके साथ बालाहिसारमें रहनेवाले अङ्गरेज टूम मकनाटन साहबके रिश्तेदार जानकनलीके कई एक बड़े बड़े सरदारोंके सिर लेनेकी साजिश प्रकाशित होगई। काम इस क़दर वाहियात

होने लगे कि अङ्गरेजोंके आश्रित शाह शुजाको भी प्रजाका विराग देखकर गिड़-गिड़ाहटके साथ अपने उद्धारकारियोंको सावधान करना पड़ा ; पर तौभी उन्होंने ध्यान न दिया। अङ्गरेजोंको अत्याचारोंसे पार पानेके लिये अन्तमें हिन्दुस्थानमें कैद, पूर्व्व अमीर दोस्त मुहम्मदके पुत्र अकबर खांके अधीन एक बड़ी सेना इकट्ठी हुई। बार्नेस साहब पहिले ही इन अफगानोंसे मारे गये। अफगानोंसे लड़कर अङ्गरेजी सेनाके हार जानेपर मकनाटन साहबने कुनबे समेत दोस्त मुहम्मद खांको अफगानस्थान पहुंचानेके करारपर बिना छेड़छाड़ सम्पूर्ण अङ्गरेजी सेनाको हिन्दुस्थान पहुंचने देनेकी प्रतिज्ञा अफगानोंसे करा ली। इस सुलहनामेके मुताबिक अफगानस्थानसे झट अङ्गरेजी सेना शीघ्र ही पधारी, अकबर खांने उसको सहायता भी अच्छी की। पर वास्तवमें मकनाटन साहब एक बारही अफगानस्थान छोड़ना नहीं चाहते थे। बिना शरमाये वर्खजई जातिके सरदार अकबर खांसे की हुई सन्धिको भूलकर गिलजाइयोंको पचास लाख रुपया देनेके करार पर शाह शुजा और अङ्गरेजोंकी सहायता करनेके लिये उभाड़ने लगे। इस प्रकार अनेकानेक चेष्टा प्रकाश होने पर अकबर खांने बातचीत करनेके बहाने विश्वासघातसे मकनाटन साहबकी हत्या की। इसके बाद अफ़गास्थानवासी अङ्गरेज इस प्रकार घबरा गये, कि उस हत्यारे अकबर खांसे ही सन्धि कर ली। सन्धिके अनुसार अकबर खांको स्त्री कन्या सहित अङ्गरेज सेनापति और सब आहे गोरोंको जमानतके बतौर कैद रखकर सम्पूर्ण अङ्गरेजी सेनाको हिन्दुस्थान पहुंचा देना था। पर घोर विश्वासघातसे सब लोग मारे गये। केवल डाक्तर ब्राईडन

नामक एक आदमी यह भयानक समाचार देनेको जिन्दा हिन्दुस्थान पहुंच सका।

अङ्गरेज इस भयावनी स्वजातीय हत्या तथा घोर अपमानका बदला लेनेको मतवालेसे बन गये। पर सिख-सेनाकी सहायता बिना अङ्गरेजी सेनाको काबुल जाना अस्वीकृत हुआ। पिशावर पहुंचे हुए अङ्गरेज कर्म्मचारियोंने सिख सेनाकी सहायता मांगी। वहांके सेनापति फरासीसी आविटेवल अपनी अधीन सेनाके अतिरिक्त अन्य सेना न दे सके; क्योंकि उसके देनेमें खालसाकी आज्ञा जरूरी थी, पर इस विलम्बके कारण अङ्गरेजोंने पञ्जाब नरेशको ऐसी घुड़की दी कि मानों वह अङ्गरेजोंके अधीन नरेश थे। सिख-नरेशने इस बेहव्जतीका उत्तर केवल अङ्गरेजोंकी प्रार्थित सेनासे भी बहुत अधिक भेजकर ही दिया। इस सेनाके बिना कभी अङ्गरेज लोग जलालाबाद भेदकर, न खैबर घाटी पार कर सकते और न अफगानोंकी हत्या कर मनकी गरमी बुझा सकते। पर इस मित्रताकी सहायता अङ्गरेजोंने कैसे स्वीकार की? जनरल पलकने केवल अङ्गरेजी सेनाको ही बजार आदि लूटनेकी आज्ञा दी। इस विजयकी लूटसे सिखसेनाको भी प्रसन्न करना उनको नामञ्जूर हुआ। यह प्रस्ताव ऐसा स्वार्थमय हुआ था, कि सदाके प्रसिद्ध अपक्षपाती हेनरी लारन्स साहबको इसका प्रतिवाद करना पड़ा था। आगे शाहशुजाका अपनी प्रजासे मारा जाना तथा दोस्त मुहम्मद खांका अमीर होना इत्यादि अफगानस्थान सम्बन्धी घटनाओंसे इस इतिहासका सम्बन्ध नहीं है।

अफगान युद्धके बाद लाट एलेनबराने मित्रताके कुछ जबानी लक्षण दिखाकर महाबली सिखोंको प्रसन्न करना चाहा; पर

जो सब कारण पहिले कहे गये हैं, उनसे सिखोंका विश्वास प्रायः हट गया था ; फिर इनके अतिरिक्त अफगान युद्धके पहिले अप्रसन्नताके और भी बहुत कारण प्रकट हुए थे। उनमेंसे भी कई एकका उल्लेख यहां करते हैं। सन् १८०६ ई॰ में अङ्गरेजोंने प्रतिज्ञा की थी कि सिख राज्यके निकट अङ्गरेजी सेनाकी छावनी न बनावेंगे। पर इस प्रतिज्ञाको लङ्घनकर सिखराजधानी लाहौरके पास ही लुधियानेमें अङ्गरेजोंने सेनाके लिये छावनी बनाई। इसके सिवा नेपाल युद्धके बाद सबधूमें पुलिसकी रक्षाके लिये एक पल्टन रख दी। इससे सन १८३८ ई॰ में लाहौरके पड़ोसमें दो महाबली अङ्गरेजी सेना स्थित देखी गई। ईरान राज्यपर एकवार सेना चढ़ा ले जानेके बहाने फीरोजपुरमें भी १२ हजार सेना रखी गई थी। फीरोजपुर भी सिखराजधानी लाहौरसे बहुत दूर नहीं है। फीरोजपुर पहिले एक प्रकार पञ्जाब राज्यके अन्तर्गत ही था। इसे पञ्जाब राज्यमें शामिल न भी किया जावे, तो पञ्जाबका अधीन राज्य कहनेसे कुछ भी अत्युक्ति नहीं होसकती थी। पञ्जाबकेशरीने फीरोजपुरको एक पराये राज्य-लोभी पुरुषसे लड़कर उसके पूर्व अधिकारिणी निःसन्तान विधवा रानी लछमन कौरके लिये जीता था। अङ्गरेजोंने इसपर पञ्जाब-राज्यका अधिकार अस्वीकार किया और इसे अपने राज्यमें मिला लिया। जो हो, फीरोजपुरमें १२ हजार सेना रखते समय अङ्गरेजोंने सिर्फ एकही वर्षका वादा किया था ; पर वर्ष बीतनेपर भी सेनाको उठा न लिया। बल्कि अफगानस्थानमें लड़ाई मचानेके दिनसे फीरोजपुरमें स्थायी छावनी बनाई गई। इन स्थानोंके उपरान्त अम्बालेमें तथा पञ्जाबराज्यकी सरहदके पास

दरबारके सतलज-तटस्थित राज्योंको अङ्गरेजोंके रक्षित बताया। और साथही यह भी जाहिर किया, कि इन राज्योंके अबसे हमारे रक्षित होनेके कारण दलीप सिंहकी मृत्युके बाद अथवा किसी कारणसे उनके राज्यच्युत होनेपर इनके अधिकारी पञ्जाब राज्यके अधीन हो जायंगे। एक तो अङ्गरेजी राज्यमें सेना आदिकी अपरिमित वृद्धि होरही थी; तिसपर अङ्गरेज कर्म्म-चारीकी यों रार मचानेकी नीयत दीखती थी—इन सब विषयोंकी आलोचनासे किस अहमकसे अहमक सिखको न मालूम होता, कि अङ्गरेज अब पञ्जाबसे बिना लड़े चुप न होंगे। परन्तु इतने पर भी सिखोंका सिर न उठाना उनके सामान्य धीरजका परिचय न था।

मेजर ब्राडफुट सिर्फ इतना ही छेड़कर सन्तुष्ट न हुए। सिख-अधिकृत कटकपुरा स्थानमें स्थित लाहौरी घुड़सवार पुलिसको छुट्टी देनेके लिये दरबारने कुछ थोड़ेसे घुड़सवार भेजे थे। पर फीरोजपुरके पास सतलजको पार करना इनके लिये सन् १८०६ ई०की सन्धिके विरुद्ध न होने पर भी मेजर ब्राडफुट साहब एकबार ही जामेके बाहर हो गये और उस घुड़सवार सिखमण्डली पर हमलाकर गोलियोंके ओले बरसाने लगे। उन घुड़सवारोंके सेनापतिने विचारा, कि यदि मित्र अङ्गरेजोंके इस नासमझ कर्म्मचारीकी गोलीका जवाब हम गोलीसे दें, तो आज ही सिख और अङ्गरेजोंमें सर्व्वनाशी युद्धका आरम्भ हो जावे। इस प्रकार विचारकर शान्तिको अटल रखनेके लिये सुनमें अनन्त शक्ति रहने पर भी सिख सेनापतिने अङ्गरेज कर्म्मचारीकी शक्तिकी इस खराबीका बदला न लिया। निरपेक्ष इतिहास लिखनेवाले

बताते हैं, कि अङ्गरेजी गवर्नमेण्ट इस झगड़ीले कर्म्मचारीकी कार्रवाइयोंसे जरा भी प्रसन्न न थी। पर निरपेक्ष इतिहास लिखनेवाले यह भी बताते हैं, कि असन्तुष्ट होने पर भी अङ्गरेजी गवर्नमेण्टने कभी मेजर ब्राडफुटको कुकार्य्योंसे रोका नहीं था। इस लिये इन कार्य्योंके अंगरेजी सरकारकी इच्छानुसार होते रहनेका विश्वास सिखोंके मनमें जम जावे, तो कोई भी अपक्षपाती मनुष्य सिखोंकी निन्दा नहीं कर सकता है।

पहिले बम्बईमें जिन नावोंके बननेकी खबर सिखोंको मिली थी, वे मेजर ब्राडफुटके दिनों ही फीरोजपुरकी तरफ मंगाई गई। बुद्धिमान साहब बहादुरने बड़ी सेनाके सहारे उन्हें भेजनेकी आज्ञा प्रचार कर सिखोंको एक प्रकार समझा दिया, कि लड़ाई अब बन्द होनेवाली नहीं है। पर इस प्रकार बारम्बार उत्साहित होकर भी सिखोंने अङ्गरेजोंसे बनाई हुई पवित्र सन्धिके विरुद्ध एक भी कार्य्य न किया; बल्कि ब्राडफुट साहबके अन्यायोंसे सब प्रकार विचलित होकर भी वे अङ्गरेजोंसे जो बरताव करते आते थे, वे सब ही उनकी सज्जनता, धीरज और महत्त्वके स्मरण-रखने-योग्य उदाहरण होते थे। अङ्गरेजोंके छोटे छोटे जहाज बिना रक्षक अक्सर सतलजका जल चीरते हुए जाया करते थे; फिल्लौरके किलेके पास ही सिखोंकी गगनविदारी तोपोंके सामने एक जहाज बहुत दिनों लङ्गर डाले हुए पड़ा था। पर इन जहाजोंके अङ्गरेज कप्तान लोग सिख स्वभावकी सज्जनता प्रगट करनेमें सहस्र-मुख बन जाते थे। बहुतेरोंने सिखजातिकी यहांतक प्रशंसा की है, कि हमे जहाज लेजानेमें अनेक राज्य देखने पड़े हैं, पर सिखराज्यकी भांति प्रजा मात्रसे सद्व्यवहार हमको कहीं प्राप्त नहीं हुआ। पर इन सब प्रशंसाओंकी मट्टी अङ्गरेज

कर्म्मचारियोंकी कुटिलतासे खराब हुई। कनिङ्गम सरीखे अंगरेज ऐतिहासिकोंने साफ़ ही लिखा है, कि मेजर ब्राडफुटके अजराट बननेहीके कारण सिखयुद्ध बहुत ही जल्द सम्भावित हुआ। उन दिनोंके बहुतेरे अङ्गरेजोंने भी स्वीकार किया है, कि मेजर ब्राडफुटकी भांति घोर हठकारी पुरुषके बदले यदि उनके पूर्व्वके अजराट भी अपने पदपर आरूढ़ रहते, तो कदापि सिखयुद्ध इतनी जल्दी न उभड़ता।

अन्य प्रमाणोंका प्रयोजन नहीं, मूलराजके पत्र पाने पर मेजर ब्राडफुट साहबने जो अनर्थ प्रबन्ध किया था, उसीसे विलक्षण अनुभव होता है, कि वह सिखोंसे कितना डाह और नफ़रत रखते थे। जब मुलतानके दीवान मूलराजने लाहौर दरबारकी आज्ञा न मानकर अपनी अधीनताका प्रतिपालन न किया, और दरबारकी सेना उसके शासनके लिये उद्यत हुई, तब मूलराजने मेजर ब्राडफुटको एक गुप्त चिट्ठी लिखकर अपने सिख चरित्रको बहुत ही कलङ्कित किया था। पत्रका अभिप्राय यह था, कि दरबारकी सेना जब मेरे अधिकार पर हमला करेगी तब अंगरेजोंसे हमको कुछ सहायता मिल सकती है, कि नहीं। जिस सिख-दरबारके साथ अंगरेज लोग पवित्र सन्धिसे आबद्ध थे, उसके अधीन सरदारकी ऐसी चिट्ठी पाते ही फाड़ देना अथवा लौटा देना अङ्गरेज मात्रके लिये बाईबलकी आज्ञा माननेकी भांति कर्त्तव्य होना चाहिये था ; पर अङ्गरेज-चूड़ामणि ब्राडफुट साहबने इस चिट्ठीपर क्या निश्चय किया सुनिये। चिट्ठी पाते ही उन्होंने सिद्धान्त किया, कि जब दरबारकी सेना मूलराजको आक्रमण करनेवाली है, तब वह अङ्गरेजी अधिकारके भूखण्डपर भी हमला कर सकती है। ऐसी

मीमांसा उनके महाबुद्धि-पूरित मगजमें प्रविष्ट होते ही, उन्होंने सिख-राज्यके थोरोंपर निगाह रहनेवाले हरेक अङ्गरेज-कर्म्मचारीको समझाया, कि अङ्गरेजोंके प्रदेशोंपर शीघ्र ही सिख सेना धावा करनेवाली है। इससे अङ्गरेजोंको बड़े सावधान होकर आत्मरक्षा करना चाहिये। आत्मरक्षाके लिये ही हमें उसके अपने अधीन सरदार मूलराजकी सहायता अवश्यही करना चाहिये। इस अभिप्रायसे उन्होंने सिन्धराज्य जीतनेवाले महावीर नेपियर साहबको मूलराजकी सहायताके अर्थ चिट्ठी लिखी। और मूलराजको सिख-दरबारकी अधीनताके बदले अङ्गरेजोंके प्रेमी बनानेके घमण्डसे कूदने लगे।

ऐसेही अवसर पर सिन्ध-विजयी नेपियर साहबके एक अनोखे कार्य्यने अङ्गरेजोंकी लड़ाकी इच्छाका और भी एक प्रमाण सिखोंके मनमें उपस्थित किया। सन १८४५ ई०की गर्म्मियोंमें कई एक सिखसवार कुछ लुटेरे डाकुओंका पीछा करते हुए, सिन्ध प्रदेशकी सरहदके पास पहुंच गये। वास्तवमें तबतक पहाड़ी सिन्ध प्रदेश और सिन्धनदीके तटपर सिन्धके भूखण्डके बीच सीमा लाहौर दरबार और अङ्गरेजी सरकारमें कभी निश्चय नहीं हुई थी। इस लिये वे सवार सिखसीमा भेदकर अङ्गरेजी सरहदमें पहुंचे थे कि नहीं, तिसकी मीमांसा कोई नहीं कर सकता था। और यदि उनके अङ्गरेजी राज्यमें घुस पड़ना स्थिर भी होता, तो उन मुट्ठी भर आदमियोंके सरल अभिप्राय पर किसीको सन्देह होना सम्भव नहीं था।

पर वीर नेपियर इन सवारोंसे वीरता प्रगट करनेमें लज्जित न हुए। उन्होंने अङ्गरेजी सरहदकी शान्ति बनाये रखनेकी दुहाई गाकर उन कई सवारोंके विरुद्ध फौज दौड़ाई। लाहौर

दरबार भयचक्र चित्तसे नेपियर साहबको मेजर ब्राडफुटके मौसेरे भाई मानकर अपना भविष्यत अन्धकारमय देखने लगा। नेपियर साहबका गुप्त सिखविद्वेष केवल अङ्गरेजी गवर्नमेण्टकी ही दस्तन्दाजीसे ही इसके पहिले प्रकट नहीं हुआ था। सिन्ध सीमाके कसमोर स्थानमें उन्होंने बड़ी फौजकी छावनी बनाकर सदा सिखोंको डराये रखनेका सङ्कल्प किया था। पर अङ्गरेजी सरकारने उनकी इच्छा पूरी होने नहीं दी थी। इससे मानों उसी समयसे सिखोंको सरकारके सामने झगड़ीले सिद्ध करनेके लिये उनका मन हुलस रहा था। इस घटनाके बाद अपना अभीष्ट पूरा करनेका अच्छा बहाना उनको मिल गया। वह खुलाखुली कहने लगे, कि अब पञ्जावपर हमला करना अङ्गरेजोंके लिये बहुत जरूरी होगया है।

उधर मेजर ब्राडफुट, इधर नेपियर बहादुर—इन दोनों साहबोंका चरित्र देखकर सिख लोग विचारने लगे थे, कि अङ्गरेज मालकी नीयत अब सिखराज्यको छीन लेनेकी होगई है। फिर उन दिनोंके अङ्गरेजी अखबारोंकी अधाधुन्ध चिल्लाहटसे उनका यह विश्वास क्रमशः पक्का हो रहा था। सिखोंके बहुत लोग तब अङ्गरेजी पढ़ने लगे थे; कोई कोई अङ्गरेजी अखबार बांचनेका शौक भी प्रगट करने लगे थे। सप्ताहके बाद सप्ताह उन अखबारोंमें प्रकाश किया जाता था, कि सिख युद्ध अब अवश्य होनेवाला है। इस प्रकार अनेकानेक घटनाओंसे सिखोंका चञ्चल बना हुआ चित्त मेजर ब्राडफुटकी और एक कार्रवाईसे एकबार ही हिलोड़ उठा। उन्होंने लुधियानेके पड़ोसमें स्थित दो सिख प्रदेशोंको अङ्गरेजी अधिकारके शामिल कर लिया। मेजर साहबने इस लूटका कारण यह बताया, कि इन

स्थानोंमें अङ्गरेजी राज्यके अनेकानेक अपराधी छिपे रहकर अङ्गरेजी अदालतके विचारसे बचे रहते हैं। इस बहानेको यदि सच भी मान लिया जावे, तो मित्रराज्यके राजासे उन अपराधियोंकी गिरफ्तारी करा लेना अथवा गिरफ्तारीका परवाना हासिल कर स्वयं उन्हें गिरफ्तार करना ही चिर प्रसिद्ध नियम है। पर सदाके नियमको लङ्घन कर मित्रताकी सन्धिको पैरोंसे रौंदकर अङ्गरेज मेजरने अपूर्व हठका परिचय दिया। स्वाधीन मित्र नरेशके राज्यपर अपने कर्म्मचारीसे इस प्रकार हस्तक्षेप होते देखकर अङ्गरेजी गवर्नमेण्टने भी उस कर्म्मचारीके कार्य्यका दण्ड देकर उक्त प्रदेशोंको लौटा देना उचित न समझा। सिख लोग निश्चय कर चुके, कि अङ्गरेजी सरकार योंही बालक महाराजके राज्यको लूट लेंगे। उनके हृदयमें अबसे अपनी मर्य्यादा तथा अपनी स्वाधीनता बनाये रखनेके लिये लड़ाईकी अग्नि जलने लगी। सिखोंकी भुजा दुर्ब्बल न थी, अस्त्रोंमें भी मोरचा न लगा था, केवल एक मित्रता मात्रके लिहाजसे अपने विचारके वह घोर अत्याचार इतने दिनसे सहते जाते थे। पर सहनशीलताकी भी हद है। वह हद प्रगट होनेकी सूचना अबसे होने लगी।

सिखोंकी युद्ध-लालसा कई एक विश्वासघाती स्वजातियोंकी अनूठी घृणित चेष्टासे और भी बढ़ उठी। ये लोग अङ्गरेजोंके साथ साजिशमें फंसकर अङ्गरेजोंकी एकमात्र आशङ्कास्थल सिख-सेनाके सर्व्वनाशकी कामना करने लगे। अपनी स्वार्थवृद्धिकी प्रतिज्ञासे मोहितः होकर ये वीरवंशके कायर लोग परम पूजनीया स्वर्गसे भी गरीयसी मातृभूमिको तिलाञ्जलि करनेको उद्यत होगये। वे हजार अयोग्य होने पर भी पञ्जाबमें उच्च

पदवी प्राप्त किया चाहते थे ; पर प्रचण्ड खालसा सेनाकी महिमा-पूरित स्वदेश-हितैषितासे उनका अभीष्ट सिद्ध नहीं होता था। इसी रिसको मिटानेके लिये रणजीतराज्यकी बुनियाद-रूपी इस संसारप्रसिद्ध सेनाको उखाड़कर अपनी परम प्यारी स्वाधीनताको निर्म्मूल करनेको भी कातर न थे। जितने दिन इतिहास रहेगा, जितने दिन मनुष्योंमें मनुष्यता रहेगी, इन मनुष्य-चर्म्मयुक्त सर्पोंकी घृणा होती रहेगी। हाय! इन्हींकी साजिश रणजीतके अपरिमित बलवीर्य्यसे स्थापित संसारके नेत्रोंको झलकानेवाले विशाल राज्यका भी नाश होगया।

इन स्वदेश तथा स्वजाति-वैरियोंमें लाल सिंह और तेज सिंहके नाम सबसे अधिक घृणाके साथ स्मरण किये जाते हैं। राजनीतिकी महिमा ऐसी कलङ्कभरी है, कि सभ्यताके लिये जगत्-प्रसिद्ध अङ्गरेजोंने भी इन विश्वासघातियोंको आदरपूर्व्वक स्वागत किया ; उनकी लालसा पूरी करनेकी प्रतिज्ञा कर उत्साहित किया। ये लोग सिख-सेनाको अङ्गरेजोंके विरुद्ध सर्व्वनाशी युद्धमें फंसनेके लिये बारम्बार उकसाने लगे। सिख सेना अवश्य ही ऐसी निर्बुद्धि न थी, कि इन निकम्मे पुरुषोंकी उत्तेजनासे अङ्गरेजोंके विरुद्ध खड़े होनेको राजी होती ; पर पहिले कहे कारणोंसे वह जिस प्रकार चञ्चल हो पड़े थे, उससे इनकी चेष्टा शराबीके सामने रखे हुए लबालब प्यालेका काम करने लगी। जो सिख सेना रणजीत सिंहके अपार वीरतामय आज्ञाके अधीन थी, वह काल-चक्रकी मानो दासी बनकर इन सिख नामके अयोग्य विश्वासघातियोंकी कुटिल इच्छा पूरी करनेको उद्यत होगई। इस प्रकार उत्साहित होकर जब

सिख सेनापतियोंने अपनी सेनाओंको सम्बोधन करके कहा, "हे सिखवीरो! विदेशियोंसे पञ्जाबका पवित्र राज्य क्रमशः लुट रहा है, अब तुम क्या करना चाहते हो?" तब सिख सेनाके महावीरोंने जवाब दिया, "हम हृदयका रक्त गिराकर, मातृभूमिकी स्वाधीनता अटल रखेंगे।"

सिखसेनामें ऐसी ही प्रबल युद्धाग्नि जल उठनेके अवसर पर अंङ्गरेजी राज्यकी तात्कालिक सीमापर दलबल समेत गवर्नर जनरल बहादुरके उपस्थित होते ही सिखोंने समझ लिया, कि अब युद्ध आरम्भ करनेमें विलम्ब होनेसे हमारा राज्य अङ्गरेजी राज्यमें मिल जायगा; लाट साहब उसी हेतु सहरद पर आये हैं। बस फिर क्या था? लड़ाईका डङ्का बज उठा। राजधानी लाहौरमें "लड़ाई लड़ाई" ध्वनि उठने लगी। सिख लोग महाराज रणजीत सिंहके समाधि-स्थलपर उपस्थित हो होकर जन्मभूमिका विपज्जाल काटकरके पवित्र धर्म्म और प्यारी स्वाधीनताकी रक्षाके लिये प्रतिज्ञा करने लगे।

अनेकानेक अङ्गरेज ऐतिहासिक तथा उन दिनोंके बहुतेरे अङ्गरेज कर्म्मचारी भी इस युद्धका दोष सिखोंपर लगाते हैं। पहिले ही युद्धका डङ्का बजाकर अङ्गरेजोंके विरुद्ध सेना दौड़ानेके लिये उन्हींको सन् १८०९ ई०की सन्धि बिगाड़नेके कलङ्कसे रङ्गते हैं। यदि सचमुच इनका ऐसाही विश्वास पक्का हो, तो यही कहना होगा, कि वे सिखसीमामें स्थित कई एक अङ्गरेज कर्म्मचारियोंकी सिखोंके असन्तोषकारी कार्य्यावलीसे ज्ञात नहीं हैं। जो हो, हमारे विचारमें दोष किसीको न लगाना ही धार्म्मिक मात्रको कर्त्तव्य है। मङ्गलमय भगवानकी मङ्गल इच्छाही पूरी हुई है; इसमें मनुष्यका क्या दोष है?

तीसरा अध्याय।

प्रथम युद्ध।

कारण चाहे जो हो, सिख लोग ही कलङ्कके भागी हुए। अङ्गरेजोंने प्रचार किया, "सिखसेनाने विना कारण अङ्गरेजी राज्यपर हमला किया है; इस लिये ब्रटिश राज्यका सम्मान अटल रखनेके लिये सन्धि भङ्ग करनेवालोंको उचित शिक्षा देना पड़ती है। अबसे सतलजकी बांई ओरका तमाम महाराज दलीप सिंहका अधिकृत भूखण्ड ब्रटिश राज्यमे शामिल मान लिया जावे।" जिस वीर अङ्गरेजके दस्तखतके साथ यह इश्तिहार जारी हुआ, उनका नाम डूक आव वेलिङ्गटन था। उन दिनों भारतके सेनापतियोंमें उनका यश बड़े सम्मानके साथ गाया जाता था; वह युरोपमें डांवाडोल मचानेवाले महावीर नेपोलियनका अलौकिक युद्धकौशल देख चुके थे। उन दिनोंके प्रधान सेनापति लाट गफने उनको चुपके बुलाकर सिखयुद्धका सेनापति बनाया; आज्ञा पाते ही सन् १८४५ ई०की १३वीं डिसम्बरको खांकी-सरायमें पहुंचकर उन्होंने इस इश्तिहारके जरिये सिखोंकी युद्ध-पुकारका जवाब दिया। बस घोर युद्ध उमड़नेका तमाम सामान एकत्रित होगया। अवश्यही अङ्गरेज पहिलेसे इस युद्धके लिये अप्रस्तुत न थे। अम्बालेसे सतलजतक ३२ हजार ४७६ लड़ाकोंकी महावीर सेना अङ्गरेजी प्रतापकी अटलता दिखानेको पहिले ही सज धजकर मानों इस युद्धका अवसर देख रही थी। पर तौभी अङ्गरेजोंको इस युद्धकी सूचना देनेमें भी अपनी निष्कलङ्कता ही प्रगट करनेका मौका

मिल गया। जहां सिखोंने १७ वीं नवम्बरके दिन लड़ाईका डङ्का बजाया और ११वीं डिसम्बरको सेना सतलजके इस पार उतर आई, तहां अङ्गरेजोंने १८ वींको उक्त सूचना दी। इस लिये यदि अङ्गरेजोंने मित्र नरेशके बालक पुत्रके अरक्षित राज्यकी कामनासे लड़ाईकी हो, तोभी इस लड़ाईका परिचय देनेमें किसी विदेशी महाराजके सम्मुख अङ्गरेज महाराजको लज्जित होना नहीं पड़ा।

जो सिख सेना चढ़ आई थी, उसकी संख्या पचीस वा तीस हजारसे अधिक न थी। पर अङ्गरेज-ऐतिहासिक कनिङ्घम साहब लिखते हैं, कि शत्रुओंकी सेना अधिक कहनेमें विरुद्ध लड़नेवाले वीर लोग अपनी बड़ाई मानते हैं; इसी पुरानी कलङ्कित रीतिको अवलम्बन कर बहुतेरे इतिहास लिखनेवाले अङ्गरेजोंने भी इस सेनाकी संख्या अपार वर्णन करते तथा थोड़ी सेनाके सहारे अङ्गरेजोंके इसके विरुद्ध लड़नेकी दुहाई देते हुए अपनी जातीय प्रतिष्ठा बढ़ानेकी चेष्टा की है; पर वास्तवमें सिखोंकी संख्या २५।३० हजारसे अधिक न थी। हमला करनेवाली सिख-सेना अपने साथ १५० तोप लेकर आई थी। अङ्गरेज पहिले अफगान युद्धके दिनों सिख-सेनाकी वीरता देख तो चुके थे; पर इससे पहिले उसकी वीरता कभी स्वयं लड़कर आजमानेका मौका उनको प्राप्त नहीं हुआ था। और इतने दिनों सिखोंके, युद्ध आदिसे एक प्रकार निश्चेष्ट रहने तथा उसको सब प्रकार सेनापति-वर्जित देखनेके कारण अङ्गरेज सेनापति उसकी अनन्त शक्तिको ठीक ठीक अनुभव न कर सके। इसी लिये उन्होंने सिर्फ १७ हजार वीर-सेना और ६८ तोपें लेकर उन पर्वत-विदारी महावीरोंका मुकाबिला करनेकी हिम्मत की

थी। वह यह घमण्ड भी जाहिर कर चुके थे, कि हम देखते ही देखते इन हिन्दुस्थानी भेड़ोंको भगा देंगे। केवल सेना-सहित सामने पहुंचकर एकबार उनको ब्रटिश तोपोंकी आकाशमें गुञ्जने वाली गर्जन मात्र सुनाना है; एकबार गोरे वीरोंके लाल चेहरे दिखाने हैं; बस बिना विलम्ब, बिना बड़ी साज-बाज सिखोंकी अकल ठिकाने पहुंच जायगी; चढ़ आई हुई सेनाके धुरें उड़ जायंगे। हजार वीर होने पर भी काले मुल्कके रणकौशल-वर्जित कालोंके लिये बड़ी सेना अथवा बहुत दिन-व्यापी युद्ध योग्य तय्यारीका क्या प्रयोजन है? पर युद्ध उपस्थित होने पर सेनापति वेलिङ्गटनको अपने भ्रमका विलक्षण अनुभव हुआ। वह अकचका कर देखने लगे, कि नहीं भारत उनके कपोल-कल्पित भेड़ोंके बदले सच्चे सिंहोंकी जन्मभूमि है; हरेक सिख उनके पूजनीय महावीर नेपोलियनकी प्रतिमूर्त्ति है; और अनन्त वीरताके साथ मातृभूमिके लिये हृदयका रक्त विसर्जन करनेका अति पवित्र उत्साह उन कालोंकी नस नसमें घुसा हुआ है। सो घबराकर विचारने लगे, कि इस बार सच्चे आदमियोंसे काम पड़ा है; इनसे लड़नेमें चिरसञ्चित प्रतिष्ठा बनी रह जाय, तो भगवानकी बड़ी कृपा मानी जायगी।

प्रतिष्ठा बनाये रखना ही भगवानको मञ्जूर था; नहीं तो गुरुगोविन्द सिंहके इन धर्म्मप्राण महावीर सिखोंको आज ब्रटिश जातिसे कलुषित साजिशमें फंसे हुए दुराचार लाल सिंहका नकली सेनापतित्व क्यों मञ्जूर होता? मातृभूमिके लिये सर्वस्व गंवानेको उद्यत इन अटल प्रतिज्ञाबद्ध प्रिय स्वजातियोंके अगुआ बननेके अहङ्कारसे उस सिख नामके अयोग्य लाल सिंहकी छाती फूल न उठी; केवल अपनी अधीन सेनाका

सर्व्वनाश कर अन्तमें अङ्गरेजोंकी कृपासे राजशक्ति प्राप्त करनेकी चिन्ता अबतक उसके कलुषित हृदयको उत्साहित कर रही थी। सतलजके इस पार सेनासहित पहुंचकर ही उसने उन दिनोंके अङ्गरेज-एजण्ट निकलसन साहबको लिख भेजा, "आपको मालूम ही होगा, कि मैं अङ्गरेजोंका मित्र हूं। अब कहिये मुझे क्या करना चाहिये।" निकलसन साहबने इसका उत्तर दिया, "आप अबतक अङ्गरेजोंके मित्र बने हों, तो फीरोजपुरपर हमला मत कीजिये। जबतक बन पड़े, हमला करनेसे बाज रहिये; आगे गवर्नर जनरलकी तरफ सेना ले जाइये।" सिख सेना शत्रु समझकर जिनसे लड़नेको आई थी, उसके सेनापतिने उन्हीं अङ्गरेजोंके प्रतिनिधिकी बात गुलामकी भांति मान ली। उस समय फीरोजपुर केवल ८ हजार सेनाहीसे रक्षित था। लाल सिंह तथा तेज सिंह ये दोनों यदि एकमतसे अङ्गरेजोंकी हितेच्छा कर सिख सेनाको ध्वंस करना अपना इष्ट न मानते तो सिख सेनासे बिना विलम्ब अनायास ही फीरोजपुरके धुर उड़ जाते। और फीरोजपुरी फौजका सर्व्वनाश होनेसे तथा लुधियाने और अम्बालेपर एक ही कालमें आक्रमण करनेसे विजय-लक्ष्मीकी कृपा होना भी शायद असम्भव न होता। पर इन सेनापतियोंका अभिप्राय अङ्गरेजोंकी एकत्रित सेनाकी ज्वालामुखीसे खालसा सेनाको भस्म कर देना था। सिख सेनाके आक्रमणके लिये बारम्बार जिद्द करने पर भी उसके कलङ्की सेनापतिने केवल उसकी सामयिक प्रसन्नताके लिया प्रगट किया, "मैं अङ्गरेजोंके प्रधान सेनापतिसे लड़ना चाहता हूं। किसी दूसरेसे लड़ना अपनी बेइज्जती मानता हूं।" अङ्गरेज ऐतिहासिक सर चार्लस नेपियरकी "चिट्ठी-पत्रियों"से मालूम होता है, कि विश्वासघातक

लाल सिंह सिख सेनाको फीरोजपुरके आक्रमणसे न रोकता और उसके बाद ८ ही हजार सेना मातमें रक्षित गवर्नर जनरल हार्डिञ्जपर हमला करने देता तो कदापि अङ्गरेजोंकी पराजय बाकी नहीं रहती। दूसरे अङ्गरेज-ऐतिहासिक लडलो साहबके इतिहाससे मालूम होता है, कि इन दोनों आक्रमणोंके हो जानेके बाद सिख-सेनापतियोंके हजार विश्वासघात करनेसे भी अङ्गरेज लोग अपने निश्चित सर्व्वनाशसे कदापि अपनी रक्षा न कर सकते और एक ऐतिहासिकने कहा है, कि रणकौशली रणजीत सिंह जीवित रहते, तो सतलज पार करके ही अङ्गरेजोंके अधीन और आश्रित प्रदेशोंको हमला करके वहां लूटतराज मचाना ही उनका मुख्य कार्य्य होता। उस दशामें अङ्गरेजोंको जरूर ही सन्धिके लिये छटपटाना पड़ता। मकग्रेगर साहबने सिखोंका इतिहास लिखनेमें बताया है, "यदि लाल सिंह सिख सेनाको एक स्थानमें आवद्ध न रखकर इधर उधर फैला देता, तो उस दशामें भी इस लड़ाईके शान्त होनेमें बड़ी देरी होती। पर इस प्रकारका कार्य्य लाल सिंहकी इच्छा और आशाके विरुद्ध था।" इस लिये विश्वासघातकने यह सब कुछ न किया; निश्चेष्ट अचलकी भांति सेनाको सुला रखकर अङ्गरेज अजराटकी प्रार्थना पूरी करना अपना परम धर्म्म समझा।

इतने दिनों अपनी समझके अनुसार स्वाधीनतापर हस्तक्षेप करनेवाले अङ्गरेजोंसे सम्मुख युद्धमें वीरता प्रगटकर अत्याचारका बदला लेनेके लिये सिखोंको जो बड़ी उत्साहठसी हुई थी, जिसके वश वे हरेक किसके कष्टोंको तुच्छ जानने लगे थे—यहांतक कि घोड़ोंके बदले स्वयं ही तोपें खींचते, कुलियोंके बदले गाड़ियों

तथा नावों पर स्वयं रसद आदि लादते उतारते थे तथा और भी तरह तरहकी कठोर मेहनतकी परवा न करते थे; एवं जिस उत्साहसे मोहित होकर सदा यों लड़ेंगे, यों काटेंगे, यों मारेंगे, यों जीतेंगे इत्यादि आनन्द उत्साहके स्वप्नमें मग्न थे, उसे अन्तमें दूर करनेका कराल रक्तरञ्जित अवसर उपस्थित हुआ। वह भीषण प्रथम दिन सन् १८४५ ई०का १८ वीं डिसम्बर था। मानों इतिहासोंमें चिरस्मरणीय होनेके लिये मुदकीका मैदान इसका अभिनयस्थल बना। प्राय: ११ हजार ब्रटिश वीर सिंह-गर्जनसे आकाश गुंजाते हुए वहां उपस्थित हुए। प्राय: उतने ही सिख-सिंह अपनी केशरी चालसे धरती कंपाते हुए, उनका सामना करनेको उद्यत हुए। जिन अङ्गरेजोंने फरासीसी महावीर नेपोलियनकी लड़ाईमें हराकर युरोपको निडर किया है, जिनके प्रचण्ड विक्रमसे अनन्त प्रतापी मरहटे, मुगल, पठान अफगान सबहीका प्रताप झुलस गया है, जिनकी विराट वीर-लीलासे विशाल भारतका वीर व्यवहार भस्म होचुका है, उन्ही रणवीर इङ्गलण्ड-वासियोंके सम्मुख अल्प सेना लेकर विश्वास-घातक सेनापतिके भरोसे सिख जाति लड़ाईमें भिड़ गई। २२ तोपोंके साथ आई हुई २ हजार घुड़सवार और ८।६ हजार पैदल सिख सेनाको ११ हजार ब्रटिश फौज तथा ब्रटिश-चालित सिपाहियोंके सामने खड़ी कर सेनापति लाल सिंहने विश्वासघातकी पूर्णता प्रगट करनेके लिये आहिस्ते सेनापतिका कर्त्तव्य त्याग दिया—इच्छा यही थी, कि अङ्गरेजोंके सुप्रसिद्ध अफसरों द्वारा परिचालित सुशिक्षित सेना। बिना सेनापतिकी आज्ञा अपनी इच्छानुसार लड़कर स्वजातीय भाई लोग दमभरमें कट मरें—संसारके इतिहासमें ऐसा घृणित दृष्टान्त बहुत विरल है।

बहुत लोग कहा करते हैं, कि हिन्दुस्थान-निवासियोंने ही मातृभूमि हिन्दुस्थानको मुसल्मान और स्वजातिके नरेशोंसे जीत-कर अङ्गरेजोंके हाथमें सौंप दिया है। बात बहुत सही है। हिन्दुस्थानके लोगोंसे हिन्दुस्थानियोंका गला कटवाना सम्भव है, इस प्रकार विश्वास पहिलेके कमजोर अङ्गरेज-वणिकोंके मनमें उपस्थित होना ही अन्तमें उनकी राजप्रतिष्ठाका कारण हुआ। वह दृश्य, हिन्दुस्थानियोंका हिन्दुस्थानियोंके गला काटनेका कठोर दृश्य, इस सिख-संग्रामके प्रारम्भमें मुदकीके मैदानमें दीखने लगा। अङ्गरेज अफसरोंकी अधीनता मानकर उनकी आज्ञानु-सार राजपूत-सिपाहियोंकी पल्टन स्वदेशीय सिखोंपर टूट पड़ती है—वह सिंह विक्रम, वह अदम्य साहस, हिन्दुस्थानी भुजामें विदेशीयोंके रणकौशलकी अपार रौनक—अङ्गरेज जातिके लिये बड़े आदरकी वस्तु है। कड़ालूरके खेतमें फरा-सीसियोंका अनन्त बलवीर्य देखकर अङ्गरेज भीत चकित होगये थे; वहां मानो उनसे यह कहते हुए "साहब! अन्नदाता! कुछ परवा नहीं, आप निःशङ्क हों, जब तुम्हारे अन्नकी महिमासे स्वदेशियोंका सर्व्वनाश करते हैं, तब इन विदेशियोंको मार भगानेमें क्या देर लगेगी" हिन्दुस्थानी वीरोंने देखते ही देखते फरासीसियोंका सर्व्वनाश कर जिस अपार युद्धशक्तिका परिचय दिया था; हिन्दुस्थानी सिपाहियोंकी जिस अटल शक्तिने अलङ्घ्य गवालियर दुर्गपर अङ्गरेजोंकी विजय-पताका गाड़कर महामान्य मरहटोंका सम्मान बिगाड़ा था; भारतीय वीरोंकी जिस जगत् प्रसिद्ध शूरताने आगरेको कर्नल क्लाइटके पैरोंपर लोटा दिया था, भरतपुरी जाटोंको जड़वत बना दिया था, गुरखाओंका गौरवसूर्य्य महाभयकी घन-घटासे आच्छादितकर

सेलोंनको मलिन किया था; नीलावलदीके क्षेत्रमें अपने दूने शत्रुओंको हराकर अङ्गरेजोंकी विजय-लक्ष्मीको उत्साहित किया था, आज उन्हीं अङ्गरेज-चालित भारतीय शूर सिपाहियोंकी प्रचण्ड वीरता स्वदेशीय सिखोंके विरुद्ध प्रगट होने लगी; पर भारतवासी सिख ही उसे सहनेको समर्थ थे;— अथवा केवल सहना ही क्यों, सिखोंका भीम-विक्रम ही उस सिंह-विक्रमकी गति पलटानेको समर्थ था। अङ्गरेजोंके प्रधान सेनापति गफ बहादुर अकचकाकर देखने लगे, कि यद्यपि सेनापति नहीं है, केवल लड़ाकी सिख सेना खड़ी है, लड़ाईकी आज्ञा देनेवाला नहीं है, केवल सिख-सिपाहियोंमें लड़ाईकी प्रवृत्ति है— तौभी हरेक आक्रमणसे अङ्गरेजी सेनाको बलवीर्य्य खोकर सेनाविभागके पीछे भाग भागकर प्राण बचाना पड़ती है। इसको फिर युद्धस्थलमें उपस्थित करनेमें अङ्गरेज सेनापतिको बड़ी बड़ी दिक्कतें झेलना पड़ती हैं; लड़ाईमें सिखोंकी अपूर्व्व फुर्तीने अङ्गरेजी सेनाको मोहित कर लिया। प्रसिद्ध है, कि इस प्रकार घबराहटमें पड़के अङ्गरेजी सेनाने अङ्गरेजी सेनाही पर गोली चलाई थी। आगे इस गड़बड़ झालेसे बचनेको अङ्गरेजी सेना सङ्गीन तान कर सिख सेनापर दौड़ी। सेनापतिहीन सिख-सेना जिस अस्वाभाविक वीरतासज्जित वीरतासे अङ्गरेजी सेनाके सम्मुख अपनी छाती रखकर क्रमशः पीछे हटने लगी, वह सदा स्मरण रखने योग्य घटना है। इस प्रकार पीछे हटने पर भी तितर बितर न होकर ढाईकोस तक जाना—बल्कि हरेक पदक्षेपमें अपनी वीरताकी प्रचण्ड आंच शत्रुओंको विलक्षण अनुभव कराना, आजतक सिखोंके सिवा किसी

दूसरी जातिकी सेनासे किसी युद्धमें सम्भव नहीं हुआ है। केवल रात्रि आनेसे युद्ध उस दिनके लिये वहीं समाप्त करना पड़ा; अपने ८७२ आदमियोंकी बलि चढ़ाकर अङ्गरेजोंने सिखोंकी १७ तोपें हासिल कीं। प्रसिद्ध अङ्गरेज वीर सर रावर्ट सेल और सेनाध्यक्ष कासकिलने मुदकीके मैदानमें महा निद्राकी शरण ली। सिखोंकी हानि अङ्गरेजोंसे बहुत थोड़ी होना और युद्धके बादही बाकी अङ्गरेजी सेनाका दूसरी लड़ाईकी अपेक्षामें न रहकर सर जान लिटलरकी सेनासे जा मिलना, उस दिनकी विजयको सन्देहके अन्धकारसे आच्छादित करता है। अङ्गरेज घमण्डके साथ नहीं कह सकते, कि मुदकीके युद्धमें हमारी जीत हुई।

नहीं जानते, शत्रुके चरित्रको विकट भाषामें निर्दय सिद्ध करनेसे कुछ राजनीतिक अभिप्राय सिद्ध होता है, कि नहीं। अवश्यही हजारों ठौर अङ्गरेजोंने ऐसी चेष्टा की है। पर जिन अङ्गरेजोंने किसी युद्धमें अपनी सेनाके कैद हुए लोगोंपर शत्रुओंके सद्व्यवहार पानेकी बात नहीं मानी है, बल्कि "काली कोठरी" आदिकी बात उठाकर सिराजुद्दौला आदिके चरित्रोंको अति निर्दय प्रगट करनेके लिये हजारों प्रमाण दिये हैं, उन्हीं अङ्गरेजोंको सिखोंके हाथ कैद हुए स्वजातियोंपर सिख-व्यवहारकी बड़ी प्रशंसा करना पड़ी है। सिखोंके इतिहास लिखनेवाले अङ्गरेजों द्वारा प्रकाशित सिर्फ एकही आध घटनाका यहां उल्लेख करते हैं। लफटण्ट बिडल्फ नामक एक गोरेके मुदकीमें कैद होने पर सिखोंने अपने शत्रुको, सभ्यताके लिये अपनेको संसार-प्रसिद्ध कहनेवाले अङ्गरेजोंकी भांति कैद नहीं रखा, अथवा जङ्गी विचारसे उसको फांसीपर

भी लटकानेकी दया अङ्गरेजी रीत्यनुसार न दिखाई, बल्कि सिपाहियोंके उसे अफसरके सामने खेमेमें पहुंचाते ही अफसरने उसकी बेड़ी कटवाई और मुसकिराते हुए यह कहकर छोड़ दिया, कि शत्रुओंका बदला हम यहां नहीं लेते हैं। आप अपनी सेनामें बिना बखेड़ा पहुंचकर लड़नेके लिये तय्यार हुजिये,युद्धक्षेत्रमें बदला लिया जायगा। बस एक सिखने लफटण्ट साहबको अपने अफसरके हुक्मनामा लेकर सिखोंकी छावनीसे पांचकोस दूर अङ्गरेजी अड्डेके पास पहुंचा दिया। इस सज्जनतासे मोहित होकर उदार-हृदय लाट हार्डिङ्गने लफटण्ट बिडल्फको फिर सिखोंसे विरुद्ध लड़ने न दिया। मुदकीकी लड़ाईके बाद और एकबार कई एक राह भूलकर सिखोंकी छावनीमें पहुंचे हुए गोरे सिपाही एक एक रुपया राहखर्च पाकर आनन्दसे सिखोंकी सज्जनता बखानते हुए अपनी सेनामें पहुंचे थे। गिरे शत्रुओंसे ऐसा सुन्दर वर्त्ताव एक हिन्दू जातिको छोड़कर अन्य लोगोंमें विरल है।

फीरोजपुरमें लिटलर साहबके अधीन जो आठ हजार सेना थी, उसके फिरोशहरसे दो कोस दूर आने पर मुदकीसे चलकर प्रधान सेनापति गफ बहादुरने २१ वीं डिसम्बरको उसी सेनाके साथ अपनी शेष सेना मिलाई। इससे इन दो मिलित सेनाओंकी संख्या प्राय: १८ हजार होगई। यह फौज ६५ तोपोंके साथ फिरोशहरपर आक्रमण करनेको चली। इस फौजमें एक अद्भुत घटना सङ्घटित हुई। संपूर्ण भारतके शासनकर्त्ता गवर्नर जनरल हार्डिङ्ग बहादुरने अपने ऊंचे पायेकी परवा न कर प्रधान सेनापति गफकी अधीनतामें दूसरे सेनाध्यक्षका पद अपनी इच्छासे स्वीकार किया। वीर सिखोंके साथ स्वयं लड़नेकी प्रबल इच्छाके

वश तथा किसी विशेष कारणसे अङ्गरेजी सेनाका उत्साह बढ़ानेके लिये सदाके योद्धा लाट हार्डिञ्ज बहादुरने यह नई बात दिखाई।

मुदकीके बाद फिरोशहरमें भीषण युद्ध हुआ। फिरोशहर मुदकी और फीरोजपुरसे पांच कोस पर स्थित है। इस गांवमें सिख सेनाने आकर बड़ा कठोर व्यूह बनाया था। लिटलर साहबकी सेना मुदकीसे लौटी प्रधान सेनापति गफकी फौज स्वयं लाट हार्डिञ्जकी सेनाध्यक्षतासे पुष्ट होकर इस पहाड़-सदृश सिख-व्यूह पर टूटी। अग्निकी वर्षा करती हुई जब ब्रटानियाकी वीर-सन्तान सिखोंकी ओर दौड़ने लगी, तब दृश्य बड़ा भयानक हुआ। पर बार बार यों धावा करके भी वह सर्व्वग्रासी गोरी-सेना सिखोंका एक बाल भी उखाड़ न सकी। जिस जातिने युरोपके अमर वीर नेपोलियनको पिंजड़ेमें कैद कर संसार-विजयी नामकी प्यारी प्रतिष्ठा प्राप्त की थी, आज उसे सिखोंकी अटल शक्ति, अपूर्व्व रणकौशल तथा अदम्य धीरता देखकर भीत चकित होना पड़ा। बारम्बार अङ्गरेजी सेना सिखोंपर हमला करने लगी; पर बारम्बार ही ऐसी हानिसे हटाई गई, कि अङ्गरेजोंको इससे पहिले किसी एशियाई लड़ाईमें इस प्रकार बेइज्जत होना नहीं पड़ा था। सिखोंकी अग्निवृष्टिसे अङ्गरेजोंकी तोपें टूटने लगीं, रसद-पूरित गाड़ियां रसद आदि समेत ध्वंश होने लगीं और बारूदका ढेर आग बनकर आसमानकी उड़करके महाहत्या मचाने लगा। हर लहमेमें अगणित वीर वज्रसे जले महावृक्षकी भांति झुलसकर खेतमें बिछने लगे। रणक्षेत्रका दृश्य अति भयानक हुआ। पर धन्य अङ्गरेज! इतने पर भी तुमने पीठ न दिखाई। इतनी

हानिसे भी जिसकी हिम्मत नहीं टूटती है, उसके बिना विशाल भारतका अधीश कौन हो ? वास्तवमें अङ्गरेज कविका कहना ठीक ही है, कि गिरा देनेवालेसे अधिक बहादुरी बारबार गिरकर खड़े होनेवालेकी प्रकाशित होती है।

अङ्गरेज पीठ न दिखावें, पर सिखोंके अनन्त भुजबलसे उनकी स्वाभाविक धीरता तथा ब्रिटिश सेनाओंकी जगत्-प्रसिद्ध सुन्दर शृङ्खलामें इतना बट्टा लगा, कि शायद और किसी एशियाई लड़ाईमें भारत-विजयियोंको इतनी विपद झेलना न पड़ी थी। सिपाही अफसर, घुड़सवार पैदल, कुली गोलन्दाज सब निज निज स्थानसे भ्रष्ट होकर मिल मिलाके कलरवकारी नरमण्डलीकी भांति बन गये। गोलियां चलाई जाती हैं, पर छोड़ने वालोंको मालूम नहीं है, कि किधर किनपर चला रहे हैं; गोले दगते हैं, पर गोलन्दाजोंकी शत्रु-सेनाकी ओर लक्ष्य करनेकी शक्ति हर गई है; अफसर लोग इधर उधर फिरते तो हैं, पर हानि शत्रुओंकी अथवा अपनी हो रही है, यह विचारनेका उपाय नहीं है। सेनापति हुक्म देनेको मुस्तैद तो हैं, पर हुक्म किसे दें, किससे वह तामील हो, इसी विचारमें उनके लिलारसे घबराहटका पसीना टपक रहा है। इसी घबराहटके कु-अवसरमें रात्रि आई—निशाके अन्धकारने मानो उसी अन्धकार देखती हुई अङ्गरेजी सेनाके लिये ही आज और भी घोर अन्धकार-मूर्त्ति धारण की। पर सिखोंसे इस रात्रिके अन्धकारमें भी निस्तार नहीं। सिख लड़ना ही और लड़कर मरना ही जानते हैं; लड़ाईके आरम्भसे खेतमें सो जानेतक थकावट उसे क्यों आने चली ? खालसासेनाने थकावटकी शिक्षा कभी नहीं पाई थी। रात्रिका अन्धकार उनकी तोपोंसे निकली हुई

बिजलीसे दूर ही रखा था। आगेकी अग्नि और दायें बायें तथा पीछेके रात्रिरूपी स्याह-सागरने अङ्गरेजोंको युद्धमें शत्रुओंके हाथ कैद हुए अभागोंकी भांति रोक रखा। अन्तर केवल इतनाही था, कि युद्धके कदियोंको दयावान जीतनेवालोंसे अत्याचार सहने नहीं पड़ते हैं; पर इन बंधुए से बने हुए अङ्गरेजोंको हरघड़ी सिख तोपोंकी अग्निसे दहना पड़ा।

रात्रि आते आते अङ्गरेजी व्यूहका बायां भाग बिगाड़कर लिटलरको अपनी अधीन सेना समेत भागना पड़ा था। वालस साहबको दो पल्टनोंको गिलबर्ट-चालित सेनासे बने व्यूहके दाहिने भागकी शरण लेकर जान बचाना पड़ी थी। केवल एक यह गिलबर्ट-चालित सेनाही अपने स्थानसे च्युत नहीं हुई थी। व्यूहके इसी भागमें प्रधान सेनापति गफ और गवर्नर जनरल हार्डिञ्ज विराज रहे थे। जब अङ्गरेजी सेना इस दशामें अपनी विपद भारी विचार रही थी, तब मुदकीके क्षेत्रसे लाल सिंहके भी सेना-सहित फिरोशाहरकी विजयी सिखसेनामें शामिलनेकी आनन्दध्वनि उड़ने लगी। बस अङ्गरेजी सेनाका शेष उत्साह तथा बल वीर्य्य बूझनेपर हुआ। लाट हार्डिञ्जको अङ्गरेजी सेनाकी यह घोर दशा असह्य हुई। उन्होंने अपनी घड़ी और तमगे आदि पुत्रके हाथमें देकर प्रतिज्ञा की, कि इसी फिरोशाहरकी लड़ाईमें या तो जीवन विसर्जन करेंगे अथवा जीतकर अङ्गरेजोंकी प्रतिष्ठा अटल रखेंगे। बस करोड़ों भारतवासियोंके दुख सुखदाता अनन्त शक्तिमान गवर्नर जनरल लाट हार्डिञ्ज बहादुर सामान्य सिपाहीकी भांति सेनामें घूमने लगे; जहां कहीं निराशा बढ़ रही थी, जहां कहीं दुर्ब्बलता देखती थी, वहीं लाट बहादुर भूख थकावटकी परवा न कर

खाने लगे। एक सिखतोप इस लहमे आग उगालती हुई अङ्गरेजी सेनाको बेतरह सता रही थी; लाट हार्डिञ्ज अपनी जानकी परवा न कर कई साथियोंको लेकर उस तोपकी ओर दौड़े; कीलोंसे उसका मुंह बन्दकर उसके अत्याचारसे अङ्गरेजोंकी रक्षा की। जिस जातिके लोगोंमें जातीय गौरव दृढ़ रखनेकी कामना इतनी तेज है, कि उसके देखे पदका गौरव, जीवनकी माया, सब भस्म होजाती है, उस जातिका गौरव बनाये रखनेके लिये स्वयं भगवान हीकी इच्छा होती है। अन्तत: इस सिख युद्धने लाट हार्डिञ्ज-चालित अङ्गरेजोंके लिये वैसी ही लीला दिखाई।

जिन सिख-सरदारोंके विश्वासघातने सिख-सेनाके सतलज पार करनेपर आक्रमणमें विलम्ब कर अङ्गरेजोंको बलसञ्चय करनेका सुबीता कर दिया था, जिनकी शत्रु-हितैषिताने मदकीके मैदानमें अङ्गरेजोंको महाहत्यासे बचाया था, उनकी ही खजाति ध्वंश करनेकी कामनाके कारण फिरोज़शहरमें भी अङ्गरेज लोग ध्वंस नहीं हुए। फिरोज़शहरसे थोड़ीही दूरपर सिखसेनाका कुछ अंश आज्ञा पाते ही फिरोज़शहरके सिखोंसे मिलनेको प्रस्तुत था। जब कि अङ्गरेजी सेना सिखोंका अनन्त विक्रम सह्य करती हुई अबतक खड़ी थी, जब कि मुदकीसे लाल सिंहके अपनी सेना सहित आनेपर भी अङ्गरेजोंने अपना स्थान न छोड़ा था, तब उस थोड़ी दूर-स्थित प्रस्तुत सेनाको लाकर इन प्राय: विजयी सिखोंका दल पुष्ट करना ही सेनापति मात्रका मुख्य कर्त्तव्य था। ऐसा होनेसे शायद सम्मुखस्थित एक भी अङ्गरेज केलेकी भांति कटनेसे बाकी न रहता। अथवा मुदकीवाली सेना द्वारा पुष्ट सिखसेनाको सूर्य्य

अस्त्रके पूर्व्वसे लड़ते, थके मारे तथा प्राय: हारे हुए अङ्गरेजोंपर चढ़ा देनेसे अङ्गरेजोंके लिये सर्व्वनाशसे रिहाई पाना सम्भव न था। अथवा लालसिंहकी सेनाको अलग रखकर भी यदि अब तक कुछ भी बल वीर्य्य न खोकर पूर्ण उत्साहसे लड़ती हुई सिखसेनाको अङ्गरेजोंपर हमला करनेकी आज्ञा दी जाती तौभी विजय पाना एक प्रकार निश्चय था। पर इनमेंसे एक न होने पाया। विश्वासघातकोंने मुदकीसे आई सेना समेत पूर्व्वसे लड़ती हुई सेनाके अनेक लोगोंको उक्त दूरपर स्थित सेनासे मिलनेको भेज दिया। जब कि इस अनावश्यक आज्ञापर इतराज हुआ, तब जवाब यह दिया गया, कि उस सेनापर भी अङ्गरेज आक्रमण करनेवाले हैं।

रात्रिके अन्दर यह सब बन्दोबस्त करके स्वजातीय वीरोंको दुर्ब्बल करनेपर भी दुराचारियोंको सन्तोष न हुआ। रात्रि बीतनेपर जब आनन्दमय सूर्य्यके साथ अङ्गरेज इस विश्वासघातके आनन्दसे आनन्दध्वनि कर उठे, तब भी स्वजातिविद्रोही लाल सिंहने अपनी अधीन सेनाको आप ही तितर बितर कर अङ्ग-रेजोंके जीतनेका प्रबन्ध पक्का कर दिया। उधर लाल सिंहकी सेनाकी अङ्गरेजोंके आक्रमणसे दुर्गति होते देखने तथा बहुतेरे सिख वीरोंके आक्रमण करनेको ज़िद करनेपर भी लाल सिंहके सम्पूर्ण हार जाने तथा उसके बाद अङ्गरेजोंके नवीन तय्यारीसे विलक्षण बली न बनने तक तेज सिंहने अपनी अधीन सेनाको न लड़ने दिया। पर इस तौर पर जीतका पूरा मौका पानेपर भी अङ्गरेजोंको जब तेज सिंहके अधीनकी सेनाने आक्रमण किया, तब उनके छक्के छूट गये। सिखोंके भयावने आक्रमणसे बहुत कातर होकर जल्द ही अङ्गरेजी

घुड़सवार सेनाको खेत छोड़ना पड़ा। अङ्गरेजी सेनाके पीछेके सम्पूर्ण लड़ाके फीरोजपुरकी तरफ भाग चले। फीरोज-पुर और फिरोजशहरके बीचका तमाम भूखण्ड अङ्गरेजी सेनाके भागनेवालोंसे भर गया। अङ्गरेजी सेनाके एक अफसरने लिखा है, "अङ्गरेजी सेनाका इतना भय मैंने इससे पहिले कभी नहीं देखा था। एक गोलन्दाजने तीनवार तोप दागनेकी कोशिश की; पर इतना भय खागया था, कि तीनों ही बार उसके थरथराते हुए हाथसे पलीता गिर पड़ा। अन्तमें उसकी भागनेकी शक्तितक जाती रही; ऐसी दशा बहुतेरोंकी हुई। कुली लोग डोली तथा घायल सवारी सबको फेंक फांक कर भागे। रसद, वस्त्र बिछौने तथा उपायरहित घायल सिपा-हियोंसे खेत आच्छादित होगया।"

पर यह प्यारी विजय हाथ लगनेपर भी तेज सिंहने उसपर पदाघात किया। केवल अपनी सेनाको भागते अङ्ग-रेजोंका पीछा करनेसे ही नहीं रोका; बल्कि स्वयं भागने लगा और अधीन सेनाको साथी बना लिया। बस अङ्गरेज कब चूकनेवाले थे? तुरत-फुरत कुछ सेना इकट्ठी कर सिखोंका पीछा करने लगे। योंही फिरोशहरका युद्ध अन्त हुआ; अङ्गरजोंने अपनी विजयका इश्तिहार दिया। पर निष्पक्ष ऐतिहासिकोंकी बात छोड़ दीजिये, लड़ाईमें उपस्थित एक बड़े अङ्गरेज अफसरने भी कहा है; "अंगरेजोंकी यह विजय पूरी पराजय ही है।" जो हो, अङ्गरेजोंको इस युद्धके बाद ७० तोपोंके उपरान्त सिखोंके कुछ प्रदेशोंकी भी प्राप्ति हुई। पर सम्पूर्ण अङ्गरेजी सेनाके सातवें हिस्सेका इस घोर संग्राममें बलि चढ़ गई। सन् १८४५ ई०की २२वीं

डिसम्बरकी यह लड़ाई सिखोंके इतिहासकी एक मुख्य घटना है ।

क्रोध और लज्जासे दुःखी अङ्गरेजोंमें बदला लेनेकी कठोर प्रतिज्ञा हुई । अङ्गरेजी सेना बढ़ाई जाने लगी । पर बारूद और तोपोंकी कमीसे अङ्गरेजोंको कुछ दिन लड़ाईसे बाच रहना पड़ा । अङ्गरेजोंकी यह ढिलाई देखकर सिखोंको आनन्दका पार न रहा । दूने उत्साह तथा साहससे वे फिर सतलजके इस पार आगये और शत्रुओंपर हमला करना विचारने लगे । अङ्गरेजोंको सिखोंकी हमला करनेकी ललकार सुनकर बहुत घबराना पड़ा । पञ्जाब राज्यकी सीमा पर उन दिनों उनकी दशा बड़ी शोचनीय होगई थी । दो लड़ाइयोंमें मरे अगणित लड़ाकोंकी कसर किसी तरह मेटने पर भी गोली बारूदके बिना सिखोंके समान प्रचण्ड वीरोंका सामना करना असम्भव था और संगृहीत सेनाके लिये रसदका प्रबन्ध करना भी बहुत कठिन होगया था । सिख राज्यके जिन अधीन सरदारोंकी भूमि उन्होंने पहिले कलमकी रगड़से अपनी अधीन बसाई थी, अब देखा, कि उनको अपने अधीन बनाये रखनेमें सामान्य गोली बारूदका प्रयोजन नहीं है । वे सब सरदार अब सिखोंसे मिलकर अङ्गरेजोंके विरुद्ध खड़े होनेकी नीयत दिखा रहे थे ; जिन्होंने एकायक खुलाखुली मिलनेकी हिम्मत न भी की वे गुप्त रीतिसे सिखोंके हितके लिये उत्सुक हुए । खासकर अङ्गरेजोंकी प्रधान छावनी फीरोजपुर ऐसेही सरदारोंसे वेष्टित था । इन दुष्मनोंके कारण वहांकी सेनाके लिये रसद मुहय्या करनेमें बड़ी कठिनाई होने लगी । इससे विशेषकर फ़ीरोज-पुरकी दशा बड़ी भयदायी होगई ।

केवल फीरोजपुर ही क्यों, पञ्जाब सीमाके प्रायः हरेक स्थानमें अङ्गरेजोंकी दशा आशङ्काजनक होगई थी। बाद-वालके जागीरदार अजीत सिंहको अङ्गरेजोंने मार भगाया था। सरहदमें अङ्गरेजोंका शक्तिकी खराबी देखकर अजीतने तुरन्त लुधियानेमें अङ्गरेजोंके खेमे जलाकर सिखोंकी सहायतासे बादवालको छीन लिया तथा हर तरहसे अङ्गरेजोंकी विरुद्धता आरम्भ कर दी। जिस गढ़ मुक्तेश्वरसे गुरु गोविन्द सिंहने मुगलोंकी सेनाको हरा दिया था, उसके कुछ दिन पहिले अङ्ग-रेजोंके अधीन होने पर भी अब उसके फाटक अङ्गरेजोंके लिये बन्द होगये। धरमकोटके छोटे छोटे दुर्ग तथा बहुतसे और भी किले अङ्गरेजोंके विरुद्ध बनकर शत्रुता साधने लगे। रसद आदि संग्रह करनेमें तो बड़ी बाधा इनसे होने ही लगी; फिर अङ्गरेजोंकी सहायताके लिये पहुंचनेवाली सेनाओंको भी यथा-शक्ति रोकनेसे ये दुर्गवाले लोग बाज न आये। इन्हीं दिनों बहुत तोप, बारूद तथा रुपये लेकर कुछ अङ्गरेजी सेना फीरोजपुर जा रही थी। इस पर भी उक्त विरोधियोंका आक्रमण न होने पावे, इस अभिप्रायसे सन् १८४६ ई॰की १७ वीं जनवरीको सर हैरी-स्मिथ साहब एक ब्रिगेट सेनाके साथ धरमकोटकी ओर भेजे गये, कि जिससे इनके साथ लड़ाई-भिड़ाईमें फंसे रहकर यह विरोधी लोग उक्त रसद आदि लानेवाली सेनापर हमला न कर पावें। देखते ही देखते धरमकोट हैरी साहबके हाथ लगा; और उक्त सेनाके विना विपद फीरोजपुर पहुंचनेको समर्थ होनेकी आशा भी अङ्गरेजोंको होने लगी। पर जल्द ही हैरी स्मिथ साहबको धरमकोट छोड़कर लुधियानेकी तरफ सेनासहित जानेका प्रयोजन हुआ। रणजोर सिंहके अधीन सिख सेना सतलज

पारवार लुधियानेपर हमला करनेकी फिक्रमें थी। स्मिथ साहबने झटपट धरमकोटसे प्रायः ६ कोस दूर चलकर जगरांव स्थानमें डेरा डाला। साहबको मालूम हुआ, कि रणजोर सिंह सेनासहित लुधियानेके ठीक पश्चिममें उपस्थित हुआ है और जगरांवसे ८ कोस पर बादवाल नामक स्थानमें भी सिख सेना भेजी गई है।

रात दुपहरको लुधियानेकी रक्षाके लिये अङ्गरेजी सेना चली। इसका अभिप्राय इस समय बादवालमें स्थित सिखोंकी करीब १० हजार लड़ाकोंकी बड़ी सेनासे न लड़कर लुधियानेकी सेनाको अपनी ४ रिजमण्ट पैदल, ३ रिजमण्ट घुड़सवार, १८ तोप और साथ जानेवाली बहुतसी रसद आदिसे पुष्ट करनेका था। इस लिये स्मिथ साहब रसद आदिको अपनी सेनाके दाहिने रखकर इस हिसावसे चले, कि जिससे बादवालस्थित सिखसेना उनकी सेनासे प्रायः डेढ़ कोस दाहिने रह जावे और अनुमान करने लगे, कि यों चलनेसे यदि सिख लोग मेरी सेनापर हमला भी करें तो अन्ततः रसद आदि बिना छेड़ छाड़ लुधियाने पहुंच जायगी। पर अनुमान ठीक न हुआ। बादवालके पाससे गुजरनेसे कुछ पहिले ही सिखोंने साहबकी सेना देख ली। बस गोली दनादन चलने लगी। केवल बालूके बड़े बड़े टीले मिल जानेसे साहब उसकी आड़से गोले दागकर कुछ देर सिखोंकी गति रोकनेको समर्थ हुए। अङ्गरेजोंने अब अनुमान किया, कि हम पैदलों द्वारा सिखोंको लड़ाईमें आबद्ध रखकर सवारोंके सहारे रसद आदिको लुधियाने भेज दें; आगे खबर पाकर लुधियानेकी अङ्गरेजी सेना आके इन पैदलोंकी सिखोंसे रक्षा कर सकेगी। पर काम इस अनुमानके अनुसार भी न

हो सका। इसके अनुसार काम करनेसे पहिलेही अङ्गरेजी सेनाने घबराकर देखा, कि सिख लोगोंने चुपके उसकी बांई ओरसे चलकर टीलोंके पीछे अङ्गरेजी सेनाकी पीठपर तोपें लगाई हैं। तोपोंकी गगन-विदारी आवाजसे उनके कान फटने लगे; आत्मरक्षाके अर्थ तोपोंकी तरफ मुह करते करते उस विषम अग्निवृष्टिसे सैकड़ों अङ्गरेज वहीं जल गये। लड़ाई ६ घण्टे हुई। अङ्गरेजोंसे अब आत्मरक्षा करना असह्य हो गया; तमाम रसद, तोप, गोली आदि छोड़कर लुधियानेकी तरफ भागने लगे। इतिहासवाले कहते हैं, कि रणजोर सिंह भी विश्वासघातसे निष्कलङ्क न था। सेनाके युद्धमें फंस जाने पर ही वह युद्धक्षेत्रसे अलग हुआ था। नहीं तो भागती हुई अङ्गरेजी सेनाका पीछा करनेकी आज्ञा देनेवाला होनेसे उनका पीछा कर सिख लोग सहजहीमें सर्व्वनाश कर सकते। पर आज्ञा विना अङ्गरेजोंकी पीछे छोड़ी हुई वस्तुओंकी लूटमें ही सिख सेना फंस गई। अङ्गरेजोंके साथके तमाम अस्त्रशस्त्र, तोप गोली, बारूद रसद आदि सिखोंके हाथ लगीं। रणजोर सिंहकी स्वजातीय सेनाकी पराजय-कामनाके कारण अङ्गरेज लोग और भी एक अति घोर हानिसे बच गये। अब तक सब तरह लुटे जानेपर भी अङ्गरेज लोग पूर्व्वोक्त आती हुई तोप तथा गोली बारूद आदिके सहारे अन्तमें सारी बेइज्जतियोंका बदला लेनेकी आशा लगाये पड़े थे; वे थोड़ेसे रक्षकोंसे रक्षित होकर आरही थीं। कुछ सेनाको दिल्लीकी तरफ कुछ दूर बढ़ा लेजानेसे उन सब सामानोंके विना बाधा सिखोंके हाथ लग जानेमें जरा भी सन्देह न था। इनके आनेका समाचार रणजोरको मिला; अधीन सेनाने

आगे चलनेके लिये बड़ी इच्छा भी प्रकट की। पर रणजोरने उन्हें सतलजके तटपर सुला रखनेके सिवा और कुछ न कर अङ्गरेजोंका हित साधन किया।

बादवालके युद्धके बाद सिखसेना २२ वीं जनवरीकी रातको एकायक वहांसे चलकर लुधियानेके नीचे साढ़े १७ कोस दूरीपर पधारी। इसका कारण ठीक ठीक मालूम नहीं होता; कोई कोई कहते हैं, कि अङ्गरेजोंके फायदेके लिये रणजोरने ऐसी सलाह दी थी और दूसरे कहते हैं, कि लुधियानेकी अङ्गरेजी सेनासे सर हैरी स्मिथकी सेनाके मिलनेपर सिखोंने अङ्गरेजोंकी संख्या अधिक विचारकर आत्मरक्षाके हेतु वहांसे चला जाना ही अच्छा विचारा था। जो हो, उनकी छोड़ी जमीनको दखलकर लेनेमें स्मिथ साहबने विलम्ब न किया; आगे वहीं सेना बढ़ाकर ग्यारह हजार सेनाके साथ सिखोंपर धावा करनेको चले। रणजोरकी सेना यह समाचार पाकर बुन्द्री और अलीवाल गांवोंको दखलकर अङ्गरेजोंकी अपेक्षा करने लगी। यहां यह कह देना उचित है, कि अलीवालमें रणजोरके साथ पूर्व्वकी पूरी सेना न थी। उसकी अधिक संख्या कई स्थानोंमें वहां वालोंको पुष्ट करनेके लिये छोड़ देना पड़ी थी। यहां भी यद्यपि सेनाकी संख्या आनेवाले गोरोंके मुकाबिलेमें कम न थी, पर वह सब सिख न थी। रणके नियमोंसे अज्ञ अधिकांश पहाड़ी गंवारोंसे ही वह गठित हुई थी। वे लोग कुछ देर लड़ाईकी कठोरता देखकर अपने सेनापति रणजोर सिंहके साथ रफू चक्कर हुए। केवल थोड़ेसे शेष सिख-गोलन्दाज रणक्षेत्रमें स्थिर रहकर शत्रुओंका संहार करने लगे। यह असमान युद्ध कबतक चले? पर बहादुर सिख-गोलन्दाजों-

मेंसे जबतक एक आदमी भी जीवित था तबतक लड़ाई चलती रही। इस एक आदमी पर जब अङ्गरेज लोग आ पड़े, तब उसने अपनी तोपसे लिपटकर कहा,"जान रहते तोप न दूंगा।" उसकी बात ही ठीक रही। तोपको ले लेनेके लिये अङ्गरेजोंको उसे काट डालना पड़ा। इस लड़ाईको जीतकर स्मिथ साहब अपने साथियों समेत पूर्व्व अपमानको भूलनेमें समर्थ तो हुए; पर खेतमें सिखोंकी लाशोंसे अङ्गरेजोंकी लाशें अनेक अधिक पाई गईं। इस युद्धके विषयमें इतनी बात और प्रसिद्ध है, कि पटर नामक एक अङ्गरेज गोलन्दाज अङ्गरेजी सेनासे भागकर सिख सेनामें भरती हुआ था। बादवाल युद्धके बाद उसने अङ्गरेजी खेमेमें आकर स्वजातियोंकी नौकरी फिर पानेकी प्रार्थना की थी। पर उससे कहा गया था, कि तू विदेशियोंमें रह करके ही स्वदेशियोंका हित कर। अलीवाल युद्धके बाद उसने अङ्ग-रेजोंके खेमेमें आकर कहा, कि मैंने तोपें इतनी ऊंचाई पर लगाई थीं, कि गोले अङ्गरेजोंपर न गिरें। तहकीक़ात करने पर यह बात सत्य पाई गई।

इस बार प्रसिद्ध सोबरांव युद्धका हाल लिखना है। पर इस पञ्जाबका भाग्य निर्णय करनेवाली लड़ाईका ब्योरा प्रकट करनेसे पहिले और एकबार पञ्जाबकी दशा आलोचना करनी है। पाठक! देख चुके हैं, कि सिख नामके अयोग्य विश्वासघातकोंसे सिख सेना चलाई जाती थी; और यह बात भूल नहीं गये होंगे, कि पञ्जाबकी राजगद्दी पर एक युवती स्त्रीकी अधीनतामें एक निरा बालक विद्यमान था। सो इस कुटिल विश्वासघातको रोककर खालसा सेनाकी अनन्त वीरतासे पञ्जाबके लिये फ़ायदा उठानेका कोई उपाय न था। राजमाता रानी झिन्दां अवश्यही

बड़ी वीर नारी थी ; पर वह वीरता किसी विपद्में न डरने-वाले रणमत्त साहसी सिपाहीकी राजनीतिक ज्ञानवर्जित शूरता मात्र ही थी। फिर ऐसेही अवसर पर अन्तके भसमे सिखोंने और भी विषका सञ्चय कर लिया। खालसा सेना बहुत निष्ठुर जानकर जम्मू-नरेश गुलाब सिंहसे बड़ी नफरत तो रखती थी ; पर उनकी वीरता तथा राजनीतिक ज्ञान सर्व्व विदित था। सो उन्होंने गुलाब हीको और सुयोग्य पुरुषके अभावसे पञ्जाब राज्यके मुख्य मन्त्री जवाहिर सिंहकी मृत्युके बादमें खाली पड़े हुए मन्त्रीपदपर बैठनेका सुयोग्य पात्र समझा। इस लिये फिर मन्त्री बननेके लिये उनसे बहुत कुछ अनुरोध किया गया। गुलाब सिंह विलक्षण जानते थे, कि इस प्रचण्ड खालसा सेनाके बनी रहते मन्त्री बनना मेरे लिये बिलकुल कुशल नहीं है। पर अन्तमें उनको लाल सिंह, तेज सिंह, रणजोर सिंह आदिकी भांति विश्वासघातकी कुटिलता सूझी और अपने जम्मूमें पड़े रहनेसे पञ्जाब दरबारका प्रधान पद स्वीकार करना ही इस प्रचण्ड सेनाको ध्वंस करानेका सदुपाय मालूम हुआ। सो उन्होंने स्वीकार किया, कि अच्छा हम मन्त्रीका काम करेंगे ; पर केवल कुछ ही दिनके लिये—जबतक अङ्गरेजोंसे लड़ाई खतम न हो, तभी तक हम नाम भरको मन्त्री बने रहकर सब कार्य्य निबाहते रहेंगे। सिखोंके यह बात मान लेने पर यद्यपि पञ्जाबको जवाहिरके बाद मन्त्री प्राप्त हुआ, पर केवल नाम भरके लिये। सो वास्तवमें तब भी मन्त्रीका पद खाली ही रहा।

जो हो, गुलाब सिंहके दरबारमें आनेसे सिख राज्यके ध्वंस होनेकी राह और भी साफ हो गई। अबतक सेना-पतियोंके विश्वासघाती होने पर भी सिख सेनाकी अपार

वीरत्वके कारण अङ्गरेजोंको केवल अन्धकार दीखता था। यहांतक कि फिरोजशहरकी लड़ाईके बादसे अङ्गरेज़ सेनापति गफ बहादुरने अपनी पूर्व्वसञ्चित यशोराशिका फीका हो जाना एक प्रकार निश्चय कर लिया था ; लड़ाईके पूर्व्वका घमण्ड इस समय कठोर निराशा बनकर उनको सता रहा था ; लाट हार्डिञ्ज भी अङ्गरेजोंकी मर्य्यादा बनाये रखना कठिन समझने लगे थे ; दुर्ज्जय सिख वीरोंको रीत्यनुसार लड़कर परास्त करनेकी असम्भवता उनके मगजको परेशान कर रही थी ; फिरोजशहरके युद्धमें अनन्त दुर्गति तथा बादवालकी लड़ाईमें विकट पराजयने अङ्गरेजी सेनाको एक प्रकार निर्वीर्य्य बना दिया था। ऐसेही अवसरमें यदि गुलाब सिंहकी भांति अपार सेना-शाली तथा श्रेष्ठ युद्धकौशली पुरुष सिख सेनाका हौसिला बढ़ाता, तो अङ्गरेजोंकी बड़ी अपमानसूचक पराजयके उपरान्त अङ्गरेजी राज्यका बहुत कुछ हिस्सा सिखराज्यके शामिल हो जाना सर्व्वथा सम्भव था। औरोंकी बात जाने दीजिये, सिन्धविजयी नेपियर साहबने अपनी किताबमें लिखा है, "गुलाब सिंह यदि अङ्ग-रेजोंसे विरुद्धता करता, तो इधर उधर पड़ी हुई सम्पूर्ण अङ्ग-रेजी सेना सिखोंकी तलवारके घाट पार हो जाती।" पर नहीं, गुलाब सिंहसे भी विश्वासघाती सिखसेनापतियोंका विश्वासघात पुष्ट होने लगा। मन्त्रीके पदसे गुलाब सिंह, स्वजातीय सेनाके नाशका प्रबन्ध करने लगे ; सेनापति लोग रणक्षेत्रमें अपनी सेनाको कटवानेकी फिक्रमें हुए। गुलाब सिंहने निराश लाट हार्डिञ्जसे सिखराज्यकी स्वाधीनता न बिगाड़नेका करार हासिलकर निम्न लिखित गुप्त प्रतिज्ञा द्वारा अङ्गरेजोंको उत्साहित किया—"अङ्ग-रेज जब सिखसेनापर हमला करें, तब सिख सेनापति लोग उनसे

अलग होजाया करे। और इस रीतिसे सिखोंके हारनेपर लाहौर दरबार सेनाओंको निकाल बाहर करे। सतलज पार करने और राजधानीमें घुसनेकी राहमें अङ्गरेजोंको कोई बाधा न सहना पड़े।" गुलाब सिंहने यह प्रतिज्ञा की; और सिख सेनापतियोंने उसे अक्षर अक्षर पूरा किया;—यहांतक कि श्यामजोर सिंहके उपरान्त लाल सिंह, तेज सिंह आदि सेनापतियोंके भी प्रचण्ड सिखसेना लेकर दूसरी बार सतलज पार करनेपर भी किसीने उस समय तोप बारूद आदि लड़नेके सामानोंके बिना सब तरह दुर्बल अङ्गरेजी सेनापर हमला न किया और अङ्गरेजोंके लिये अरक्षितभावसे दिल्ली होकर आती हुई रसद गोली आदि न छीन कर शत्रुओंको विलक्षण बली होने दिया। ऐसे ही अवसरपर सोबरांवका भीषण युद्ध उपस्थित हुआ।

चौथा अध्याय।

—•○•—

सोबरांव युद्ध और पञ्जाबका परिणाम।

व्यभिचारिणी स्त्री पतिप्रेम प्रगट करनेमें पतिव्रतासे भी बढ़ चढ़ जाती है। ठगोंकी सरलता सज्जनोंसे भी अधिक प्रकाश होती हैं। उन दिनों गुलाब सिंह, लाल सिंह, तेज सिंह आदिकी भांति और कोई परम मित्र खालसा सेनाको प्रगट न होता था। सेनासे सद्व्यवहार दिखानेमें वे सिखोंके आराध्य देवतारूपी रंजीत सिंहसे भी बीस ही निकलते थे। अलीवाल युद्धके बाद गुलाब सिंहने सिखोंकी निन्दा तो की; पर ऐसी चालाकीसे, कि सिखोंने उसे हितैषीका सदुपदेश माना। सो हरघड़ी शत्रुओंसे चालित होने पर तथा बात बातमें मित्रवेश-धारियोंकी कलई खुलते रहने पर भी सिख-सेना उनको मित्रके अतिरिक्त और कुछ नहीं समझ सकती थी। इसी हेतु इन विश्वासघातकोंको स्वजातियोंकी और भी हानि करनेका सुन्दर अवसर प्राप्त हुआ था। सिख-सेना इनके विश्वासघातको चाहे न समझ पावे, पर अलीवाल युद्धकी हार देखकर उनका हृदय किसी कदर छोटा होगया था। सतलजके किनारेसे युद्धमें कटे सिख वीरोंकी रक्तरञ्जित लाशोंको धारामें बहते देखना उनको असह्य होरहा था। फिर पहिले, हारके संपूर्ण लक्षण दिखाये हुए अङ्गरेजोंके खेमोंसे अब अटल प्रतिज्ञाकी सिंहगर्ज्जन सुनाई देने लगी थी। एक तो अलीवाल युद्धमें विजय पानेके आनन्दसे अङ्गरेज फूले अङ्ग न समाते थे। तिस पर दिल्लीकी राहसे गोली बारूद रसद सामान

आदिके पहुंच जानेसे अब वे विश्वासघातियोंसे चालित सिख-सेनासे लड़नेको बड़े उत्साहित हो पड़े थे। पर सिखोंकी इस निराशाके अवसर पर उत्साह बढ़ानेके लिये एक महाप्राणका आविर्भाव हुआ। वह सिखोंके परम मित्र, सच्चे सिख तथा रणजीत सिंहके बचपनके साथी और वीरकेशरी नौनिहाल सिंहके ससुर अटारीके सरदार श्याम सिंह थे। वृद्धावस्था प्राप्त होनेपर भी यौवनकासा उत्साह तथा अटल प्रतिज्ञा प्रगटकर उन्होंने कहा, "आओ सिखो! मातृ-भूमिकी मङ्गल कामनासे शत्रुके साथ लड़कर मैं भी तुम्हारे सङ्ग रणस्थलमें मरकर स्वर्गको सिधारूंगा। हृदयका रक्त देकर गुरु गोविन्द सिंहकी आत्माको प्रसन्न करूंगा और खाल-साका गौरव बढ़ाऊंगा।" इनके उत्तेजक आह्वानने सिखोंके हृदयमें फिर सिखोचित वीर्य्याग्नि बाल दी।

सिखोंने अङ्गरेजोंके साथ फिर विकट युद्ध लड़नेको सोवरांव नामक स्थान दखलकर लिया। उसे खन्दक और दीवारोंसे पुष्ट-कर ६७ तोपें वहां लगाईं। दृढ़ सङ्कल्पके साथ १५ हजार सिख वहां अङ्गरेजोंकी प्रतीक्षा करने लगे। अङ्गरेजोंको जल्द ही यह खबर मिल गई! सिर्फ सिखोंके सोवरांवमें पधारनेकी खबर ही क्यों, पर उक्त स्थान तथा सेनाकी दशाका सुन्दर चित्रकी भांति वर्णन पाकर अङ्गरेजोंका आनन्द दूना होगया। शत्रुसेनाका ऐसा सच्चा वृत्तान्त अङ्गरेजोंको कहांसे मिल गया? हाय! जिसे अपनी जन्मभूमिका रक्षक तथा स्वजातियोंका उद्धारकर्त्ता विचारकर सिखोंने अङ्गरेजोंकी भांति अति बलशाली भारत-विजयियोंसे लड़नेकी हिम्मत की थी, यह काम उसी कलङ्की लाल सिंहका था। लाल सिंहने अङ्गरेजोंको लिख भेजा,

"इस युद्धका सेनापति तेज सिंह बना है। पर इससे कुछ हानि न मानिये। तेज सिंह अपनी प्रतिज्ञामें पक्का बना हुआ है। वह यथाशक्ति अङ्गरेजोंको फायदा पहुंचानेकी चेष्टा करेगा। मैंने घुड़सवार सेनाका भार लेकर उसे इधर उधर तितर बितर कर रखा है। इसके उपरान्त सिख छावनीका दक्षिण भाग बड़ा दुर्ब्बल है और उधरकी दीवार भी बड़ी कम मजबूत बनाई गई है।" एडवार्ड साहबकी तवारीखसे मालूम होता है, कि लाल सिंहके अङ्गरेजी खेमेमें इस प्रकार समाचार देनेका हाल पञ्जाब-युद्धमें-लड़नेवाले अङ्गरेजोंके एक अफसरसे प्रकाशित हुआ था। उक्त इतिहाससे और भी विदित होता है, कि इस समाचारके पानेसे अङ्गरेजोंको बड़ा लाभ हुआ। अङ्गरेजोंने उसी दुर्ब्बल दाहिने भागपर सबसे पहिले आक्रमण करना निश्चय किया; यह आक्रमणकारी सर राबर्ट डिक साहब बनाये गये। पर इस आक्रमणके अवसर पर कहीं सिख लोग एकायक इधर आकर अपनी दुर्ब्बलताको दूर न कर पावें इस अभिप्रायसे ठीक उसी समय सिख-सेनाके दूसरे भागोंपर भी १२० तोपोंकी सर्व्वग्रासी अग्नि जारी रखनेका विचार किया गया। इसके अतिरिक्त सर वाल्टर गिलबर्ट अपनी सेनासहित डिक साहबकी सेनाके दायें भागकी रक्षामें नियुक्त हुए और हैरी स्मिथ बहादुर सेनासमेत गिलबर्टके दाहिने भागमें रखे गये। इस प्रकार तीन भागोंमें बंटकर प्रायः १६ हजार राजपूत, गोरखे और गोरे मिश्रित अङ्गरेजी सेना सिखोंसे लड़नेको तय्यार की गई। इसके उपरान्त लाल सिंहकी कार्रवाइयोंपर अच्छी निगाह रखनेके लिये अङ्गरेजोंने और भी बहुतसी घुड़सवार सेना इधर उधर रखवा दी। अङ्गरेज भलीभांति जानते थे,

कि जो दुराचारी आत्मा-समान प्रिय स्वजातियोंसे विश्वासघात कर अपनी अति प्यारी अनमोल स्वाधीनताको निर्म्मूल करनेको उद्यत हो सकता है, उसके लिये किसी कारणसे चिढ़कर अङ्ग-रेजोंके विरुद्ध खड़ा हो जाना कुछ आश्चर्य न था। इस लिये अङ्गरेजोंकी भांति चौकस जाति कब सावधान होनेसे चूक सकती थी?

विजयको और भी निश्चय करनेके लिये हठात् प्रयोजनके अवसरमें अन्धकार न देखनेका प्रवन्ध भी किया गया। फीरोज-पुरके पास दो पल्टनें तय्यार रखी गईं। अङ्गरेज लोग सिखोंसे कई वार सम्मुख युद्धमें फंसकर उनके वल वीर्य्य तथा तीव्र रण-कौशलको भलीभांति आजमा चुके थे। इस लिये दूधके मुह-जलेके मांठा फूंकनेकी भांति उन्होंने चुपके विना शोर गुल एकायक आक्रमण करनेका प्रवन्ध किया। सन् १८४६ ई०की ९वीं फरवरी तारीखकी रातको चुपके अङ्गरेजी सेना सजधज कर तय्यार हुई। उस काली निशाकी सनसनाहटमें चुपके अङ्गरेज अफसरोंने युद्धयात्राकी आज्ञा दी। अङ्गरेजी सेना विना आवाज शत्रुओंपर चढ़ चली। मानों भगवानको इनकी यह गुप्त चाल और भी गुप्त रखना मञ्जूर था। स्याह रात्रि घोर कुहरासे और भी स्याह बन गई। इस रात्रि तथा कुहराकी आड़में अदृश्य रहकर अङ्गरेजी सेनाने लड़ाईके लिये सम्पूर्ण अप्रस्तुत सिख-सेनापर आक्रमण किया। पर सदाके फुर्त्ती-वाज सिख भीत न होकर रणवाद्यके साथ झटपट तय्यार होने लगे। जगतसाक्षी सूर्य्य भी पूर्व्व दिशाको रञ्जित कर सोव-रांवमें सिख अङ्गरेजोंके इस महायुद्धको देखनेकी लालसासे उगने लगे।

ठीक साढ़े छः बजे अङ्गरेजोंकी सैकड़ों तोपें एक बार ही अपनी विराट ध्वनिसे दशो दिशा गुंजाकर सिखोंपर गोले गिराने लगीं। उससे सिखोंकी अस्त्रभरी गाड़ियां चूरचूर होकर इधर उधर फैलने लगीं। कभी कभी सिखोंकी बालूसे बनाई दीवार टूटफूटकर आकाशमें उड़ने लगी और फिर सिखोंपर गिरकर बड़े बड़े वीरोंको भी कातर करने लगी। कभी अस्त्रों सहित निक्षिप्त गोले फटकर सिखोंपर अग्निसम ज्वालामय अस्त्रोंकी वर्षा करने लगे। पर धन्य सिख! इतनेपर भी तुम्हारा धीरज नहीं टूटा! जिस जातिमें ऐसे वीर उत्पन्न होते हैं, वह जाति भी धन्य है! खालसा सेना अङ्गरेजोंके हरेक आक्रमणोंका उत्तर अपनी स्वाभाविक फुर्त्तीसे देकर हरघड़ी अङ्गरेजी सेनामें विषम हाहाकार मचाने लगी। यदि कभी तुल्य युद्धके साथ किसी जातिने अङ्गरेजोंके वीर हृदयको मोहित किया हो, तो वह सिख जाति ही थी। और अङ्गरेजोंको भारतमें इतने युद्ध लड़ने पड़े हैं, पर अन्यत्र कहीं भी सोबरांवकी भांति दुर्ज्जय वीरोंकी भीषण समरलीला देखकर अङ्गरेजोंको भीत चकित न होना पड़ा था। दोनों ओरकी सेनाओंसे गोलोंकी अविराम वृष्टि हरघड़ी अस्त्रोंकी श्रवणविदारी निनाद, तथा सेनाओंकी सिंह-गर्ज्जन सोवरांवकी भांति किसी युद्धकी करालता नहीं बढ़ा सकी थी। इस लिये सोबरांव युद्ध अन्य राजनीतिक रहस्योंको छोड़ देने पर भी केवल भीषणताके लिये भी भारत-इतिहासमें अति प्रसिद्ध है।

दिनकी वृद्धिके साथ साथ युद्धकी कठोरता क्रमशः बढ़ने लगी। अङ्गरेजोंने पहिले सिखोंको युद्धके लिये अप्रस्तुत देखकर पूर्व्वकल्पित प्रबन्ध त्यागकरके उनपर एकायक गोला चलाना ही

तात्कालिक सुविधा अनुभव किया था। पर पीछे स्वयं ही देखने लगे, कि गोला चलाकर इन अटल सिखोंको हटा न सकेंगे। ऐसे ही अवसरपर लाल सिंहकी कार्य्यावली निरीक्षण करनेवाले दूतोंकी जवानी सिख-सेनाके दक्षिण विभागके दुर्ब्बल रहनेकी सत्यता मालूम हुई। बस पूर्व्वप्रबन्धके अनुसार अङ्गरेजी सेनाके बांये भागसे सर रावर्ट डिक बहादुर अपनी सेना सिख-सेनाके उसी दक्षिण भागपर चढ़ा ले जाने लगे। सिखोंको अङ्गरेजोंकी यह चाल देखते ही अपने उस प्रान्तकी दुर्ब्बलता मालूम होगई। बस बिना घबड़ाये, उधर अनेक सिख दौड़े। देखते देखते उस प्रान्तकी इतनी मजबूती होगई, कि आक्रमण करनेसे पहिले उधरकी चढ़ाईसे अङ्गरेज लोग खदेड़े गये। उनके सेनापति डिक बहादुर सख्त जखमी हुए। इस सेनाकी दुर्गति होते ही डिककी सहायताके लिये स्थित गिलवर्टकी सेना तुरन्त आकर सिखोंपर टूटी। डिककी भागती सेना भी ऐसी सहायता पाकर भागनेके बदले गिलवर्टकी सेनासे मिल गई। सो यह मिलित आक्रमण अति भीषण हुआ। पर सिख ही इसे सह्य करनेको समर्थ थे। सिखोंने तोपोंकी ऐसी प्रबल वर्षा की, कि उससे केवल सिखोंकी ही रक्षा न हुई, बल्कि वह मिलित अङ्गरेजी सेना घोर हानि सह्यकर पीठ दिखानेको लाचार हुई। इस रीतिपर अङ्गरेजोंने तीन बार आक्रमण किया और तीनों ही बार योंही भगा दिये गये। प्रतिबार ही अङ्गरेजोंकी अगणित सेना मर कर रणस्थलको भयानक बना रही थी, और प्रतिबार ही उन मरे हुओंके स्थानपर नये जवान लाकर नवीन उद्यमके साथ हमला किया जाता था; पर देरसे लड़ते हुए वही पुराने सिख अपने स्थानमें अटल रहकर

प्रतिवार ही इनको भगा देते जाते थे। तीसरी वार भागने पर अङ्गरेजी सेना सिखोंसे पछियाई गई। लड़ते समय तो अङ्गरेजोंके अगणित वीर खेतमें बिछ ही गये थे ; भागते समय भी सिखोंकी तेज तलवारसे कम न मरे। हैरी स्मिथकी सेनाके गिलवर्टकी दाहिनी ओर रहनेका प्रवन्ध था। पर बड़ी भारी गड़बड़में हैरी स्मिथ वहांसे कुछ हट पड़े थे। वहींसे उन्होंने सिखोंपर आक्रमण किया। पर सिखोंका एक वाल भी हिलानेमें असमर्थ होकर बड़ी हानिके साथ भगाये गये।

अङ्गरेज योंही प्रथम आक्रमणमें पूर्ण रूपसे पराजित होगये। पर अङ्गरेज लोग गीदड़ोंकी तरह भागनेके वास्ते हिन्दुस्थानमें नहीं आये हैं, जिस महाशक्तिकी महिमासे सूर्य्यदेव इनके राज्यसे कभी अस्त नहीं हो सकते, किसी न किसी भागपर जरूर ही उनको किरण देना पड़ती है ; जिस आन्तरिक वलकी महिमासे उन दिनों हमारी अपार धनरत्नकी खानि, अनुपम शोभा सौन्दर्य्यशालिनी भारत-भूमिका प्रधान भाग उनके हाथ लग-गया था, उसी शक्तिकी महिमासे भागते हुए अङ्गरेजोंको चैतन्य हुआ। वे फिर एकत्रित होने लगे। वल सञ्चय कर पुनः आक्रमणके लिये उद्यत हुए। उधर सिख-सेनाकी अवस्था देखिये। उसको अपने मध्य और वांये भागोंकी रक्षाके लिये दुर्व्वल दक्षिण विभागको फिर दुर्व्वलकर सेना लाना पड़ी। विश्वासघातक लाल सिंह इस समय सेना सहित खड़े रहकर तमाशा देख-रहा था, अधीन सेनाने उसे दाहिने भागकी दुर्व्वलता कितनी ही वार सूचित की ; पर जिसे सिख सेनाको कटवाना ही अभीष्ट है, वह उस बात पर क्यों ध्यान देता ? वह दुर्व्वल दायां भाग एक प्रकार अरक्षित ही रह गया। पहिलेकी

हारी हुई डिक-चालित सेनाको अपना पूर्व्व अपमान मेटनेका अच्छा अवसर मिल गया; उसने अनायास ही उस स्थानको दखल कर लिया और मध्य भागपर आक्रमण करती हुई गिल-वर्ट-चालित सेनाको बड़ी सहायता पहुंचाई। गिलवर्टकी सेना पूर्व्व अपमानको स्मरणकर वज्रवेगसे सिखोंपर चढ़ गई। यह वीरोंका लज्जा अपमान क्रोधमिश्रित घोर आक्रमण सिख-सिंहोंको भी असह्य हुआ सिखोंके सम्मुखस्थित कई तोपें अङ्गरेजोंने छीन लीं। ऐसे ही अवसरमें हेरी स्मिथकी सेनाने गिलवर्टके साथ साथ सिखोंपर हमला किया। शत्रुओंके आक्रमणकी कठो-रता देख सिख लोग बड़े क्रोधके साथ उनपर लपके; अगणित अङ्गरेज केलोंकी भांति कट गये। आगेकी सेना पीछेवालोंपर गिरने लगी; पर तौभी विचलित न होकर गिलवर्टकी सेनाने डिककी सेनाके सहारे किचकिचा कर फिर आक्रमण किया। दृश्य अपूर्व्व हुआ—कभी अङ्गरेजी सेना सिखोंको भगाकर आगे बढ़ने लगी; कभी सिख लोग उनको काटते कूटते भगाते उनपर धावा करने लगे। योंही होते होते एकवार अङ्गरेज लोग बहुत आगे बढ़ गये; बस अनेक सहस्र घुड़सवार और पैदल इस आगे बढ़ी हुई सेनाकी सहायतामें आ पहुंची; उसी समय एक सौ बीस तोपोंसे अङ्गरेज सेनापति गोलोंके ओले बरसाने लगे। सो सिखोंसे अब इन बलदर्पित सेनाओंको पीछे हटा ले जाना बन नहीं पड़ा। बस अङ्गरेज सिंहविक्रमसे बालूकी दीवार भेदकर चारों ओरसे सिखोंपर टूट पड़े।

यही अवसर सेनापतियोंके रणकौशल दिखानेका सुअवसर था। पर अभागी सिख-सेनाके सेनापति विश्वासघातक थे। विश्वासघातकोंने गोलन्दाजोंको बारूद देना बन्द कर दिया।

जो तोप कुछ पहिले भीषण अग्निवृष्टि कर रही थी, उनका हगना बन्द होगया। केवल इतना ही अत्याचार करके दुराचारी स्वजातिद्रोही तेज सिंह निश्चिन्त न हुआ बड़ी सेना लेकर भाग गया और शेष सेनाके भागकर बल सञ्चय करने तथा फिर शत्रुओंपर हमला करनेका उपाय ही रोक दिया। उसने सोबरांवकी सिखसेना और सिख-राज्य इन दोनोंके मध्यस्थित सतलज परके पुलको भी तोड़ दिया। अब सिख-सेनाके लिये लड़ने और लड़कर जन्मभूमिके मङ्गल हेतु प्राण देनेके सिवा उपाय ही क्या था? पर लड़े कैसे? आज्ञा देनेको सेनापति नहीं है, गोली बारूदके विना तोप बन्दूकें बन्द होगई हैं। सिखोंने अब अपनी चिर-प्रसिद्ध तलवारकी शरण ली और अटारीके भीमविक्रमी बूढ़े सरदार श्याम सिंहकी उत्तेजनासे मदमत्त हस्तियोंकी भांति अङ्गरेजी सेनाको आक्रमण किया। पर वह आक्रमण कबतक कार्य्यकारी हो? अङ्गरेजी तोपोंने मानो इस समय और भी भयानक गर्जन करना आरम्भ कर दिया था, तलवार उस अग्निवृष्टिके सम्मुख कबतक ठहर सकती थी? अगणित अङ्गरेजोंके कटनेपर भी सोबरांवके विकट युद्धमें विजयलक्ष्मीने अङ्गरेजोंकी ही शरण ली। महात्मा श्याम सिंह अङ्गरेज और सिख वीरोंकी लाशोंके पहाड़पर अन्तिम निद्राके वशमें होगये। पञ्जाबका वीर गर्व्व इस महावीरके साथ साथ महाकालके महोदरमें समा गया।

सिखसेना अङ्गरेजोंकी तरफ मुख करके लड़ती हुई, सतलजतक पहुंची। पर विश्वासघातक सेनापतिने पुल तोड़कर उनका और पीछे हटना असम्भव कर दिया था। उस समय सतलज लबालब थी। शत्रुओंकी गोली सह्य करती हुई तैरकर

उसे पार करना और रक्तकी नदीमें बहना एक ही बात थी। सो शेष सेनाने लड़कर प्राण देनेका सङ्कल्प किया। दलके दल वीर-सिंह शत्रुओंकी गोलीके सामने तलवारसे यथाशक्ति लड़कर गिरने लगे ; पर अङ्गरेजोंको देखकर चकित होना पड़ा, कि गुरु गोविन्द सिंहके शिष्योंमेंसे एकने भी शत्रुसे जीवन-भिक्षा न की। उस सम्पूर्ण वीरमण्डलीके रक्तसे सतलजको लालकर अङ्गरेजोंका क्रोधविद्वेष कथञ्चित शान्त हुआ। पानीपतकी महाहत्याके बाद भारतमें फिर कभी ऐसी हत्यालीला देखनेमें नहीं आई थी। प्राय: ८ हजार सिख उस दिन मातृभूमिके लिये लड़कर अक्षय स्वर्गलोकको पधारे। अङ्गरेजी सेना २ हजार ४८३ आदमियोंका विसर्ज्जनकर चिरस्मरणीय सोवरांवयुद्धमें विजयी हुई। वही विजय पञ्जाबविजयकी बुनियाद हुई।

इस विजयके बाद अङ्गरेज निश्चिन्त न हुए। कुछ काल सुस्तानेके बाद रातिको कुछ सेना सतलज पार कराई गई। शेष सेनासमेत दूसरे दिन लाट हार्डिञ्ज बहादुर * भी उनके पीछे चले। तीन दिनमें कसूर पहुंचकर सन् १८४६ ई०की २०वीं फरवरीके दिन शाही इश्तिहारके जरिये प्रकाश किया, "जब-तक सिख लोग सन्धि बिगाड़नेकी सजा न लगे तबतक, सिख राज्यको अङ्गरेजी राज्यके शामिल कर लेनेका इरादा न रहने पर भी, पञ्जाब अङ्गरेजी सेनाके हाथमें रहेगा। युद्धका खर्च वसूल करने तथा भविष्यत्का अनर्थ दूर करनेके अर्थ लाहौर राज्यके कई एक प्रदेश अङ्गरेजी शासनके अधीन बनाये जायंगे।

---

* इस सोवरांव-विजयके सम्मानमें गवर्नर जनरल सर हेनरी हार्डिञ्ज और प्रधान सेनापति सर ह्यू गफको विलायती गवर्नमेण्टसे लार्डकी उपाधि मिली।

यद्यपि दरबारको अपने अपराधकी पूरी सजा ही मिलना उचित है, तौभी लाट साहब दरबार और सरदारोंको राज्यके संस्कारका मौका देना चाहते हैं। दरबार और सरदारोंकी सहायतासे अङ्गरेजोंके परम मित्र महाराज रणजीत सिंहके पुत्रकी अधीनतामें नवीन निर्दोष सिख राज्य स्थापित करना ही उनको अभीष्ट है। पर यदि सिख जातिको कुराज्यसे बचानेका यह नवीन उपाय मञ्जूर न हो और फिर अङ्गरेजोंके लड़ाईकी तय्यारी की जावे तो जिस रीतिपर पञ्जाबका शासन करनेसे अङ्गरेजोंको मङ्गल होगा, लाट साहब वैसा ही करेंगे।"

पञ्जाबवासी अङ्गरेजोंका यह विज्ञापन देखकर चकित होगये। उन्होंने एक लहमेके लिये भी न सोचा था, कि सोब-रांवमें विजयलाभ करके ही अङ्गरेजी सेना पञ्जाबमें घुस जायगी। लाहौरके निवासी लाट साहबके सेना सहित पञ्जाबकी राजधानीमें जानेकी तय्यारी करनेकी खबरसे बेतरह घबराये। जिन लोगोंको पहिले विश्वासघात करते सङ्कोच न हुआ था, वे भी अङ्गरेजोंका उक्त धमकीका विज्ञापन देखकर और लाहौर-गमनकी कामना सुनकर पछताने लगे। गुलाब सिंह रोते झीखते कसूरमें आये। पर लाट साहबने उनकी एक न सुनी; तब गुलाब सिंहने सोचा, कि यदि बालक दलीप सिंहको अङ्गरेजी खेमेमें हाजिर कराया जावे, तो अङ्गरेजी सेनाका राजधानी तक न जाना भी असम्भव नहीं है। तब तक अङ्गरेजी सेना ललियाना तक पहुंच गई थी। वहीं दलीपके उपस्थित होनेपर लाट साहबने आदर पूर्व्वक बालकका सत्कार किया। आगे गुलाब सिंह, दीवान दीनानाथ, फकीर नूरउद्दीन आदि सरदारोंसे कहा, कि पञ्जाबको अङ्गरेजी

राज्यमें न मिलाना अब भी उनकी इच्छा है ; दलीप सिंह अपने पैतिक राज्यपर प्रतिष्ठित रहें ; पर वियास और सतलजके मध्यस्थित तमाम भूखण्ड अङ्गरेजोंको देना होगा और युद्धके व्ययके बतौर डेढ़ करोड़ रुपया देना होगा। पर यह सन्धि हम राजधानीमें सेना सहित उपस्थित होकर करेंगे। अन्यत्र नहीं। लाचार गुलाब सिंहको दलीप सिंहके साथ लाहौर लौट जाना पड़ा।

विजयी अङ्गरेज लोग सन् १८४६ ई०की २०वीं फरवरीके दिन राजधानीमें पहुंचे। उसी दिन दलीप सिंह अपनी पूर्व्व अधिकृत पैतिक राजगद्दीपर अङ्गरेजों द्वारा पुनः बैठाये गये। पुनर्व्वार बैठानेसे लोग यह बात समझने लगे, कि अबसे पञ्जाब फिर पूर्व्वका पञ्जाब न रहा। विजयी अङ्गरेजोंसे दलीप सिंहको इसकी भिक्षा प्राप्त हुई। अबसे दलीप अङ्गरेजोंके कृपामातके पात हुए। अङ्गरेज लोग जैसा रङ्ग ढङ्ग दिखाने लगे, उससे विलक्षण प्रतीत होने लगा, कि अङ्गरेजोंने बड़ी कृपासे ही पञ्जाबको ब्रटिश राज्यमें न मिलाया। अवश्य ही लाट हार्डि-ञ्जकी भांति उदार पुरुषके गवर्नर जनरल न रहनेसे इतनी कृपा प्रगट न होना ही सम्भव था। पर इस कृपाके दिखानेमें लाट साहबने बड़ी अच्छी राजनीति भी प्रगट की। तब भी अम्रत-सरकी तरफ बीस हजार सिख-सेना तय्यार थी। यदि यह सेना किसी अच्छे अफसरकी अधीनतामें आगे बढ़कर अङ्गरेजी सेनापर आक्रमण करती, तो सोबरांवकी पराजयका अपमान मेटना उनके लिये असम्भव न था। उस दशामें अच्छे सेना-पतिका पाना भी सर्व्वथा सम्भव ही था। क्योंकि जो लोग पहिले अपनी उन्नतिके अर्थ स्वजातियोंके साथ विश्वासघात करते

थे, वे भी एकायक अङ्गरेजी सेनाके राजधानी चले आनेसे अनेकानेक विपदोंका स्वप्न देखने लगे थे। सो उन्हीमेंसे अनेकानेक लोग सेनापति बनकर अङ्गरेजोंसे लड़ना अस्वीकार न करते। सम्पूर्ण देशका उस समय अङ्गरेजोंके विरुद्ध उठ खड़े होनेमें शङ्का कुछ न थी।

इन कारणोंसे लाट हार्डिञ्जका पञ्जाबको न छूर लेना केवल उदार पुरुषकी दया हीका काम न था; बल्कि राजनीति तथा अच्छी विज्ञता-मिश्रित सुबुद्धिका सुन्दर परिचय था। अब भी पञ्जाबमें लाट साहबके लिये बहुत कुछ कार्य्य करना बाकी था। जिस खालसा सेनाकी घोर प्रबलताके कारण अङ्गरेजोंको इस भयङ्कर युद्धमें बड़ी हानि उठाना पड़ी थी, उसका कुछ अंश युद्धमें सो जाने पर भी शेषका सर्व्वनाश करना अभीतक बड़ा जरूरी सूचित होता था। पञ्जाबको मिला लेनेसे यह काम कभी सहजमें सिद्ध न होता; बल्कि खालसाकी प्रचण्डताका और भी भयानक परिचय मिलता। खैर, अब दलीपको राजा स्वीकार करनेकी चालसे राजधानीके लोगोंको बहुत कुछ आशङ्का छुड़ाकर लाट साहब वह गुप्त कार्य्य करने लगे। दरबारके कर्म्मचारी लोग भी अङ्गरेजोंके कांसे ना-उमेद नहीं हुए थे। वे भी लाट हार्डिञ्जकी यह इच्छा पूरी करनेके बाधक न होकर, यथाशक्ति सहायता ही करने लगे। शेष खालसा सेना लाहौर बुलाई जाने लगी और बाकी तनखाह पा पाकर हृदयकी गर्म्मी हृदय हीमें बुझाकरके फिर युद्ध न करनेकी प्रतिज्ञाके साथ घरमें पधारनेको लाचार कराई गई। इस प्रकार सेनाको तोड़कर दरबारकी शेष तोपें भी अङ्गरेजोंने ले लीं आगे अङ्गरेज और सिख दरबारके बीच लखियानेमें स्थिरकी हुई सन्धि बदस्तूर

दस्तखत आदिसे पक्की की गई। इसके अनुसार सिख महाराजको सतलजके दक्षिणके संपूर्ण प्रदेशोंको चिरकालके लिये त्यागना पड़ा और युद्धके खर्चके बतौर स्वीकृत डेढ़ करोड़ रुपया देनेको असमर्थ होनेके कारण एक करोड़के बदले इस समय काश्मीर और हजारा समेत वियास और सिन्धके मध्यस्थित संपूर्ण प्रदेशोंको अङ्गरेजोंके हवाले सौंपना पड़ा। बाकी पचास लाख कुछ ही दिनोंके अन्दर बटोरकर दरबारने देना स्वीकार किया। इस सन्धिके अनुसार बीस हजार पैदल और बारह हजार सवारके अतिरिक्त सेना रखनेकी शक्ति भी छीन ली गई। इन सब विषयोंकी कृतज्ञतामें अङ्गरेजोंने पञ्जाबके भीतरी शासनमें किसी प्रकार हस्तक्षेप न करनेकी प्रतिज्ञा की। पर प्रयोजनके अनुसार दरबारको सुपरामर्श देकर कृतार्थ करनेकी बात भी लाट हार्डिञ्जने सुलह-नामेमें प्रविष्ट कराई।

योंही नवीन सिखराज्य स्थापित हुआ। योंही स्वाधीनताके विसर्जनसे अङ्गरेजोंकी कृपाद्वारा पञ्जाबवासियोंको नवीन स्वाधीनता प्राप्त हुई। पर इस स्वाधीनताका और एक अंश अभीतक प्रकाश नहीं किया गया है। स्वाधीनताका वह अंश ११ वीं मार्च महीनेकी और एक सन्धि था। पुरानी सिखसेनाको बिगाड़कर नई सेना गढ़नेकी सहायताके अर्थ ब्रटिश गवर्नमेराट वर्त्तमान वर्षके अन्ततक लाहौरमें जरूरी अङ्गरेजी सेना रख देगी। वह सेना राजधानी और दुर्गको अपने अधिकारमें रखकर महाराज तथा लाहौर-निवासियोंकी रक्षा भी करती रहेगी। जब तक यह अङ्गरेजी सेना लाहौरमें रहेगी, तब तक सिख-सेना लाहौरमें न रह सकेगी। इस अङ्गरेजी सेनाका तमाम खर्च दरबार हीको देना होगा।

पूर्व्व सिखराज्यकी प्रेतक्रिया हो जानेपर ऐसी ही स्वाधीनता सहित नवीन सिखराज्यके मन्त्री लाल सिंह हुए। स्वजातियोंसे विश्वासघात करनेके पुरस्कार स्वरूप यह मन्त्रीपद क्रतघ्न अङ्गरेजों द्वारा लाल सिंहके लिये निर्दिष्ट हुआ। पर इतने दिन मन्त्री बने रहकर गुलाव सिंहके हृदयमें मन्त्री बने रहनेकी प्रबल इच्छा प्रविष्ट हुई थी। विशेषकर अब उनके कण्टकरूपी खालसा सेनाका नाश हो जानेसे उनकी पूर्व्व बाधायें हट गई थीं। इस लिये अङ्गरेजोंके इस प्रबन्धसे वह बहुत ही असन्तुष्ट हुए। उनको असन्तुष्ट देखकर अङ्गरेजोंको भी कम दुविधा न हुई। अङ्गरेजोंकी भांति बुद्धिमानोंको गुलाव सिंहकी तेज राजनीतिक बुद्धि तथा अनन्त सैन्यशक्ति अनुभव करना कठिन न था। फिर जब गुलाव सिंह लाट हार्डिञ्जसे राजधानीमें न पधारनेकी प्रार्थना करनेको काहर गये थे, तब उन्होंने क्रोध अपमान जटित विनयसे स्पष्ट ही कहा था, "यदि मैं युद्ध चलने देता, तो लड़ाईका परिणाम भिन्न रीतिका होता। मैं अपनी इच्छासे जाल फैलाकर स्थलकी भांति कैद न रहता। एकबार इशारा मात्र करनेकी देरी थी, कि अस्सी हजार कट्टर सेना दिल्ली और फीरोजपुरके बीचमें कुहराम मचाती।" सो अङ्गरेज लोग इस बुद्धिमान तथा शक्तिमान पुरुषको प्रसन्न करनेको उत्सुक हुए। लाट हार्डिञ्जने एक करोड़ रुपया मूल्यके बतौर लेकर गुलाव सिंहको सिख दरबारसे लिये हुए काश्मीर समेत बियास और सिन्धके बीचवाले संपूर्ण पहाड़ी भूखण्ड बेच डालना पहिले स्वीकार किया। पर पीछे सिर्फ ७५ लाखपर रावी और सिन्धके मध्यस्थित काश्मीर आदि प्रदेश मात्र ही बेचकर गुलाव सिंहको उसका स्वाधीन नरेश स्वीकार किया।

लाल सिंह और गुलाब सिंहकी कृतघ्नता इस प्रकार मानकर अङ्गरेजोंने तेज सिंहको स्यालकोटका राजा और नई सिख-सेनाका सेनापति किया। तथा संपूर्ण स्वजाति-विद्वेषी सरदारोंको कुछ न कुछ गौरवके पदपर आरूढ़कर उनकी अङ्गरेजी सहायता स्वीकार की। इस नवीन प्रबन्धके अनुसार जब पञ्जाबका शासन होने लगा, तब अङ्गरेजोंको मालूम होगया, कि बुद्धिमान गुलाब सिंहको ही मन्त्री बनानेसे इस प्रबन्धकी खराबी न होने पाती। लाल सिंह अवश्य ही पहिले पहिल अङ्गरेजोंको अप्रसन्न करनेकी मूर्खता नहीं प्रगट करता था। उसने झटपट घोर जबरदस्तीसे नवीन सन्धिके अनुसार न चुकाया हुआ पचास लाख रुपया सरदारोंसे उठाकर अङ्गरेजी गवर्नमेण्टको प्रसन्न किया। आगे राजधानीमें स्थित जङ्गी अफसरोंकी सारी कामना इशारा करते मात्र पूरी कर विलक्षण सरफराजी दिखाने लगा। पर उसके कुशासनसे प्रजा हैरान होने लगी, सिख राज्यमें अप्रसन्नताकी धुन उड़ने लगी। लोगोंके अत्याचारसे धन वसूलकर वह दरबारके खजानेमें एक डब्बल भी सञ्चित होने नहीं देता था। राज्यके धनवानोंको सर्व्वनाश कर वह अपनी विलासकी लालसा पूरी करनेकी सखावत दिखा रहा था। तबलेकी ठनाठन, सारङ्गीकी गुन गुन और म्हगनैनियोंके घुंघरुओंकी छुन छुन मन्त्री-भवनकी सम्पद बन गई। मदिराके मधुर प्रवाहसे उस महोत्सवकी पूर्णता प्रगट होने लगी। पर मूर्ख सदा अङ्गरेजोंको प्रसन्न रखकर अपनी यह अनोखी विलासिता भोगता हुआ विश्वासघातका पुरस्कार लूटनेमें समर्थ न हुआ। अङ्गरेजोंने पहिले अपनी सहायतासे उसे प्रजापर घोर अत्याचार कर राज्यमें बीभत्स लीलाका दूषित सोता बहाने

देने पर भी पीछे उसका सर्व्वनाश किया। जिसने स्वजातिसे विश्वासघात किया था, उसे अपने साथ भी विश्वासघात करनेका सन्देह अङ्गरेजोंको हुआ। इमामुद्दीन नामक एक आदमीने महाराज गुलाव सिंहके विरुद्ध वगावत मचाई थी। केवल अङ्गरेजोंकी सहायतासे वह वगावत झटपट दव गई। लाल सिंहके इशारेसे यह अनर्थ होनेके अभियोग पर वह दो हजार रुपये पेनृशन पर वनारसमें निर्व्वासित किया गया।

हजार अयोग्य होनेपर भी सिखराज्यकी पुरानी रौनकके दिनों जैसे जवाहिर सिंह अन्तिम मन्त्री था, वैसे ही लाल सिंह इस नवीन प्रवन्धके सिखराज्यका प्रथम और अन्तिम मन्त्री हुआ। इसके देश निकालेके बाद सिखराज्यकी स्वाधीनताने और भी विलक्षण मूर्त्ति-धारण की। अव तक हजार दुराचारी होनेपर भी एक सिखसे सिखोंका शासन होता था। अङ्गरेजी सेना तथा अफसर लोग राजधानीमें केवल विराजते ही थे; केवल सिख शासकसे उनकी कामना पूरी होनेसे ही वे प्रसन्न होते थे। शासन आदि कार्य्यसे उनका कम ही सम्बन्ध था। पर लाल सिंहके वादही अङ्गरेज कर्म्मचारी सिखप्रजाके शासक होने लगे। सन् १८४६ ई०की १६ वीं डिसम्वरको रावीके तटपर भैरवाल स्थानमें लाट हार्डिञ्जने एक नई सन्धि की। वह भैरवाल सन्धि निम्नलिखित रूप की थी;—"गवर्नर जनरल साहव लाहौरमें अपना एक प्रतिनिधिरूपी अङ्गरेज रसीडराट रखेंगे। उन्हें राज्यके हरेक कार्य्यमें अपनी पूरी शक्ति प्रगट करनेका अधिकार रहेगा। कई एक सुदक्ष पुरुष उनकी सहायता किया करेंगे। राज्यशासन करनेमें पञ्जावनिवासियोंके जातीय-आचार तथा

रीतिनीतिपर पूरी दृष्टि रहेगी। इन सब विषयोंकी सहायताके लिये सरदार तेज सिंह, अटारीके सरदार शेर सिंह, दीवान दीनानाथ, फकीर नूरुद्दीन, सरदार रणजोर सिंह, भाई निधान सिंह, सरदार अतर सिंह,सरदार शमशेर सिंह इन कई सज्जनोंसे बनी हुई प्रतिनिधि-सभा रसीडण्ट साहबकी सहायता करती रहेगी। इन लोगोंको ब्रटिश रसीडण्टकी आज्ञा तथा उपदेशसे कार्य्य करना होगा। रसीडण्ट साहबकी आज्ञा बिना इन सभासदोंमें कुछ भी अदल बदल न होगा। महाराजकी रक्षा तथा राज्यकी शान्ति बनाये रखनेके लिये जितनी सेना लाहौरमें रखना गवर्नर जनरल बहादुरको मञ्जूर होगी उतनी मौजूद रहेगी। राज्यकी रक्षा तथा शान्तिके लिये, यदि कभी लाहौर राज्यके किसी दुर्गमें अङ्गरेजी सेना रखनेकी जरूरत होगी, तो लाट साहब बिना रोकटोक रख सकेंगे। महाराज दलीप सिंहकी माता तथा उनकी सखी सहेलियोंकी परवरिशके लिये सालाना डेढ़ लाख रुपया दिया जावेगा। दलीप सिंहको नाबालगी तक अङ्गरेज तथा सिख दोनोंको सुलहनामेकी हरेक बात मानना होगी। और सन १८५४ ई०को ४ थी सितम्बरको महाराजकी अवस्था १६ वर्षकी हो जानेपर यह सुलहनामा खारिज हो जावेगा। पर इससे पहले भी यदि दरबार और अङ्गरेजी सरकारको सुलहनामा खारिज करनेकी जरूरत मालूम हो, तो गवर्नर जनरल साहब वह भी कर सकेंगे।"

सोबरांव युद्धके बाद वर्ष बीतते न बीतते पञ्जाबका परिणाम ऐसाही हुआ। इस सन्धिके बाद जो सुयोग्य अङ्गरेज पञ्जाबके रसीडण्ट अथवा पूर्ण राजभक्तियुक्त शासक नियुक्त हुए, वह बाद

डाफि ङ्क्के परम विश्वासी सर हेनरी लारेन्स साहब थे। लारेन्स साहब लाख अङ्गरेजोंमें एक थे। हिन्दुस्थान निवासियोंपर सच्ची दया रखनेवाले, कोमलता मात्रके पक्षपाती, सुखशान्तिके कट्टर प्रेमी तथा अङ्गरेजी रीति पर राज्य-शासनकी अच्छी शक्ति रखनेवाले अङ्गरेज हिन्दुस्थानके अङ्गरेजोंमें सर लारेन्सके नमूनेके बहुत कम ही मिलते थे। इतने गुणशाली होने पर भी लारेन्स साहब अलबत्ते सच्चे अङ्गरेज थे। उनकी अधीनतामें पञ्जाबका स्वरूप अङ्गरेजोंके अधिकृत भारतकासा हो गया। अङ्गरेजी राज्यमें भारतवासियोंके सुख दुःख, रुचि इच्छाका जैसा परिवर्त्तन होगया था, इस अङ्गरेजी शासनकी अधीनतामें पञ्जाब राज्यकी वीर प्रजाका वैसाही परिवर्त्तन होने लगा। सिख जातिका वह रुद्रभाव छूटने लगा। वह लड़ाईकी कामना हटने लगी—औरोंकी बात जाने दीजिये, कुछ ही दिन पहले जो सिख सेना अङ्गरेजोंसे लड़ी थी, अपनी तलवारोंको विदेशियोंके रक्तसे रञ्जित किया था, उसके भी अनेक लोग तलवारके बदले हलकी मूठ थामकर लड़ाईके बदले खेत जोतने लगे। दीवानी फौजदारी हरेक विभागने नवीन मूर्त्ति धारण की; सिख राज्यमें अङ्गरेजोंका आईन चलने लगा। क्रमशः सिख प्रकृति ऐसी बदल गई कि थोड़े दिन पहले जो सिख अङ्गरेजोंके लाट गवर्नरको भी अपने राज्यमें देखनेसे क्रोधवश आंखें लालकर म्यानपर हाथ रखते थे, वे अदनासे अदना भिखमङ्गे अङ्गरेजको भी देखकर इज्जतके साथ सलाम करते हुए बीसियों कदम पीछे हटने लगे।

पञ्जाबमें अङ्गरेजोंकी इस अपरिमित शक्तिके दिनों सन् १८४७ ई०की तीसरी जुलाईको गवर्नर जनरल बहादुरके

थापापतसे रसीडण्ट बहादुरने अपनी शक्ति और भी बेहद्द समझ ली! लाट साहबने लिखा, "भैरवाल सन्धिके अनुसार लाहौरके ब्रटिश रसीडण्ट, राज्यके सम्पूर्ण विषयोंमें इच्छानुसार कार्य्य करनेका पूर्ण अधिकार रखते हैं। रसीडण्ट बहादुरके लिये प्रतिनिधि सभाके देशी सभासदोंके साथ एकमतसे कार्य्य करना अवश्य ही अच्छी बात है। पर वास्तवमें वे उनके पूरे अधीन हैं। वह चाहें तो उनमेंसे जिस किसीको छुड़ाकर उसके स्थानमें दूसरेको नियुक्तकर सकते हैं केवल यही क्यों, जङ्गी विषयोंमें भी उनकी शक्ति अनन्त है। वह इच्छानुसार पञ्जाबके जिस किसी अंशमें सिख सेनाके बदले अङ्गरेजी सेना रख सकते हैं।" २२वीं अक्तोबरकी और एक चिट्ठीसे पञ्जाबमें रसीडण्ट साहबकी शक्ति और भी अपार होगई। लाट साहबने लिखा, "दलीप सिंहकी नाबालगी तक हम लोगोंको स्मरण रखना चाहिये, कि सं० १८१२ ई०की सन्धिके अनुसार पञ्जाब राज्य बिलकुल स्वाधीन नहीं है। राज्यका कोई भी कर्म्मचारी अथवा सरदार युद्ध वा सन्धि करने अथवा छोटीसे छोटी भूमि बेचने वा बदलनेका अधिकारी नहीं है। हमारी आज्ञा बिना इस प्रकारका कुछ भी कार्य्य नहीं हो सकता है। औरोंकी बात छोड़ दीजिये, स्वयं महाराज भी हमारे अधीन हैं। उनको भी कोई काम करनेका अधिकार नहीं है।"

पञ्जाबके ऐसेही परिणामके अवसरपर राजमाता महाराणी झिन्दांके कार्य्योंपर भी अङ्गरेज रसीडण्टको सन्देह होने लगा। उस हिन्दू-नारीके जैसे कार्य्योंपर अङ्गरेजोंको सन्देह हुआ था, वह रसीडण्टकी महारानीको भेजी हुई चिट्ठीसे ही विदित होता है। चिट्ठी यह है, "अफवाह उड़ी है, कि

महारानी समय समयपर पन्द्रह बीस सरदारोंको घरमें निमन्त्रण करती है कोई कोई सरदार गुप्तभावसे उनके साथ मुलाकात भी करता है। गत माससे महारानी नित्य राजभवनमें पचास ब्राह्मणोंको भोजन कराती हैं, और स्वयं उनके पांव धोती हैं। परमण्डलमें सौ ब्राह्मणोंके भेजनेकी खबर भी सुनी जाती है। मैं महाराज रणजीत सिंहके खान्दानकी इज्जत और मर्य्यादा रक्षा करनेका जिम्मेदार हूं। इस लिये यह कहना है, कि वे सब कार्य्य महारानी साहबके अयोग्य तथा सर्व्वथा अनावश्यक हैं। महारानी अबसे अपनी सखी सहेली तथा दासदासियोंके उपरान्त और किसीसे मुलाकात न करें। यदि दरिद्र अथवा धार्म्मिकोंको खिलानेकी रुचि हो तो हर महीनेकी १लीको अथवा शास्त्रसङ्गत किसी अच्छे दिनमें यह कार्य्य करें। सन्धिका अभिप्राय ऐसाही है।" रणजीत सिंहकी अर्द्धाङ्गिनी वीरबाला महारानी झिन्दांको रसीडण्टकी इस चिट्ठीको जैसी नम्रताके साथ स्वीकार करना पड़ा था, उससे भी सोबरांव-युद्धमें पराजय-प्राप्त पञ्जाबका परिणाम भली भांति प्रतीत होता है।

पर महारानीपर रसीडण्टका अविश्वास क्रमश: बढ़ता ही गया। यहांतक कि छोटी छोटी घटनायें भी उनका तीव्र सन्देह सूचित करने लगीं। सफेद ईख हिन्दुओंकी दृष्टिमें अति पवित्र वस्तु है। महारानीकी एक सहेलीने मुलतानसे एक सफेद गन्ना लाकर महारानीको भेंट दिया था। रसीडण्ट साहब समझने लगे कि इस गन्नेके बहाने महारानी मुलतानके दीवान मूलराजसे अङ्गरेजोंके विरुद्ध साजिश कर रही हैं। सन्देह इस प्रकार बढ़ते बढ़ते महारानीके विरुद्ध साजिशका एक

अभियोग अन्तको लाट हार्डिञ्जके रूबरू भी उपस्थित किया गया। परमा नामक एक आदमीने राजा तेजसिंहकी हत्याके लिये जाल फैलाया था। इस सिसमें महारानीके विश्वासी सेक्रेटरी भी पकड़े गये थे। बस रसीडराट साहबने इसकी जड़में महारानीकी मूर्त्ति देखी ; पर सूक्ष्मदर्शी गवर्नर जनरल बहादुरने इस घटनाका विलक्षण अनुसन्धान कराकर महारानी झिन्दांको निर्दोष सिद्ध किया। किन्तु इससे भी रसी-डराट साहबका सन्देह-भाव दूर न हुआ। अन्तमें जब साजिशकी न चली, तो बालक पुत्रको बिगाड़ते रहनेका अभियोग लगाया गया। जब तेज सिंहको राजटीका देना था, तब सभामें बालक महाराजके आनेमें देर होगई और टीका लगानेकी प्रार्थना करने पर आठ वर्षके दलीपने अपने छोटे छोटे हाथोंको पीछे कर लिया। रसीडराट बहादुरने एक ब्राह्मणसे टीका लगवाकर तेज सिंहको तो किसी तरह राजा कर लिया था। पर बालकका ही कार्य्य तेज सिंहसे माताका विद्वेष रहनेका कारण समझा गया। बस अपनी सन्तानको कुशिक्षा देनेके इलजामसे महारानी झिन्दांको अपने पति तथा पुत्रके राज्यमें अङ्गरेज रसीडराट द्वारा कैद होना पड़ा। पुत्र मुख देखनेकी प्यारी आशासे हाथ धोकर सामान्य स्त्रियोंसे भी अभागी बनना पड़ा। लाहौरसे प्रायः साढ़े बारह कोस दूर मुसल्मान बाशिन्दोंसे वेष्टित शिकोहपुर किलेमें कैद होकर चार हजार माहवार पेनूशन पर दिन काटने पड़े। जिस सोबरांव युद्धके परिणामसे पञ्जाबका यह परिणाम हुआ, उसका पञ्जाबके इतिहासमें सदा स्मरण योग्य घटना होना आश्चर्य ही क्या है ?

पांचवा अध्याय।

असन्तोषकी वृद्धि।

पहिले ही कह चुके हैं, कि अङ्गरेजोंमें सर हेनरी लारन्सकी भांति सिखोंका हितैषी पुरुष कोई भी विद्यमान न था; और उन दिनों लाट हार्डिञ्जकी भांति सच्चे मनुष्य-हृदय रखनेवाले पुरुषका अङ्गरेजी राज्यके मुख्य स्थानपर आरूढ़ रहनेसे लारन्स बहादुरके उस पर-हित-व्रतमें कोई बाधा न होने पाती थी; पर तौभी सदासे स्वाधीनताकी बड़ाई अनुभव करती हुई महावीर सिख जाति तबतक अपनी चिरसञ्चित स्वाधीन वृत्तिको तिलाञ्जलि कर पराया शासन सहनेको अभ्यस्त नहीं हो सकी थी। इस लिये सर हेनरीकी सदय कार्य्यावली भी कभी कभी उसकी नसोंको फड़का देती थी। विशेषकर रणजीत सिंहकी प्यारी रानी राजमाता झिन्दांका पूर्व्वोक्त परिणाम रणजीत-प्रेमी सिख जातिमें विलक्षण कठोर प्रतीत हुआ। सिख लोग सर लारन्सके दिनोंकी सामान्य कठोरतासे ही अपनेको पीड़ित समझकर क्रोध डाहसे ओंठ काटने लगे थे; पर हाय! वे नहीं जानते थे, कि निकट ही भविष्यतके लिये उनके हेतु कैसी अपार असह्य कठोरताकी चक्की तय्यार हो रही थी। लाट हार्डिञ्जकी अवधि पूरी हो गई; वह विशाल राज्यका भार लाट डेलहौसीके हाथ सौंपकर बिदा होगये। तबतक कौन जानता था, कि डेलहौसी अपनी कमरमें लड़ाई और घोर अशान्तिका

नगाड़ा बांधकर आये थे ! लाट हार्डिञ्ज घर पधारते समय उपदेशके मिसमें डैलहौसीसे कह गये थे, "आगामी सात वर्षके अन्दर हिन्दुस्थानमें एक भी गोली दागनेकी जरूरत न होगी।" पर लाट हार्डिञ्जके विलायत पहुंचनेमें देर न लगी, कि नये लाटने गोली दागना क्या, सारे भारतमें आकाश चूमनेवाली दावानल बाल दी। सन् १८४६ ई०से इस लाटके पीतड़ेने देशी राज्योंका खून पी पीकर हिन्दुस्थानमें जैसी बद-अमली फैलाई थी, उसका तर्पण ८ ही ९ वर्ष बाद अङ्गरेजोंको स्वजातियोंके खूनकी नदी बहाकर करना पड़ा। पर हमे उन कार्य्योंसे प्रयोजन नहीं, केवल सिख राज्यसे अङ्गरेजोंके वर्त्तावको प्रगट करनेके लिये अङ्गरेजोंके तात्कालिक मुख्य कर्म्मचारी लाट डैल-हौसीके चरित्रकी उक्त सच्ची आलोचना करना पड़ी।

सहृदय लाटके परिवर्त्तनके साथ साथ कृपामय रसीडण्ट अथवा सिख राज्यके हर्त्ता कर्त्ता विधाताके परिवर्त्तनका दुर्भाग्य भी सिखोंको सहना पड़ा। सर हेनरी लारन्सके स्थानमें सर फ्रेडरिक करी पञ्जाबके नये रसीडण्ट हुए। नये लाट तथा नये रसीडण्टको अपने पदोंपर बैठे बड़ी देर न हुई, कि सिख राज्यमें एक कठोर विद्रोहाग्नि जल उठी। यह विद्रोह लाहौर दरबारके अधीन राज्य मुलतान-वासियोंका था। पाठक लोग मुलतानके दीवान मूलराजकी कैफियत पहिले कुछ कुछ सुन चुके हैं। दीवानी पर बैठकर मूलराजने नियमानुसार दरबारको नजराना नहीं दिया था। आगे खालसा सेनाके चढ़ जाने पर १८ लाख रुपया देनेकी प्रतिज्ञा करके उससे किसी तरह अपनी जान बचाई थी। पर पञ्जाब-युद्ध उपस्थित होने पर मूलराजने उक्त प्रतिज्ञासे टल जानेका अच्छा मौका माना। जब सिख-

युद्ध अन्त होने पर भी मूलराजने अपना कर्ज अदा न किया, तब उन दिनोंके नये मन्त्री लाल सिंहने मुलतान पर कुछ सेना दौड़ाई थी। पर झङ्गके पास मूलराजकी सेनाने उसे हरा दिया था। उस समय पूर्व्व रसीडण्ट सर लारन्सने दोनोंका झगड़ा मिटा देकर शान्तिका प्रबन्ध किया था। प्रबन्धके अनुसार मूलराजने कुछ दिनों पहिलेसे अधिक मालगुजारी देनेकी कोशिश भी की। पर पीछे इतना अधिक रुपया दरबारको देते रहना अपने लिये असम्भव देखा। इस विषयपर दयावान रसीडण्ट सर लारन्ससे मिलनेकी आज्ञा प्राप्तकर जब मूलराज लाहौर आया, तो देखा कि वह विलायत पधार चुके हैं। उस समय हेनरी लारन्सके भाई जान लारन्स बहादुर नये रसीडण्टके न आने तक रसीडन्सीका काम कर रहे थे। उनसे मूलराजने दीवानी त्याग देनेका सङ्कल्प प्रगट किया। उनके हजार समझाने पर भी मूलराजने उतनी मालगुजारी देते रहकर और दीवानी तथा फौजदारी मामलोंमें अपने फैसलेके विरुद्ध दरबारमें अपील होते देखकर मुलतानकी दीवानी पर आरूढ़ रहना स्वीकार न किया। उसने प्रार्थना केवल इतनी ही की, कि दीवानी छोड़ने पर मुझे परवरिशके लिये कोई जागीर दी जावे। जान लारन्स बहादुर अपने कायम मुकामीके हेतु इसका कुछ पक्का उत्तर न दे सके, केवल इतनाही कहा, कि जब राज्यके विश्वासी कर्म्मचारी मात्र कार्य्य छोड़ने पर पुरस्कृत होनेसे निराश नहीं होते हैं, तो आपको भी शायद निराश न होना पड़े। बस मूलराजने मुलतान पहुंचकर दीवानी त्याग दी। इसके बाद ही नये रसीडण्ट आये। उन्होंने पुरस्कार कुछ न दिया। उल्टे पिछले दस वर्षका हिसाब मांगा और जल्द ही निरूपित वेतन पर

सरदार खान बहादुर खांको दीवान नियुक्तकर मान्स आन्ड्रू और लफटनट एण्डरसनकी अधीनतामें पांच सौ सेनाके साथ मुलतान रवाने किया।

मूलराजने इस नये दीवानका विलक्षण स्वागत किया; दूसरे दिन उनके हाथमें मुलतानका दे देना स्वीकार किया; केवल दस वर्षका हिसाब देनेके प्रस्तावसे कुछ अप्रसन्नता प्रगट की। प्रतिज्ञानुसार दूसरे दिन मूलराजने दुर्गके सब अंशोंको दिखाकर उसकी कुञ्जी नये दीवानको देदी और गोरखे पहरेदारोंसे किलेको सुशोभित होते देखकर भी कुछ भी चञ्चलता जाहिर न की। इसके बाद नये दीवान अपने दोनों साथी अङ्गरेजोंके साथ खेमेमें पधारे; शिष्टाचारके लिये मूलराज भी उनके साथ चला। इतनेमें एकायक कुछ लोगोंने आक्रमण कर दोनों अङ्गरेजोंको जखमी किया। यद्यपि उस समय मूलराज उनकी रक्षा न कर अपने आमखास बागको चल दिया; पर पीछे उसने अपने साले रङ्गरामको भेजकर दोनों साहबोंको बड़ी हिफाजतसे उनके खेमोंमें पहुंचा दिया। प्रारम्भमें इन्हीं अङ्गरेजोंको जखमी करके मुलतानकी प्रजाने मूलराजके हजार मना करने पर भी बगावत मचाई। विद्रोही सेना कहने लगी, "फरङ्गियोंने लाहौर दरबारकी स्वाधीनता हर ली है; हमको भी वे अधीन बनावेंगे; आइये, दीवान मूलराज! उनकी बुरी नीयतकी शिक्षा देकर अपनी स्वाधीनता अटल रखें। मूलराजने प्रथम दिन इनसे मिलना स्वीकार न किया। आगे देखा, कि फरङ्गियोंकी सहायता करनेके कारण विद्रोहियोंने रङ्गरामको सख्त घायल किया है और वे सालेको मारनेवाले बहनोईकी जीवनरक्षा करनेको उद्यत नहीं हैं। तब लाचार

मूलराजको इनका सेनापति बनना स्वीकार करना पड़ा। यह ख़बर फूसकी अग्निकी भांति तमाम मुलतानमें फैल पड़ी। विद्रोही लोग चारों ओर यह कहकर फिरने लगे, कि "गुरु गोविन्द सिंहने हमको शत्रुओंके विरुद्ध खड़े होनेकी आज्ञा दी है। ग्रन्थ साहबमें ऐसी बात देखनेमें आती है।" इस प्रकार बात जिसके कानमें पहुंची, उसीने अपनी व्यवस्था तककी परवा न कर तलवार उठा ली।

इन विद्रोहियोंने उक्त दो अङ्गरेजों पर आक्रमण किया। इनके साथवाली सेनाने भी विद्रोहियोंका पक्ष अवलम्बन किया। सो उन दोनों अङ्गरेजोंके केलोंकी भांति काटनेमें देर न लगी। नये दीवान खान बहादुर खां पुत्रों समेत कैद किये गये। प्रथम बार घायल होनेके बाद ही इन दोनों साहब बड़े बड़े प्रयत्नसे बन्नूमें स्थित मेजर एडवार्डिस साहबको अपनी दशा-सूचक चिट्ठी भेजनेमें समर्थ हुए थे। चिट्ठी पाते ही वह अपने साथकी २ तोपें, २० गोलन्दाज, १२ सौ पैदल और १५०० घुड़सवार सेना लेकर अगणित विद्रोहियोंसे स्वदेश-वासियोंकी रक्षाके लिये चले। पर अग्नु और एण्डरसन साहबोंको इस कूचकी खुश-खबरी तक सुननेका अवसर न हुआ। इसकी खबर मुलतानमें पहुंचनेसे बहुत पहिले ही उनके खूनसे मुलतान कलङ्कित हुआ था। मेजर एडवार्डिसने रसीडण्टको अपनी यात्राका समाचार भेजकर सिन्धके बांये किनारे लिया स्थानमें छावनी बनाई और वहांसे विद्रोहका भयानकपन अनुभव कर तथा स्वजातियोंकी हत्याका समाचार पाकर फिर रसीडण्टको लिख भेजा कि लाहौरसे अङ्गरेजी तथा सिख सेना न आनेसे यह घोर विद्रोह किसी प्रकार शान्त करना सम्भव नहीं है; बल्कि इन विद्रो-

हियोंमें पहाड़ी जातियोंके मिल जानेसे विद्रोह और भी सर्व्वनाशी हो जायगा।

एडवार्डिस साहबकी भांति जो लोग इस विद्रोहको दवाना उचित समझते थे, उन लोगोंमेंसे भी हरेकने रसीडराट वहादुरसे मुलतानमें अङ्गरेजी सेना भेजनेकी प्रार्थना की। लाहौरस्थित तमाम सरदारोंने तथा दरवारके संपूर्ण सभासदोंने स्पष्ट बातोंमें रसीडराटको समझा दिया, कि दरवारकी सिख सेना अभीतक पूर्व्व लड़ाईकी हार तथा पञ्जावकी वर्त्तमान पराधीनता विचार विचार कर अङ्गरेजोंसे बड़ी चिढ़ रखती है, इस सिख सेनाको मुलतान भेजनेसे वह जरूर ही विद्रोहियोंसे मिल जायगी। आप अङ्गरेजी सेना भेजकर विद्रोहको शान्त कीजिये। पर रसीडराटके चित्तमें इस विद्रोहको किसी राजनीतिक कारणसे बढ़ते देना ही और उन विद्रोहियोंमें दरवारकी सिख-सेनाको प्रविष्ट कराना ही मञ्जूर था, कि नहीं वह नारायण ही जानते हैं; सब लोगोंने थक चकाकर इतना ही सुना, कि रसीडराट साहब किसी उपायसे मुलतानमें अङ्गरेजी सेनाको न घुसने देंगे। केवल सिख-सरदारों आदिकी प्रार्थनानुसार ही क्यों, पूर्व्व सन्धिके अनुसार भी उनको अङ्गरेजी सेना भेजकर जलद यह विद्रोह शान्त करना था। सन्धिके अनुसार रसीडराट साहब ही पञ्जावके सुशासन अथवा कुशासनके जिम्मेदार थे। पञ्जावके वही सर्व्वमय हर्त्ता कर्त्ता विधाता थे; सिख दरवार उनकी आज्ञामात्र पालन करनेवाली सभामात्र था। इस दशामें राज्यके किसी प्रान्तमें विद्रोह होना और उसको दवानेकी योग्य तदीर न होना उनके लिये सर्व्वथा घोर कलङ्कका विषय था। तौभी वह जरा न टरे, टारे भी न टारे गये; स्वजातियोंके

खूनका बदला लेनेके लिये भी न टरे। केवल लाहौरके सिख-सरदारोंको विद्रोहका सब प्रकार लक्षण दिखानेवाली सिख-सेना समेत मुलतानमें जानेकी आज्ञा देकर मुलतानके विद्रोहको बढ़ानेका प्रबन्ध किया। और आश्चर्य इतना है, कि लाट साहबको भी रसीडण्ट साहबकी बात नामञ्जूर न हुई। इस प्रकार प्रबन्ध देखकर लोगोंका ऐसा सन्देह होना आश्चर्य न था, कि इस विद्रोहको बढ़ाकर परराज्यहारी डेलहौसीको अन्तमें पञ्जाबको हिन्दुस्थानमें मिला लेना ही अभीष्ट था।

मुलतान-विद्रोह बरसातमें आरम्भ हुआ था। लाट डेल-हौसीने कहा, कि यद्यपि अङ्गरेजी सेनाके न भेजनेसे मुलतान-विद्रोह न दबकर तमाम पञ्जाबमें विद्रोह फैल जाना सम्भव है, तौभी हम पञ्जाबकी रक्षाके लिये अङ्गरेजी सेना भेज नहीं सकते; क्योंकि इस बरसाती हवासे हमारी सेनाकी तन्दुरुस्ती बिगड़ जायगी। वाह! वाह! जिस लाटने बालक महाराजकी राज्य-रक्षाका भार अपने हाथ लिया था, यह बात उसकी जवानी कैसी अच्छी शोभा देती थी! पर लाट डेलहौसीकी इस बातकी आलोचना हमे करनेकी जरूरत नहीं है। सुनिये उनके देशवासियोंने ही उस पर क्या कहा है;—मेजर इवान्स बेलने कहा है, "गवर्नर जनरलको जानना चाहिये था, कि बरसातके समय एक ब्रिगेड सेना भेजनेसे जो हानि होती, संपूर्ण पञ्जाबमें विद्रोह उपस्थित होनेसे, अङ्गरेज और देशी सेनाओं तथा पञ्जाबी प्रजाको उससे कहीं बढ़कर हानि सहना पड़ती।" सर हेनरी लारन्सने लिखा है, "भारतकी हरेक ऋतुको यदि हम बरदाश्त न कर सकें, तो वहां कदापि हमारा स्थान न होगा।" ट्राटर साहबने इतिहासमें उक्त इवान्स बेलकी

जवानी सुनते हैं, "यदि सेना भेजनेमें यह देरी सहज विश्वाससे की गई हो तो वह चाल निःसन्देह भ्रमपूरित और राजनीति-विरुद्ध थी और यदि पञ्जाबमें विद्रोह बढ़ाकर संपूर्ण रणजीत राज्यको हर लेनेकी गुप्त आशासे गवर्नमेण्टने यह काम किया हो तो वह चाल अति घृणित तथा कलङ्कित कही जावेगी।" यद्यपि लार्ड डेलहौसीके स्वदेशियोंको भी यह चाल पञ्जाब राज्यके हर लेनेके उपायरूपी होनेका सन्देह हुआ था तो अन्य लोगोंके चित्तमें वह सड़ी चाल सत्य प्रतीत होनेसे वे कदापि दोषभागी नहीं हो सकते।

खैर, जब कि रसीडेण्ट बहादुर तथा गवर्नर जनरल साहबकी ओरसे मुलतान विद्रोहको दबानेमें ऐसी ढिलाई प्रगट होती थी, तब सिर्फ एकही अङ्गरेज सच्चे दिलसे उसे दबानेकी तदीर कर रहे थे। पाठक! वह पूर्व प्रकाशित मेजर एडवार्डिस बहादुर ही थे। उनके थोड़ीसी सेनाके साथ लिया स्थानतक पधारनेका समाचार प्रकाशित कर चुके हैं। जब वहांसे रसी-डेण्ट साहबको सेना भेजनेकी जरूरत दिखाते दिखाते वह थक गये, तब उन्होंने डेरागाजीखांमें स्थित जनरल कोर्टलैण्डकी सेनाके सहारे अगणित विद्रोहियोंका सामना करनेको कस्त किया। कोर्टलैण्डकी सेनामें सुवान खांकी फौज तथा छः तोपें भी मौजूद थीं। सन् १८४८ ई०की ११वीं मईको विना लड़ाई मनग्रोटाका किला एडवार्डिसके हाथ लगा। पर पीछे कोर्ट लैण्डको भी रसीडेण्टकी आज्ञासे एडवार्डिसको छोड़कर डेरा-गाजी खांकी तरफ लौटना पड़ा। तिसपर भी एडवार्डिसने लियामें प्रायः पांच सौ विद्रोहियोंको परास्त कर उनके अनेक अस्त्र-शस्त्र दखल कर लिये। १६ वीं तारीखको एडवार्डिसने

अपनी जिम्मेदारीमें बहावलपुरके नव्वाबसे सहायताकी प्रार्थना की। ऐसेही अवसरमें मालूम हुआ, कि प्राय: छ: हजार विद्रोही पीरांवाला तक पहुंचे हुए हैं। वह एडवार्डिस बहादुर ३२ कोस चलकर बड़ी बड़ी तकलीफोंसे कोर्ट लैण्डकी सहायतामें जा पहुंचे। पर विद्रोहियोंने इनपर आक्रमण न किया। इससे कुछ पहिले अङ्गरेजोंके मित्र खोस लोगोंके सरदार कौरा खांने डेरागाजी खांमें विद्रोहियोंको पराजित देकर मूलराजके सिन्धुतटपर-स्थित संपूर्ण भूखण्डको छीन लिया। आगे कौरा खांने बहुत दिन तक एडवार्डिसकी सहायता की तथा बहावलपुरके नव्वाबकी भेजी १९ हजार सेनाके सहारे एडवार्डिस साहब प्रसन्न मनसे विद्रोहियोंका सामना करनेको चले।

इसके बाद ही कनेरीके घाटपर बड़ा भारी युद्ध हुआ। इसमें बहावलपुरकी सेना एडवार्डिस बहादुरको बड़ी निकम्मी सूझी। कायर सेनापति महम्मद खां विद्रोहियोंसे परास्त होकर जब भागने पर हुआ, तब अवश्य ही कोई प्राचीन बहावलपुरी लड़ाकोंकी उत्तेजनासे वह खेतमें खड़ा रहनेको लाचार किया गया; पर एडवार्डिस साहबने स्पष्ट ही कहा, "ऐसी वाहियात सेना द्वारा कुछ होनेवाला नहीं है।" उनको जनरल कोर्टलैण्डको फिर कुछ सेनाके लिये लिखकर बड़ी दिलेरीसे अपनी मुट्ठीभर वीर फौज द्वारा अपार विद्रोही सेनाका सामना करना पड़ा। जब विद्रोही सेनापति रङ्गरामके भीषण आक्रमणसे कातर होकर एडवार्डिस भागनेकी राह देख रहे थे, तब कोर्टलैण्डकी भेजी दो पल्टन सेना छ: तोपें लेकर आ पहुंचीं। बस विद्रोहियोंको अपनी आठ तोपोंसे हाथ धोकर भागना पड़ा

अथवा सिर्फ इतनी हानि ही क्यों, कनेरीकी हारसे मूलराजको सिन्ध और पञ्जाबके मध्यस्थित संपूर्ण प्रदेशोंको भी खोना पड़ा। इसी समय बहावलपुरके नव्वाबने पचास हजार रुपयेका कर्ज़ा देकर एडवार्डिसको उत्साहित किया। तथा लाहौर दरबारकी ओरसे बहावलपुरमें स्थित अजराट इमामुद्दीनके ४ हजार सेना लेकर उनके दलमें मिल जानेसे एडवार्डिसकी सेना संख्या १८ हजार होगई। १२ तोपोंके साथ इस आगे बढ़ती हुई सेना-मण्डलीपर मूलराजने केवल ११ हजार सेना और दस तोपें लेकर सुलतानसे प्रायः ८ मील दूर सदुसम स्थानमें आक्रमण किया। मूलराजकी सेना बड़ी वीरतासे लड़ी; पर उसके दुर्भाग्यवश मूलराजके हाथीपर एक गोला गिरनेसे मूलराजको जमीनपर उतरना पड़ा। सेना मूलराजकी मृत्युका सन्देहकर तितर बितर होने लगी। ऐसी ही दशामें एडवार्डिसने प्रचण्ड आक्रमण किया। बस देखते ही देखते २८१ आदमियोंको खेतमें छोड़कर मूलराजको अपने किलेमें भागना पड़ा।

अब इस समय केवल मुलतान दुर्गको घेरकर मूलराजको कुछ सतानेसे ही उसकी पराजय होजानेमें देरी न होती। पर उस कामके लिये कुछ बड़ी तोप तथा अच्छे अच्छे जङ्गी इञ्जीनियरोंकी जरूरत थी। लुधियानेकी छावनीसे एडवार्डिसने जब २९ वीं जूनको रसीडण्टसे इनके लिये प्रार्थना की तब वह सहायता भी देना नामञ्जूर हुआ। सो एक प्रकार हाथ लगी जयपर पदाघात किया गया। किलेको घेरकर मूलराजको आबद्ध न करनेके कारण उसे किला मजबूत करनेका अच्छा अवसर मिल गया। सिख सेना पहिलेसे तो अङ्गरेजोंपर चिढ़ी हुई ही थी, फिर अङ्गरेजोंके नवीन शासनसे वह चिढ़ घटनेके बदले

सर्व्वथा बढ़ गई थी। उस सेनाके अनेकानेक वीर इस अङ्गरेजोंके विरोधी बागीसे मिलने लगे। मूलराजका दल क्रमशः बढ़ने लगा। सो जो काम घण्टोंकी लड़ाईमें सिद्ध होनेवाला था, उसका महीनोंमें भी पूरा होना कठिन प्रतीत होने लगा। एडवार्डिस साहबने अपने इतिहासमें लिखा है, "सिख सेनासे सहायता पानेके भरोसे मूलराज बागी नहीं हुआ था; पर ब्रटिश गवर्नमेण्टके मूलराजको न दबानेसे वह सिख सेनाको विद्रोही बनानेमें समर्थ हुआ। उन्होंने अन्यत्र लिखा है, "मैं पञ्जाबके दूसरे अङ्गरेजोंके साथ स्थिर विश्वास रखता हूं, कि यदि मुलतान विद्रोह शीघ्र दमन किया जाता तो कदापि उससे दूसरा सिखयुद्ध न उभड़ता। यदि सन् १८४८ ई०के जून वा जुलाई महीनेमें मुलतान ब्रटिश सेनासे छीना जाता तो कदापि रणजीत-राज्यको डुबा देनेका मौका नहीं मिलता।"

जब पञ्जाब शासनकी वर्त्तमान प्रणालीके हितैषी सिख लोग रसीडण्ट और गवर्नर जनरल साहबोंके ऐसे कुटिल तथा बेईमानी बर्त्तावोंसे सेनाओंकी चिरसञ्चित शत्रुता अङ्गरेजोंके विरुद्ध प्रगट करनेका मौका ढूढ़ते देखकर घबड़ा रहे थे, तब प्रजाके दूसरे लोग भी अङ्गरेज कर्म्मचारियों द्वारा होते हुए हृदय दुखानेवाले दूसरे अत्याचारोंसे भी कम अप्रसन्न नहीं होते थे। राजमाता झिन्दांके शिकोहपुर दुर्गमें कैद होनेकी दुःखमयी वार्त्ता पहिले कही गई है। यह काम सिखोंके परिचित हितैषी सर हेनरी लारन्ससे होने तथा महारानीको यथासम्भव सुखसे रखने पर भी सिख लोग उनके उस बर्त्तावसे बड़े अप्रसन्न हुए थे। सो उनके पञ्जाबसे चले जाने पर नये नये अङ्गरेज कर्म्मचारी लोग महारानीसे जिस दुःखदायी रीतिपर बर्त्ताव करने लगे उससे

सिखोंका असन्तोष अपार हो जाना आश्चर्य ही क्या था? महारानी इस समय राजधानीसे बड़ी दूरके एक निर्जनसे किलेमें बन्द थीं। उनसे इस दशामें अङ्गरेज गवर्नमेण्टकी किसी प्रकार हानि होना सर्व्वथा असम्भव था। पर तौभी उनके अदनासे अदना काममें रसीडण्ट करी साहब शत्रुताका सन्देह देखने लगे। उन्होंने किलेमें रानी साहिबाके शत्रुओंको चुन चुन कर पहरेपर बैठाया और किसीसे उनका बातचीत तक करना बन्द कराकर कैदकी कठोर सख्ती बढ़ाने लगे। सन् १८४८ ई०की ९री फरवरीको जीवन सिंह नामक एक सिखने बड़े लाट डेलहौसीसे महारानीके दुःखोंको जता कर अनुसन्धानकी आशा की और अनुसन्धान न होने तक राजमातासे राजाओंके योग्य व्यवहार करनेकी प्रार्थना की। पर लाट साहबने इसका विचित्र उत्तर दिया। लिखा, "सरकार जीवनको महारानीका वकील नहीं मानती है। महारानीको यदि कुछ कहना हो, तो वह रसीडण्टके जरिये जाहिर करें।" जीवन सिंहने फिर दरखास्त दी, महारानीको जहां कैद किया गया है, वह घृणित अपराधियोंका कैदखाना है। वहां उनसे सामान्य कैदीकासा वर्त्ताव किया जाता है। धर्म्मगुरुसे भी उनकी मुलाकात रोक दी गई है। बांदी लौंडीतक भी उनके शत्रुओंसे चुनी गई है। खानेको जो कुछ चीजें दी जाती हैं, वह भी उनकी इच्छानुसार नहीं मिलती हैं। सिख मात्र इस अधाधुन्ध व्यवहारसे अप्रसन्न हैं। महारानीका पक्ष करना दूर रहे, महारानीके सम्बन्धकी बात तक उठानेवालेको रसीडण्टके घोर क्रोधका पात्र होना पड़ता है।" लाट डेलहौसीका शाही मिजाज इस अर्जीसे भी न टला।

इसके कुछ ही दिन बाद महारानीके नाममें एक बड़ी साजिशका कलङ्क लगाकर उनके वकील गङ्गाराम और एक कर्म्मच्युत सिख अफसर कान्ह सिंहको फांसी दी गई। खैरियत इतनी ही रही, कि खुली अदालतमें विचार करके महारानीका भी परिणाम ऐसा न किया गया। शायद पहिले इसकी भी युक्ति हुई होगी ; क्योंकि रसीडएटकी एक चिट्ठीमें इतनी बात देखते हैं, कि "महारानीका खुलाखुली विचार सिखोंका बड़ा अप्रिय होगा। जो हो रसीडएटके यह बात स्वीकार करने पर भी, कि "इस साजिशमें महारानीके फंसे रहनेका कोई भी प्रमाण दे नहीं सकता हूं," राजमाता भिन्दांको सजा देनेमें अङ्गरेजी सरकार जरा भी न हिचकी। उनकी सजा देश-निकालेकी हुई। हाय! अभागिनी अबलाने अपनी सफाईके लिये कितनी ही नजीरे दीं ; पर जो वीर अङ्गरेज जाति अबलाओंकी इज्जत करनेमें अपनेको धरातल पर सर्व्वोत्तम बताती है, उसीके प्रधान भारतीय अफसरने उसकी आह पर जरा भी ध्यान न दिया। कलमकी रगड़से मितराणा रणजीत सिंहकी अनाथ अबलाको पति पुत्रके राज्यसे निकाल बाहर किया ; और सिर्फ यही नहीं, बालक पुत्रके दस्तखत और मोहरदार हुकमनामेसे यह माताके देश निकालेकी आज्ञा प्रचार कराके निर्दयताको आसमानमें पहुंचा दिया। बनारसमें महारानीका यह नया कैदखाना स्थिर किया गया। मेजर मकग्रेगर साहब महारानीके रक्षक बनाये गये। महारानीको इस देश निकालेके साथ धमकी दी गई, "यदि वह मेजर मकग्रेगरकी आज्ञा न मानेंगी और किसी गुप्त साजिशमें फंसनेका ढङ्ग दिखावेंगी तो चुनारमें कैद की जायंगी और वहां उनकी कैद और भी कठोर होगी।

पर महारानीकी बनारसी कैद क्या सुलायम हुई, सो भी कोई सिख समझ न सका। भैरवाल सन्धिके अनुसार महारानीको वार्षिक डेढ़ लाख देनेकी व्यवस्था हुई थी। शिकोहपुरमें कैद करते समय डेढ़ लाखके बदले ४८ हजार की व्यवस्था हुई और बनारसमें सिर्फ वार्षिक बारह हजार रुपया देनेका प्रबन्ध किया गया। इस कमीका एक कारण भी दिखाया गया। बताया गया, कि महारानी जेवरोंको ले जाती हैं। पर याद रहे, ये जेवर डेढ़ लाखके तथा ४८ हजारके दिनों भी उनके साथ बराबर मौजूद थे। और ये जेवर भी महारानीके पास थोड़े ही रहने पाये? बनारस पहुंचनेसे पहिले ही रसीडराटने जाहिर किया, "कुछ साजिशकी चिट्ठी मिली हैं; पर निश्चय नहीं है, कि वे सच्ची हैं, कि नहीं। यदि सच्ची हों, तो महारानी बड़ी घृणित साजिशमें फंसी थीं।" इसी विचित्र सन्देह पर गवर्नर जनरलकी आज्ञानुसार बनारसमें महारानीकी कैद पहिलेकी कल्पनासे और भी बहुत कठोर की गई। वे जेवर सब छीन लिये गये। जेवर कुल ५० लाख रुपयेके थे, इसके उपरान्त डेढ़ लाख रुपया नगद भी था; पर इसकी कौड़ी भी छिननेसे बाकी न रही। और कहते लज्जा आती है, उस राजराजेश्वरी राजरानीको नङ्गी करके झाड़ा लिया गया। पर महारानीके रक्षक मेजर मक-ग्रेगरने अनुसन्धान कहा, "महारानीके पाससे जो कुछ कागज आदि मिले हैं, उनमें विद्रोह सूचक कुछ नहीं है।" विद्रोहका और कुछ प्रमाण न मिलने पर भी कैदकी अति कठोरता न घटाई गई। उक्त दयावान मित्र जीवन सिंहने १०००) रुपये माससे महारानीका गुजारा न होनेकी वकालत सरकारके सामने करनेके लिये कलकत्तेके

न्यूमार्च साहबको नियुक्त किया। पर न्यूमार्च साहबकी सारी वकालत व्यर्थ हुई। मसल मशहूर है, कि सोतेको लोग जगा सकते हैं, पर जागतेको कोई नहीं। न्यूमार्च साहबने विलायत जाकर इसकी चर्चाके लिये ५० हजार रुपया मांगा। पर सर्व्वस्व खोई हुई अनाथिनी नारी इतना रुपया कहां पावे?

एडविन आरनोल्ड साहब अपने इतिहासमें लिखते हैं, "महारानीकी इस सजाने सिखोंके वे हृदयको बहुत ही कातर किया। महारानीको अपने बालक पुत्र तथा प्रजासे दूर लाने पर सिखोंने जितनी घृणा जबानी प्रगट की थी, हृदयमें उससे कहीं अधिक जलते थे।" एडवार्डिस साहबने अपने इतिहासमें लिखा है, "सिख समाजमें वह महामान्य थीं, तथा सिखोंकी स्मृतिमें सदा उनका चेहरा विद्यमान रहता था; इस लिये उनके देश निकालेसे खालसा सेना बड़ी अधीर हुई।" रसीडण्ट करी बहादुरने बड़े लाटको लिखा था, "राजा शेर सिंहके खेमेसे खबर आई है, कि खालसा सेना महारानीके देश निकालेके समाचारसे बड़ी अधीर हुई है। सेनाके लोगोंने कहा है, कि महारानी खालसाकी माता हैं। जब कि वही देशसे निकाली गईं और बालक महाराज हमारे हाथमें हैं, तो हम अब दूसरे किसको रक्षा करें? हमे और किसीके लिये लड़नेका प्रयोजन मालूम नहीं होता है। हम लोग अब मूलराजके विरोधी न होकर अपने सेनापति और सरदारोंको कैद करके मूलराजके पक्षमें हो जायंगे।" पञ्जाबके सरकारी कागजोंसे मालूम होता है, "सन १८४८ ई० की २४ वीं नवम्बरको शेर सिंह तथा दूसरे सरदारोंने स्पष्ट ही स्वीकार किया था, कि महारानीके देश-निकालेके बादसे राजकार्य्य करनेमें बड़ी कठिनाई भुगतना पड़ती

है। उनसे जो वर्त्ताव किया गया है वह मित्रताके विलक्षण बाधक हैं। ऊंच नीच पञ्जाबवासी मात्र ही महारानीके देश निकालेसे बड़े भीत तथा घोर अप्रसन्न हैं।" काबुलके अमीर दोस्त मुहम्मद खांने कप्तान एवटको लिखा था, "पञ्जाब विद्रोहका प्रधान कारण महारानी झिन्दांका देशसे निकाला जाना है। इस एक ही विषयसे सिखोंका अप्रसन्न होना स्वाभाविक है। पर इसके अतिरिक्त कोई नौकरीसे छुड़ाया जाता है, कोई हिन्दुस्थानमें निर्व्वासित होता है इत्यादि कितने ही अपमान-सूचक उलट फेर हो रहे हैं। ऊंच नीच सब लोग इस प्रकार वर्त्तावसे मृत्यु हीको सम्मानकी वस्तु मानते हैं। और लोगोंकी बात जाने दीजिये, जो अङ्गरेजोंका इङ्गलिशमैन पत्र हिन्दुस्थानी विद्वेषके लिये प्रसिद्ध है, उसने सन १८४८ ई०की ९ री जनुवरीको लिखा, "महारानीकी कैद और देश-निकाला बड़े भयावने अत्याचारके कार्य्य हैं। * * * इस नारीसे जैसा कठोर वर्त्ताव किया गया है, वह हमारे जातीय कलङ्कका एक उदाहरण है।" पर किसी बातकी परवा नकर लाट डैलहौसीने इश्तिहार दिया, "महारानीकी कैद और देश-निकाला केवल सावधानताका ही काम नहीं, वल्कि सजाका नमूना भी है।" इस पर महात्मा वेल साहबने लिखा, "ऐसी सजा जिस प्रकार अत्याचारी है, वैसी ही अन्याय है। जो लोग रणजित-राज्यके हितैषी हैं, उनकी निगाहमें महारानीका देश निकाला जातीय वेइज्जती और रणजित सिंहके राज्यके हरलेनेका पूर्व्व लक्षण प्रतीत हुआ।" इस प्रकार अथाह शोक दुःख भयसे पञ्जाबने अपनी अधिष्ठात्री देवीका विसर्ज्जन देखा। सिखोंने चुपचाप स्वदेशमें अङ्गरेजोंका प्रताप वेहद

होते देखा। वे चुप तो रहे; पर ऐसी चुप्पी भीषण भविष्य दावानलका सूचना थी।

महारानीके देश-निकालेसे जो दावानल सिख जातिके हृदयमें धधकने लगी थी, मूलराजके विद्रोहको उचित समय पर न दबानेसे जिसके प्रकाश होनेका उपाय होगया था, और एक अविचारी अनर्थ अत्याचारसे वह सैकड़ों प्रचण्ड शोलोंमें जल उठी। पाठक! अब उस आखिरी अत्याचारका व्योरा सुनिये। हजाराके सरदार छत्र सिंहकी कन्यासे महाराज दलीप सिंहकी सगाई हुई थी। छत्र सिंहके जेठे बेटे राजा शेर सिंह दरबारी सेनाके सेनापति थे। छत्र सिंहने उन्हींकी मारफत रसीडण्टको विवाहका दिन ठहरानेकी अर्जी भेजी। मेजर एडवार्डिसके जरिये भी राजा शेर सिंहने इस विषयकी सिफारिश कराई। मेजर एडवार्डिसने स्पष्ट ही कहा, कि दिन ठहर जानेसे बूढ़े छत्र सिंहकी सारी चिन्ता ही दूर होनेके उपरान्त दहेज आदिका प्रबन्ध करनेका मौका ही प्राप्त न होगा, "बल्कि पञ्जाब-वासियोंके चित्तमें बालक-महाराजके राज्यच्युत होनेकी जो आशङ्का उपस्थित हुई है, इस विवाहका दिन ठहर जानेसे उसके दूर होनेकी भी बड़ी सम्भावना है।" इस अर्जी तथा सिफारिशका रसीडण्टने जैसा उलट-पुलट जवाब दिया, उससे लोगोंके चित्तमें मेजर एडवार्डिस द्वारा प्रकाशित आशङ्का और भी बढ़ गई। केवल यही उत्तर ही नहीं, बल्कि दरबारमें रहनेवाले तथा बिना रोक टोक रसीडण्टसे मुलाकात करनेकी शक्ति रखनेवाले छत्र सिंहके छोटे पुत्र गुलाब सिंहसे रसीडण्टने जो कुछ कहा सुना, उससे भी छत्र सिंहको इस विवाहके सम्बन्धमें एक प्रकार निराश होना पड़ा। यों निराशकर; छत्र सिंहसे

आगे जो अति कठोर व्यवहार किया गया, वही दूसरे सिक्ख-युद्धकी अग्नि बालनेमें तूफान स्वरूप हुआ।

सरदार छत्र सिंह जिस हजारा भूमिके शासनकर्त्ता थे, वह प्रचण्ड कट्टर मुसल्मानोंका वासस्थान था। इस झगड़ेली जातिके शासनकी सहायताके लिये रसीडराटने छत्र सिंहकी राजधानीमें अपने सहकारी कप्तान एवट साहबको भेजा। कप्तान एवटने दीवान ज्वाला साही तथा झण्डा सिंहसे जो घोर अत्याचारी वर्त्ताव किया था, उसीसे उनका चरित्र विलक्षण प्रकाशित होता है। दीवान ज्वाला साहीको उनके वर्त्तावके सम्बन्धमें पूर्व्व रसीडराट सर हेनरी लारन्सने लिखा था, "कप्तान एवट हरेक मामलेमें कुटिल अर्थ लगाकर न्यायको अन्याय सुझानेमें सदा उत्सुक रहते हैं। ज्वाला साहीकी भांति अच्छे सज्जन रईससे अत्याचार करना उनके उसी हटधर्म्मका परिचय है।" और झण्डा सिंहकी अधीन घुड़सवार सेनाके कुछ अंशके विद्रोही होने पर उन्हे भी विद्रोही मानने पर नये रसीडराट करी साहबने कप्तान एवटको लिखा था, "आपकी राय निरी बेजड़ है।" इसी रसीडराटने कप्तान एवटके सम्बन्धमें बड़े लाटको लिखा था, "आपने एवटके चरित्रको भलीभांति समझ लिया होगा। किसी साजिशकी गप्प मात्र सुनकर वह उसे सत्य समझ लेता है। पासके वा दूरके हरेक मनुष्यपर यहांतक कि अपने नौकरों पर भी उसे बड़ा सन्देह रहता है। और इसमें विचित्रता इतनी है, कि अपनी समझको वह कदापि भूल नहीं मानता है।"

ऐसेही चरित्रवाले कप्तान एवट सरदार छत्र सिंहकी सहायताके लिये नियुक्त हुए। पर सहायता क्या की?—वह

थोड़े ही दिनोंमें छत्र सिंहको बागी मानने लगे। मंझीमें कुछ दरबारी सेना छत्र सिंहकी अधीनतामें स्थित थी। उसका कुछ अंश बिगड़कर मूलराजकी बागी सेनासे मिलनेकी नीयत दिखाने लगा। यद्यपि छत्र सिंहकी आज्ञासे इस सेनाके अफसर लोग बागियोंको दबानेकी बड़ी बड़ी कोशिश करने लगे, तौभी कप्तान एबटको निश्चय विश्वास होगया, कि छत्र सिंहके इशारेसे यह सेना बागी बनना चाहती है। कप्तान एबटने जाहिर किया, "छत्र सिंह भयानक विद्रोही है; वह पञ्जाबसे अङ्गरेजोंको भगाना चाहता है। जल्द ही लाहौरके अङ्गरेजोंपर हमला करनेवाला है।" बस छत्र सिंहके साथ रहकर "प्राण गंवाना" उनको नामञ्जूर हुआ। हजाराकी राजधानीसे ३६ मील दूर सिरवांमें चलकर उन्होंने अपना मुकाम बनाया। वहां छत्र सिंहका जाना अथवा उनकी चिट्ठी पांसीतक लेना उनको नामञ्जूर हुआ। पर सरदार छत्र सिंह कैसे मनुष्य थे, वह रसीडण्ट करीकी जबानी ही सुनिये। रसीडण्टने कहा था, "छत्र सिंह वृढ़ और अशक्त हैं। पञ्जाबमें खालसाकी प्रधानताके दिनों उनसे अधिक हानि किसी दूसरे सिखको सहना न पड़ी था। पर अङ्गरेजोंकी अमलदारीमें उनकी तथा उनके बेटोंकी तरक्की होते देखकर बहुत लोग उनसे डाह रखते हैं। यह डाह उनकी पुत्रीसे दलीपकी सगाईकी बातसे और भी बढ़ गया है। आम पञ्जाबियोंमें इनका जरा भी प्रभाव नहीं है।" पर कप्तान एबटकी निगाहमें इस पृथ्वीपर कोई दूसरा बुद्धिमान अपने देखे न था। सो वह सहकारी मात्र होने पर भी, कब अपने अफसर रसीडण्ट साहबकी रायपर लट्टू बननेवाले थे ?

छत्र सिंह अपने बलात्कार कप्तानके इस अपूर्व बर्त्तावसे अकचका गये। उनका अभिप्राय वह कुछ भी समझ न सके। सो अपने वकीलको उनकी सेवामें भेज दिया। कप्तान एवट वकीलसे कह बैठे, "मैं तुम्हारे मालिकका एतबार नहीं करता।" इस असज्जन पनके वर्त्ताव पर कुछ भी एतराज न कर छत्र सिंहने एवटको बड़ी विनयपूर्व्वक पूछ भेजा, कि यदि सिरबांहीमें आपको रहना मञ्जूर हो तो मुझे अथवा मेरे पुत्र अतर सिंहको अपने पास रहनेकी इजाजत दीजिये, कि जिससे प्रजाके शासन पालनमें कोई विघ्न न होने पावे। पर सरदारकी यह अर्जी भी कप्तानको मञ्जूर नहीं हुई। वह छत्र सिंहको बागी कहकर ही निश्चिन्त न रहे। जिन कट्टर मुसल्मानोंके शासन करनेमें छत्रकी सहायता करनेको वह हजारामें भेजे गये थे, उन्हीं मुसल्मानोंको रुपयेका लोभ दिखाकर सरदारके विरुद्ध उभाड़ने लगे। एक तो मुसल्मान सदासे काफिर हिन्दुओंके खूनके प्यासे हैं, तिसपर धनका लोभ और फरङ्गीकी सहायता—सन १८४८ ई०की ६ठीं अगस्तको दलके दल हजारावासी मुसल्मान सरदार छत्र सिंहकी वासभूमि हरिपुर नगरके इर्द गिर्द जमा होने लगे। पक्षीकी सिख सेनाकी हरिपुर पहुंचनेकी राह कप्तान एवटके प्रबन्धसे रुक गई थी। इस लिये सरदारने सिर्फ नगररक्षक सेनाको तोप लेकर मैदानमें पधारनेकी आज्ञा दी। इस सेनामें कनोरा नामक एक अमेरिका-निवासी तोपखानेका एक अफसर था। जब उसे भी अन्य लोगोंके साथ तोप लेकर पधारनेकी आज्ञा दी गई, तब उसने कहा, कि मैं कप्तान एवटकी आज्ञाके बिना कहीं न जाऊंगा। फिर अनुरोध करने पर उसने सिर्फ नहीं ही न कहा, बल्कि दो तोपोंको भरकर धमकी दी, कि जो

कोई पहिले सामने आवेगा, उसेही मैं गोलोंसे उड़ा दूंगा। सरदार छत्र सिंहने पैदलोंके दो दलोंको तोप लानेकी आज्ञा दी। कनोराने एक सिख हावलदारसे इस पैदल दलपर गोला चलानेको कहा। पर हावलदारने इस पागलकी बात न मानी। कनोराने उस अभागेको चट तलवारसे काट डाला; आगे तोपोंको भी दागा; पर जब उनके गोले व्यर्थ हुए; तब पिस्तौलकी आवाजोंसे दो पैदलोंको जमीनपर सुलाया। दूसरे लहमेमें पैदलोंमेंसे कुछ एककी तलवारोंसे कनोराका पागलपन जीवनके साथ छूट गया।

रसीडण्ट साहबने इस भगड़ेकी कैफियत कप्तान और सरदार दोनोंसे मंगाई। उनको स्पष्ट ही मालुम हुआ, कि यह सब कप्तान एबटकी हठ तथा घोर अत्याचारका नतीजा है। इस विषयमें रसीडण्ट बहादुरने सारा दोष एबटको लगाकर एक कड़ी चिट्ठी भी लिखी। पर एबट साहबने इससे जरा भी न घबराकर छत्र सिंहको लिखा, "यदि छत्र सिंह कनोराकी हत्या करनेवालोंको मेरे हाथ सौंप दें, तो उनकी जागीर और सेना बनी रहेगी और कानूनके मुताबिक उनके इस चरित्रकी तहकीकात होगी एवं उसी दशा मैं हजारामें पूर्व्ववत शान्ति स्थापित करा दूंगा।" इस चिट्ठीसे भी यह बात एक प्रकार सिद्ध हो जाती है, कि कप्तान एबटने ही विद्रोहकी यह अशान्ति फैलाई थी। खैर, सरदार छत्र सिंह क्योंकर कनोराकी सच्ची सजा देनेवालोंको सजाके लिये कप्तान एबटके यहां भेज सकते थे? अपने सरदारकी आज्ञा न मानकर जो बागी हुआ था तथा बगावतकी हालतमें कई एक प्रजाकी जान जिसने ली थी, उसकी सजा करने-

वालोंको इनाम देना ही उचित था; और सुशासक सरदार छत्र सिंह उनको इनाम दे भी चुके थे। श्रीमान् वेल साहबके इतिहाससे यह भी मालूम होता है, कि यदि सरदार छत्र सिंह इन निर्दोष सिपाहियोंको एवटके हाथमें दे देते तो अविचार अन्याय होनेके उपरान्त उनकी ही प्रजासे उनकी जान निःसन्देह जाती रहती। सो छत्र सिंह इतने दिनके बाद जागीर जानेकी धमकी रहते भी कप्तान एवटकी इच्छा पूरी न कर सके।

पर सरदार छत्र सिंह सम्पूर्ण निर्दोष होने पर भी अङ्गरेजोंसे अपने खान्दानकी उन्नति होनेके लिहाजसे अङ्गरेजाधम एवटकी क्षमा तक मांगनमें प्रस्तुत थे। एवटको यह बात तो मञ्जूर ही न हुई; उल्टे उसने छत्र सिंहके विरुद्ध और भी वाहियात तोहमत लगानेको कहा, कि छत्र सिंह जम्मूके राजा गुलाब सिंह, उनके पुत्र रणबीर सिंह तथा भतीजे जवाहिर सिंहको अङ्गरेजोंके विरुद्ध उभाड़ना चाहते हैं। रसीडण्ट साहबने इस विषयकी तहकीकातके लिये कप्तान निकलसनको नियुक्त किया। कप्तान निकलसनने सिर्फ कप्तान एवटकी बातको झूठी ही नहीं कहा, बल्कि जिन चिट्ठियोंके भरोसे एवटने छत्र सिंहको कलङ्कित किया था, वेही चिट्ठियां उनकी निर्दोषिताके प्रमाणस्वरूप हुईं। इसके उपरान्त तहकीकातसे कप्तान निकलसनने स्पष्ट ही जान लिया, कि सरदार छत्र सिंह पूर्व्व कथित कलङ्कमें भी सम्पूर्ण निर्दोष ही हैं; सब झगड़ा कप्तान एवटके घोर अन्यायसे सङ्घटित हुआ था। कप्तान निकलसनने रसीडण्टको भी वैसा ही समझाया। पर कुछ दिन बाद न जाने क्यों, छत्र सिंहको लिखा, "आप बिना विलम्ब कनोराके हत्यारोंको लेकर मेरे

होकर हाजिर हो जाइये। उस हालतमें मैं आपकी जीवन-रक्षाका जिम्मेदार हो सकता हूं। पर आप अपनी निजामत और जागीरकी आशा अब न कीजिये।" पञ्जाब सम्बन्धी सरकारी कागजोंकी किताबसे मालूम होता है, कि रसीडण्ट करीने भी निकलसनकी भांति दोरुखा चरित्र प्रगट किया। सन् १८४८ ई० की २३ वीं अगस्तको उन्होंने मेजर एडवार्डिसको लिखा, "छत्र सिंह सम्पूर्ण निर्दोष है; कप्तान एवट इस सम्पूर्ण अनर्थकी एक मात्र जड़ है।" उसी २१ वीं अगस्तको उन्होंने निकलसन साहबको आज्ञा दी, "छत्र सिंहकी जागीर और निजामत छीनकर उसको उचित सजा कीजिये।" इसीके दूसरे दिन उन्होंने एवटको भी फिर धमकी दी, "तुम्हारा चरित्र न्यायसे संपूर्ण विरुद्ध है; कनोराकी उचित सजाको कदापि तुम हत्या नहीं कह सकते हो।

सो कौन नहीं कहेगा, कि अङ्गरेज रसीडण्टने निर्दोष जानने पर भी छत्र सिंहसे महा अत्याचार किया। मानों उन दिनों पञ्जाबके अङ्गरेज कर्म्मचारियोंमें न्यायका नाम न था। हरेक मनुष्यको वे मट्टीके खिलौनेकी भांति कभी ताक पर बैठाते और कभी पटककर तोड़ डालते थे। अन्ततः सरदार छत्र सिंहसे वैसाही वर्त्ताव किया था। उनको सजा दी गई; पर अपराध न सुनाया गया; सो अपराधसे रिहाई पानेका मौका उन्हें क्यों कर देते? सरदार छत्र सिंहने विनयपूर्व्वक प्रार्थना की, "मेरे समान अङ्गरेजोंके परम भक्तसे क्यों ऐसी सख्ती की जाती है। यदि कोई व्यर्थ सन्देह उपस्थित हुआ हो, तो कहिये, मैं उसे बिना विलम्ब दूर कर दूंगा।" वह नहीं जानते थे, कि रसीडण्ट एवटको दोषी और मुझे निर्दोष जानने पर भी मुझे

यह सजा देते हैं। शायद जाननेसे फिर यह गिड़गिड़ाहट प्रकाश न करते। खैर, जब उन्होंने देखा, कि अर्जी निष्फल हुई, धन सम्पद सब ही लुट जायगी, तब सामान्य शेष जीवनका मोह छूट गया—उस हालतमें किस स्वाधीन जातिके पुरुषको तुच्छ जीवनका मोह हो सकता है? बुढ़ापेकी कमजोर नसोंमें फिर जवानीकासा उत्साह हो गया। उन्होंने अपनी समझके अनुसार अत्याचारियोंके विरुद्ध अस्त्र ग्रहण किया। महारानी झिन्दांके देशनिकाले तथा दूसरे अनेकानेक कारणोंसे जो लोग नित्य अप्रसन्न हो रहे थे, उनमेंसे दलके दल लोग उनके झण्डेके नीचे अङ्गरेजोंके विरुद्ध लड़नेके लिये उपस्थित होने लगे। पञ्जाब राज्यमें बहुत दिनकी बाद यह पुरानी सरगरमी दीखने लगी।

छठवां अध्याय।

दूसरा युद्ध।

मूलराजकी विद्रोही-सेनामें राज्यकी क्रोधान्ध सेना तो बहुत दिन पहिलेसे मिलने लगी थी; अब सरदार छत्र सिंहकी पताकाके नीचे भी अनेक लोग एकत्रित होने लगे। इन दो प्रधान विद्रोही-मण्डलियोंके उपरान्त राज्यके अन्य प्रान्तोंमें भी पूर्व्वोक्त कारणोंसे अप्रसन्न सिख लोग अङ्गरेजोंकी अधीनतासे "देशकी, धर्म्मकी तथा शान मानकी" रक्षाके अर्थ कटिबद्ध हो रहे थे। पर तौभी इस उठानको देशव्यापी नहीं कहा जा सकता है। राज्यके प्रधान प्रधान सरदार लोग तबतक अङ्गरेजोंके हितकारी तथा आज्ञाकारी बने हुए थे। मिसर साहब दयाल नामक सिख राज्यके एक अङ्गरेज-प्रेमी कर्म्मचारीने सन् १८४८ ई०के आरम्भमें बड़ी बहादुरीके साथ महाराज सिंहके विद्रोहको दबाया था। महाराज सिंहकी अधीनतामें सिख सेनाके पांच हजार जवानोंने कट मरनेकी प्रतिज्ञा की थी। पर लड़ाईमें बड़ी हत्या तथा स्वयं महाराज सिंहको गिरते देखकर बाकी सेना तितर बितर होगई थी। उधर दरबारके दूसरे एक कर्म्मचारी दीवान दीना-नाथने रसीडण्टद्वारा हजारा खण्डका विद्रोह दबानेमें नियुक्त होकर छत्र सिंहका बहुत कुछ हौसिला व्यर्थ कर दिया था। इन कर्म्मचारियोंके इस प्रकार वर्त्ताव तथा कई एक बड़े बड़े सर-दारोंसे रसीडण्ट-द्वारा मूलराजका विद्रोह दबानेमें नियुक्त होनेसे स्पष्ट ही प्रकाश होता था, कि यह विद्रोह देशव्यापी नहीं था। सन् १८५७ ई०का हिन्दुस्थानी गदर जिस प्रकार

केवल असन्तुष्ट देशी पल्टनों मात्रका अपने राजाके विरुद्ध उठ खड़ा होना था, वैसा ही यह दूसरा सिक्खयुद्ध केवल राज्यकी अप्रसन्न सिख-सेनाका जबरदस्ती राज्यके प्रबन्धमें हस्तक्षेप किये हुए विदेशी अङ्गरेजोंके विरुद्ध खड़ा होना था। पर सिख-सेनाके इन महावीरोंका उठान सामान्य न था ; विशेषकर एक नई निराली घटनासे यह विद्रोह अति भयानक होगया—यहां-तक कि अङ्गरेजोंकी आंखोंमें चकाचौंध लग गई। बड़े भय विस्मयसे कातर रहकर चटपट अच्छे परिणामकी आशा करना अङ्गरेजोंके समान महावीरोंसे भी बन न पड़ा।

पहिले ही कह चुके हैं, कि बुद्धिमान सिखोंके हजार मना करने पर भी रसीडण्ट करीने सिख-सरदारोंको समझाया, कि तुम्हें मूलराजका विद्रोह मलतानमें चलकर दबाना ही होगा। वे गिड़गिड़ाये, "हम हजार दफा मुलतान जानेको तय्यार हैं, मूलराजसे लड़नेमें हमको कुछ उज्र नहीं है ; पर इसमें मुश्किल इतनी है, कि सिख-सेना संपूर्ण रूपसे हमारी आज्ञाके अधीन नहीं है। महारानी झिन्दांके देशनिकालेसे उनका चित्त अङ्गरेजोंके विरुद्ध खौला उठा है ; वे हम लोगोंको अङ्गरेजोंके हितकारी समझकर देश-विद्रोही तथा धर्म्म-विद्रोही मानते हैं। अवसर पाने पर वे या तो हमे विद्रोही बननेमें लाचार करेंगे, अथवा हमारी गर्दन उतारकर अपनी नफरतका तर्पण करगे। विशेष मूलराजकी विद्रोही सेनाके सम्मुख उपस्थित होनेसे इनकी ऐसा प्रवृत्ति अदम्य हो जायगी।" पर रसीडण्टने इन बातोंपर जरा भी ध्यान न दिया। उन लोगोंको सिख-सेना लेकर मूलराजका विद्रोह दबानेके लिये मुलतानमें जाना ही पड़ा।

सरदार छत्र सिंहके पुत्र राजा शेर सिंह सिख सेनाके सेनापति थे। उनको अपनी सेनासहित तथा सहकारी शमशेर सिंह, अतर सिंह आदि सरदारोंके साथ मुलतान पधारना पड़ा। वे वहां जाकर मेजर एडवार्डिसके मतानुसार कार्य्यकर उनको बड़ी सहायता करने लगे। मेजर एडवार्डिसने सन् १८४८ ई०की १२वीं जुलाईको रसीडण्टसे इनकी अङ्गरेज-भक्ति स्वीकार करनेमें कहा, "सरदार लोग सब प्रकार हमारे पक्षपाती हैं। यद्यपि शेर सिंहकी सेनाका अधिक भाग अविश्वासी होगया है, तौभी राजा शेरका ऐसाही कुछ प्रभाव है, कि उनमेंसे किसीको चूं तक करनेकी हिम्मत नहीं होती है। जब कभी कोई कुछ चञ्चलता प्रगट करता है, वह तुरन्त उसको कड़ी सजा करके सबको डराते हैं।" मूलराज इस समय सब तरह पुष्ट होने पर भी एडवार्डिसके पीछे सदुवम विषयके बाद इस पुरुष सिंहको देखकर बहुत डरा। शेर सिंहको कौशलसे अपनी ओर लानेके लिये उसने दूत भेजा। पर शेरने दूतको मुहमें स्याही मलकर उसके स्वामीकी सेवामें लौटा दिया। केवल शेरकी प्रचण्डता ही सिख-सेनाको मूलराजसे मिलने न देती थी। सो यह कौशल ध्वंस होने पर, मूलराज शेरसे बचनेका दूसरा उपाय ढूंढ़ने लगा। इस समय शेरकी हत्या कराना ही उसे एकमात्र सदुपाय सूझा। पर जो नीच सिख सुजान सिंह इस घृणित कार्य्यमें नियुक्त हुआ था, उसे गिरफ्तार होकर तोपसे उड़ना पड़ा। किन्तु इस घटनासे सिख सेनामें असन्तोषकी वृद्धि पहिलेसे इतनी अधिक हुई, कि राजा शेर सिंहकी भांति महा प्रतापीको भी उन्हे सम्भालना कठिन जान पड़ने लगा। राजा शेरकी इस कदर अङ्गरेज-भक्तिके उप-

हारमें उनको अङ्गरेजोंका सिर्फ सन्देह ही प्राप्त हुआ। केवल एकाल लड़नेवाले एडवार्डिसके सिवा दूसरे बाहरी अङ्गरेज उनको वागी समझने लगे।

पर अङ्गरेजोंसे पहिले प्रतिष्ठा प्राप्त करनेसे राजा शेरके हृदयमें अङ्गरेजोंकी कृतज्ञता इस प्रकार समाई हुई थी, कि यह सन्देह उसे हटानेमें समर्थ न हुआ। अथवा सिर्फ यही क्यों, जब पहिले पहिल कप्तान एबटद्वारा पिता छत्र सिंहपर घोर अत्याचार होनेकी खबर उनके कानोंमें पहुंची, तब भी वह विचलित न हुए। उस समय मेजर एडवार्डिससे उन्होंने सिर्फ कप्तान एबटका अन्याय और पिताके कार्य्योंका न्याय ही प्रगट किया। केवल बातोंसे ही उन्होंने तबतक हृदयमें स्थित अनन्त अङ्गरेज-प्रेमका परिचय ही नहीं दिया, बल्कि १ली सितम्बरको मुलतानके सम्मुख जङ्गलमें मूलराजकी सेनासे एडवार्डिसकी बड़ी दुर्गति होते रहनेकी खबर सुनकर उस दिन बड़ी दक्षताके साथ उनकी रक्षा की, तथा ३री तारीखको बड़ी बहादुरीसे विद्रोहियोंको मार भगाकर कार्य्यसे भी उस अटल प्रेमका परिचय दिया। इस बर्त्तावसे मोहित होकर मेजर एडवार्डिसने रसीडण्टको लिखा, "शेर सिंहने अबतक अङ्गरेज-प्रेमका उज्वल दृष्टान्त दिखाया है। उनका कार्य्य देखकर स्पष्ट ही मालूम होता है, कि दिली इच्छाके बिना वह ऐसा अच्छा काम नहीं कर सकते हैं। मुलतानमें आनेके बादसे, विनय करके, भय दर्शाके अथवा सजा देके—किसी न किसी प्रकारसे उन्होंने सेनाको कर्त्तव्यमें सन्नद्ध रखनेकी त्रुटि नहीं की है। राजा शेरने अपनी सेनाओंकी विद्रोहिता दबानेके लिये इस प्रकार प्रयत्न किया है, कि सिख-सेनाके लोग उनसे चिढ़कर उनको सिखनामकी ग्लानि तथा मुस-

ध्यानका जनानक कहते हैं।" १०वीं सितम्बरकी चिट्ठीमें भी उन्होंने लिखा, "राजा शेर सिंह और उनके अधीन सरदार लोग विद्रोही सिखोंके दबानेमें कटिबद्ध हैं।"

ऐसेही वक्त मेजर एडवार्डिसकी बहुत लिखापढ़ीके बाद अङ्गरेजी सेना मुलतानमें पहुंची। आगे ४थी सितम्बरको किलेको घेरने योग्य तोपोंके उपस्थित होने पर आक्रमण करनेका पूरा प्रबन्ध कर लिया गया। अवश्य ही सेनाकी तन्दुरुस्ती बिगड़नेका जो बहाना प्रकट कर अबतक अङ्गरेजी सेना नहीं भेजी गई थी, वह संपूर्ण निरर्थक ही प्रतीत हुआ। अन्य ऐतिहासिकोंकी बात जाने दीजिये, जिस मार्शमन साहबकी अपने इतिहासमें डेलहौसीका यश गाते गाते गालोंमें फफोले पड़े थे, उन्होंने ही लिखा है, "आश्चर्यका विषय यह है, कि मुलतानपर धावा करनेसे पहिले जनरल ह्विशकी सेना जिस प्रकार तन्दुरुस्त थी, रणयात्राके अवसर पर उससे बहुत अधिक हरी भरी देखी गई। सो मुलतानमें जल्द सेना भेजनेके विरुद्ध जो आपत्ति उठाई गई थी, वह सिर्फ निर्म्मूल आशङ्का ही थी। खैर, यह आई हुई अङ्गरेजी सेना राजा शेर सिंहकी सेनासे पुष्ट होकर ऐसी प्रचण्डताके साथ मूलराजकी सेनाको हटाने लगी, कि १२वीं सितम्बरको अङ्गरेजी सेना मुलतान दुर्गसे सिर्फ ८०० गजपर स्थित हुई। पर ऐसेही वक्तपर पुत्रको पिताकी अङ्गरेजोंके हाथसे बड़ी दुर्गति होनेका दुःखदायी समाचार प्राप्त हुआ। जो शेर सिंह अबतक अनन्त अङ्गरेज-प्रेम प्रगट कर केवल अङ्गरेजोंकी विजय मात्रकी कल्पना कर रहे थे; अङ्गरेजोंसे सरदार छत्र सिंहकी जागीर छिन जानेकी खबरसे उनके चित्तकी गति एकबार ही पलट गई। महा-

रानी भिन्दांका देश-निकाला, बहिनके विवाहमें विघ्न इत्यादि अङ्गरेजोंके अनेकानेक अत्याचार उनके हृदयको सपमों बिच्छुओंकी भांति डंसने लगे। सो जो तलवार अबतक अङ्गरेजोंके हितार्थ उठाई जाती थी, वह अङ्गरेजोंको पञ्जाबसे उखाड़नेके लिये चमकने लगी। जिस मूलराजके दूतको शेर सिंहने कुछ ही दिन पहिले बड़ी बेइज्जती की थी, पिताके बेइज्जतीका बदला लेनेको उन्होंने उसी विद्रोहीका पक्ष ग्रहण किया।

मेजर एडवार्डिसने अपनी किताबमें लिखा है, "निष्पक्ष ऐतिहासिक बातको स्वीकार करना होगा, कि अटारीवाले राणा शेर सिंह, मुलतान विद्रोह और दूसरे सिखयुद्धके परम विरोधी थे और उसके रोकनेमें उन्होंने यथासाध्य चेष्टा की थी।" पर पिताकी बेइज्जती किस हिन्दुस्थान-निवासीको सह्य हो सकती है? एबीडएटकी अन्याय निर्दय आज्ञा सुनते ही उनका वीरहृदय एकबार ही खौल उठा। लाहौरमें स्थित छोटे भाई गुलाब सिंहको उन्होंने लिखा, "सिंह साहब (अर्थात् पिताजी) मुझे बारम्बार लिखते थे, कि मैं कप्तान एबटकी आज्ञाका सदा पालन करता हूं, पर हजाराके मुसल्मानोंसे मिलकर उस अङ्गरेजने उनसे बड़ा अन्याय किया है। तथा उनको बड़ा दुःख और यन्त्रणा दी है। वह सिख-सेनाको ध्वंस करनेके लिये बड़ा प्रयत्न भी कर रहा है। * * * यदि सिंह साहबकी आज्ञा और मेरी सलाह पर तुम्हें कुछ भी श्रद्धा हो तो, इस पत्रके पाते ही सिंह साहबसे जा मिलना, नहीं तो जम्मू अथवा अन्यत्र कहीं चले जानेमें कुछ भी काल न गंवाना। * * * स्मरण रखना, पिताकी आज्ञा पालना ही सन्तानका एकमात्र कर्त्तव्य है, क्योंकि जीवन दो ही दिनका है। दूसरी चिट्ठीको

अपेक्षा मत करना—भगवान हमारे सहाय हैं। यदि जीवित रहे, तो फिर मुलाकात होगी, नहीं तो भगवानकी इच्छा ही पूरी होगी।" छोटे भाईको यह चिट्ठी लिखनेके बाद, शेर सिंहने इश्तिहार दिया, "संपूर्ण पञ्जाबवासी तथा अन्य लोगोंको भी मालूम है, कि महाराजा रणजीत सिंहकी विधवा रानीसे फरङ्गियोंने कैसा भयानक अत्याचार और घोर असम्मानका वर्त्ताव किया है तथा प्रजासे कैसी अनोखी निष्ठुरता दिखाई है। पहिले पञ्जाबियोंकी मातास्वरूपिणी महारानीको कैद करके देशसे निकाल देकर उन्होंने सुलहनामेको बिगाड़ा है, फिर रणजीतके पुत्ररूपी हम सिखोंसे ऐसा अत्याचार किया है, कि अपने सर्व्वस्वरूपी धर्म्मसे हो हम च्युत हो रहे हैं; और राज्यका पूर्व्व गौरव भी लुप्त हो रहा है। सो अब क्या देखते हो, आओ, सर्व्वस्वकी रक्षाके अर्थ एकत्रित हो जावें।" यह इश्तिहार देकर वह मूलराजसे जा मिले। पर मूलराज इस वीर सिंहके हृदयका हाल समझ न सका। धर्म्मपुस्तक छुलाकर प्रतिज्ञा करा लेने पर भी उसका अविश्वास न छूटा; इस लिये शेर सिंह पितासे मिलनेको पधारे।

शेर सिंहके अङ्गरेजी सेनाको दुर्ब्बल कर चले जानेसे अङ्गरेजोंमें महाभय उपस्थित होना, मूलराजको शेरके त्याग देनेसे उनमें फिर किसी कदर आशा होना, उस समय मूलराजको अपने भ्रमका बोध होना और फिर सिख-सेनापतिकी सहायता मांगना; पर इस विषयमें निराश होने पर भी काबुल नरेश दोस्त मुहम्मदसे कुछ सेनाकी सहायता पाकर किसी कदर आशान्वित होना, आगे अङ्गरेजोंसे मूलराजकी पराजय और अङ्गरेजोंसे बागियोंको सजा मिलना तथा विद्रोहियोंके सरदार मूलराजका

साथेपानी भेजा जाना इत्यादि घटनाओंसे इस इतिहासका कम ही सम्बन्ध है। यहां सिर्फ प्रचण्ड सिख-सेनासे संसार-विजयी अङ्गरेज वीरोंके दूसरे युद्धमें भिड़ जानेका अपूर्व थोरा सुनाना है। इतिहासोंमें इस प्रकार भीषण युद्ध बहुत दुर्लभ है। छत्र सिंहके युद्धकी पताका उठाते ही तो दलके दल सिख उसके नीचे खड़े होने लगे थे; अब राजा शेर सिंहके सिर उठानेसे उन सिख-वीरों विक्रम अटल होगया। शेर सिंहका इश्तिहार प्रचारित होते पिशावरकी सेना अपनी शासक-मण्डलीके विरुद्ध तलवार चमकाने लगी। अङ्गरेजोंको खैबर घाटीकी तरफ भागकर उनसे जान बचाना पड़ी। अङ्गरेजोंका सौभाग्य एक प्रकार तेज ही समझना चाहिये, कि उन दिनोंके प्रायः ४ लाख पञ्जाब-वासियोंमेंसे हदसे हद ६० हजार सिख उनको मार भगानेको उद्यत हुए थे। इनमें सिख-सेनाके लोग ही अधिक थे, दूसरे लोग बहुत थोड़े ही एकत्रित हुए थे। सरदार लोग भी बहुत कम इनमें शामिल हुए थे। जो हुए थे, उनमेंसे बहुतेरे इस लड़ाईकी गरमीसे जलती हुई सेनाके हाथ जीवन जानेके भयसे उनके साथ अङ्गरेजोंके विरुद्ध लड़नेमें लाचार हुए थे। स्वयं एडीवर्डसने स्वीकार किया है, "४थी अक्टोबरसे पहिले कोई सरदार विद्रोहियोंमें शामिल नहीं हुआ था।"

मुलतान-विद्रोहको दबानेमें जिस लाट डेलहौसीने बड़ा विलम्ब कर सिखोंको अपना पूर्व्वसञ्चित असन्तोष प्रगट करनेका ऐसा सुन्दर मौका दिया था, उन्होंने अवश्यही इस उठानके विरुद्ध अङ्गरेजी सेनाको खड़ी करनेमें जरा भी विलम्ब न किया। इससे पर-राज्यहारी लाट डेलहौसीकी राजनीतिका अभिप्राय चाहे जो कुछ प्रगट हो, पर सब लोगोंने देखा, कि लाट

साहबने झटपट इश्तिहारके जरिये तलवार न उठानेवालोंको निर्भय तथा सरदारोंपर अङ्गरेजी सेनाको रसद आदि सब विषयोंकी सहायता देनेकी आज्ञा, और तलवार धारण करनेवालोंको तबतक सचेत होकर अङ्गरेजोंकी भीषण सजासे बचनेके लिये सावधान कर जङ्गी लाट गफ बहादुरको फीरोजपुरमें सेना इकट्ठी करनेकी आज्ञा दी। देखते ही देखते ९५ हजार प्रचण्ड सेना शत्रुओंका खून चूसनेके उत्साहसे फीरोजपुरमें कूदने लगी; और एक सौ बबूलगावनी तोपें भविष्य अग्निवृष्टिकी भीषणता सुझाने लगीं। सन् १८४८ ई॰की २२वीं नवम्बर, इस गुरु रक्त-लीलाकी साइत विचारी गई। उस तारीखको प्रधान सेनापतिने ब्रिगेडियर कौलिन कम्बल और कोर्टियनको हुक्म दिया, कि तुम रामनगर चलकर अपनी सेना सिखोंपर चढ़ा दो। उन्होंने आज्ञा तो तामील की; पर रामनगरमें सिख सेनाका चिन्हतक न देखा। सो अङ्गरेजोंको सिखोंकी स्थिति गति आदि जादूसी ज्ञान पड़ी। आगे जब सिख-सेना नजर आई, तब अङ्गरेजोंकी तोपोंसे आवाज केवल व्यर्थ ही होने लगी। एक भी गोला सिखोंपर न गिरा। अङ्गरेज लोग सिखोंके और भी नजदीक जाकर गोले छोड़नेके अभिप्रायसे तोपोंको आगे ले जाते हुए सोचने लगे, कि हमारे समाचार देनेवालोंको अपनी चाल ढाल एक रीतिकी दिखाकर हमारे आनेसे पहिले तुरत फुरत अपनी स्थिति और ही ढङ्गकी बनाके सिखोंने हमको यह धोखा दिया। पर इस गोरखधन्धेसे बचकर अङ्गरेज लोग नजदीकसे उनपर गोले गिराते हुए, जब उनको हानि पहुंचानेपर थे, तब सिखोंने आगे बढ़कर अपने गोलोंकी वृष्टिसे अङ्गरेजी तोपोंको काना बना दिया; अङ्गरेजोंको एकबार ही मोहित

कर लिया। अङ्गरेज, सिखोंके इस प्रचण्ड विक्रमको सहनेमें समर्थ न हुए। किसानोंके हंसुओंसे खड़की भांति कटनेसे जान लेकर भागना ही उस समय उनको सुबुद्धि सूचित हुई। वे दो तोपें और बहुतसी रसदपूरित गाड़ियां अपने पीछे छोड़कर बड़ी घबराहटके साथ भागे।

प्रथम आक्रमणमें पराजयका यह कुलच्छण देखकर प्रधान सेनापति लाट गफको बहुत ही लज्जित होना पड़ा। पर हृदयमें इस कदर घबराहट उपस्थित हुई थी, कि फिर आक्रमण करना दूर रहे, कई एक बेतरह डरे हुए अङ्गरेज-अफसरोंको सलाहसे अपनी छावनी त्याग देकर भागना भी उनको अनुचित सूचित न हुआ। बृटिश सेना भागने लगी, सिख-सेना उसको पछियाती हुई नजदीक पहुंचकर तथा लड़ाईके लिये छाती फुलाकर धिक्कारके साथ ललकारने लगी। यह धमकी बहुतेरे अङ्गरेज वीरोंको असह्य हुई। जिस विलियम हैवलाकने पेनिन-सुला युद्धमें तथा इतिहास-प्रसिद्ध वाटरलू क्षेत्रमें महावीर नेपो-लियनसे लड़कर अनन्त यश प्राप्त किया था, उनके लिये हिन्दु-स्थानी कालोंका यह घोर अहङ्कार क्योंकर सह्य होना था? इस अहङ्कारको एक बारही तोड़ देनेके लिये उन्होंने प्रधान सेना-पति लाट गफसे इनपर हमला करनेकी आज्ञा मांगी। बहुत कहने सुनने पर लाट गफने उनको प्रार्थना मञ्जूर की। पर कहा, देखो, यदि आक्रमणका सुबीता हो, तो आक्रमण करो, नहीं तो बृटिश जातिका मूल्यवान खून गिरानेका प्रयोजन नहीं है।

बस हैवलाक साहब कुछ भी विलम्ब न कर दो पल्टन घुड़सवारोंके साथ विजयी सिखोंपर चढ़ गये। आक्रमण बड़ा

भीषण हुआ; पर महावीर सिखोंने इन भागनेवाले अङ्ग-रेजोंकी तरफसे आक्रमण होनेकी जरा भी सम्भावना न रहनेका विचार रखने पर भी इनके आक्रमणको इस वीरतासे सह्य लिया, कि अङ्गरेज चकित होगये। देखते ही देखते अगणित अङ्गरेज खेतमें सो गये। हैवलाकको उस समय मानो "मरता क्या न करता" का प्रत्यक्ष भाव उपस्थित हुआ था। ब्रटिश रक्तकी तेज नदी बहते रहने पर भी उनको चैतन्य न हुआ, वह आगे बढ़ते ही गये। और केवल आगे बढ़ना ही क्यों, अमानवी साहससे उन्होंने सिख-सेनाके तत्काल ही बना लिये हुए व्यूहको भेद भी लिया। पर सबही आसन्नकालकी विपरीत बुद्धिसा प्रतीत हुआ। ज्योंही वह व्यूह तोड़नेके आनन्दसे उत्साहित होकर अपनी सेनाको "मेरे पीछे आओ" कहते हुए आगे बढ़ रहे थे, त्योंही सिंह-विक्रमी सिख लोग व्यूह टूटनेके अपमानका बदला लेनेको चारों ओरसे गोलोंके ओले बरसाने लगे। गोलोंकी उस भयावनी वर्षासे अङ्गरेजोंको केवल अन्धकार ही अन्धकार सूझा। हरेक तोपकी अव्यर्थ आवाजसे दलके दल अङ्गरेज जमीनपर बिछने लगे। अन्तमें हैवलाक पतङ्गका पतन हुआ; बची बचाई ब्रटिश सेना अपने मरे सेनापतिकी कुबुद्धि-पर अफसोस प्रगट करती हुई, भागकर पहिलेके भगेड़ साथियोंसे मिलनेको बेतहाशा दौड़ी। योंही सिखोंके आनन्द और गोरोंके हाहाकारके साथ रामनगरका भीषण युद्ध शान्त हुआ। प्रधान अङ्गरेज सेनापति लाट गफने आश्चर्यके साथ विचारा, कि इतने दिन एक प्रकार स्वाधीनतासे च्युत तथा युद्धसे वर्जित रहने पर भी सिखोंका पूर्व्व वीर्य्य बिगड़ा नहीं है। फिर दरबार सिख-सेनापतिके सेनाके पक्षपाती रहनेके

कारण प्रथम सिखयुद्धसे यह युद्ध कहीं भयानक है। और अङ्गरेजी सेनाने सिखोंको और भी एक विषयमें पूर्ववत् दृढ़ देखा ;—वह सिखोंका युद्धके कैदियोंसे वर्त्ताव था। रामनगरके युद्धमें जो शत्रु सिखोंके हाथ कैद हुए थे, सिख-वीर शेर सिंहने उनको भलीभांति खिला-पिलाकर अङ्गरेजी छावनीमें भेज दिया। उदार वीर चरित्रकी ऐसी विमल प्रभा और कहां देखनेमें आवेगी ?

लाट गफने आगे रामनगरसे तीन कोस पर अङ्गरेजी सेनाकी छावनी बनाई। वहांसे सिखोंपर कुछ दिनोंतक आक्रमण करनेकी कल्पना त्यागकर वह बड़ी बड़ी तोपोंको मंगानेका प्रबन्ध करने लगे। उन तोपोंके आजाने पर १री डिसम्बरको उन्होंने सिखोंपर दो-तरफा आक्रमण करनेका विचार किया। शेर सिंहकी सेनाको सम्मुखसे आक्रमण करनेका भार अपने मत्थे रखकर पेनिनसुला युद्धके प्रसिद्ध मेजर जनरल सर जोसफ थेकवेलको चनाव पारकर सिखोंपर बांई ओरसे आक्रमण करनेकी आज्ञा दी। इसके उपरान्त लाट गफने उतने दिन एक स्थानमें स्थित रहकर विजयकी और एक निन्दनीय तरकीब निकाली थी। सिख-सेनाके पुरबियोंको धनका लालच देकर युद्धके अवसर पर अङ्गरेजोंका हित करनेमें राजी किया था। सो दो-तरफा आक्रमण और पुरबियोंसे सहायता पानेकी आशा—इन दोनो विषयोंकी चर्चा लाट गफको विजयका स्वप्न दिखाने लगी। उक्त १री डिसम्बरको थेकवेल साहबने ७ हजार सेनाके साथ चनाव पारकर रात्रिके समय चुपके चुपके साज-गाजके साथ अपने वीरोंको तय्यार होनेकी आज्ञा दी। पर कौशलियोंके चांई शेर सिंहने अङ्गरेजोंका यह कौशल ताड़

लिया। वह कुछ सेनाको रामनगरमें लाट गफकी चढ़ाईकी हालतमें मुकाबिला करनेके लिये छोड़कर स्वयं थेकवेलका सामना करनेको पधारे। पर शेर सिंहको लाट गफके कौशल तोड़नेवाली इस तरकीबका पता थेकवेल साहबको मालूम होगया। स्वयं थेकवेलने अपने इतिहासमें लिखा है, कि शेर सिंहके दलके एक घुड़सवारने मुझे सिखोंकी यात्राका हाल सुनाकर सचेत किया था। उस स्वदेश-विद्रोहीने और भी कहा था, कि सिख लोग अङ्गरेजी सेनाके बांये भागपर पहिले आक्रमण करेंगे। थेकवेल साहब घबराये; उनका इरादा तो आक्रमण करनेका था; पर इस समय देखा कि उनपर आक्रमण होनेवाला है। आक्रमण करनेसे आक्रमण सह्य करना उनको बहुत कठिन सूझने लगा। सब हाल प्रधान सेनापतिको लिख भेजा। सेनापतिने कहा, "मैं सेनासहित ब्रिगेडियर गौडवीको तुम्हारी सहायताके लिये भेजता हूं। गौडवी जबतक न पहुंचें सिखोंसे न लड़ना।"

पर प्रचण्ड सिपाही शेर सिंह जब धावा करनेको चढ़ आये थे, तब उस कामसे कब चूकने वाले थे? थेकवेल पर चढ़नेको दौड़े। थेकवेलने गौडवी साहबके आनेके पहिले आक्रमण सह्य करनेमें केवल अपनी दुर्ब्बलता ही नहीं देखी, बल्कि प्रधान सेनापतिकी आज्ञाके विरुद्ध वसा करना अनुचित भी विचारा। जिधरसे गौडवीके आनेकी बात थी, उधर ही वह भाग चले। शेर सिंहने अपनी सेना इस फुर्त्तीसे दौड़ाई, कि सादुल्लापुरके पास थेकवेलकी सेनाको जा लिया। गोले दनादन अङ्गरेजों पर गिरने लगे। थेकवेलने पहिले अपनी सेना वहीं खड़ी कराई। पीछे कुछ दूरपर एक ईखका खेत

देखकर उसकी भाड़से लड़ना अच्छा विचारकर वहीं थके। अङ्गरेजी सेनाको फिर पीछे फिरते देखकर सिख आनन्दसे यह कहकर चिल्ला उठे, "फरङ्गी फेर भागे जान्दे हैं।" प्रायः दो बजे दिनको सिख लोग अङ्गरेजों पर बड़ी प्रचण्डतासे टूट पड़े। दो घण्टेतक इस आक्रमणको उन्होंने सह्य किया; इस बीचमें अङ्गरेजोंने एकबार छिपछिपाकर सिखोंपर हमला किया था; पर सिखोंने अनन्त विक्रमसे आत्मरक्षा कर शत्रुओंको बड़ी हानि पहुंचाई। दिन डूब रहा था। रात्रिको और भी हानिकी आशङ्काकर तथा गौडवीथ्ये अभीतक न पहुंचनेसे निराश होकर थैकवेल साहबने वहां देर तक न रहना ही उचित विचारा। शेर सिंहने भी रात्रिका आक्रमण अनुचित समझा। वह कुछ भी हानि न सहकर वहांसे गसास तोप आदि लेजाकर एक बड़े अच्छे स्थानमें छावनी बनानेको पहुंचे। योंही लाट गफका कौशल निष्फल हुआ; पर तो भी वह सादुल्लापुरकी लड़ाईमें अङ्गरेजोंसे विजय लाभ होनेका इश्तिहार देनेमें न हिचके। किन्तु "कैलकटा रिव्यू" पत्र तथा मार्शमैन साहबके इतिहासमें स्पष्ट रूपसे लिखा हुआ है, कि युद्धसे शेर सिंह हीने नफा उठाया, क्योंकि वह अङ्गरेजोंका इरादा तोड़कर अपनी इच्छानुसार सुबीतेके मुकाममें पधारे थे।

सादुल्लापुरसे पधारनेके बाद शेर सिंहपर अङ्गरेजोंने ४० दिनतक आक्रमण न किया। यदि अपने इश्तिहारके मुताबिक सचमुच लाट गफ सादुल्लापुरमें विजयी हुए थे, तो इतने दिन उनको आक्रमणका हौसिला क्यों न हुआ? उनके आगेके कार्य्यसे स्पष्ट ही मालूम हो जाता है, कि वह अपनी वर्त्तमान सेनाको कट्टर लड़ाके सिखोंपर चढ़ा ले जानेके लिये कितनी दुर्ब्बल

समझते थे। नहीं जानते, हरेक लड़ाईमें, चाहे हार हो वा जीत, अङ्गरेज सेनापतियोंके लिये विजयका घमण्ड करना ही स्वाभाविक है, कि नहीं; पर रामनगरकी लड़ाईके परिणामसे भीत होकर सेना बढ़ानेके लिये लसूरी नामक स्थानमें इतने दिन जङ्गी लाटको पड़ा रहना पड़ा था। सन् १८४६ ई०की १२वीं जनुवरीको लसूरीसे डिङ्गी नामक स्थानमें पधारकर सेनापति गफने अपनी बढ़ी चढ़ी सेनाकी छावनी बनाई। यहांसे ४ कोस पर रसूलमें शेर सिंह अपनी सेनाको अङ्गरेजोंके मुकाबिलेके लिये तय्यार करने लगे। सिख-छावनीके पीछे झेलम तेज धारमें बहती थी, सामने एक छोटासा जङ्गल स्थित रहकर शत्रुओंको उसकी दुरुस्तीका पता लगाने नहीं देता था; उसके दांये और बांये भाग रूङ्ग और रससे रक्षित थे। अङ्गरेजोंने उसके पीछेकी राह रोककर सामनेसे उसपर हमला करना विचारा। १३वीं जनुवरीको चिलियांवालामें पधारकर लाट गफ दूसरे दिन सिखोंपर उक्त रीतिपर आक्रमण करनेका प्रबन्ध कर रहे थे, कि इतनेमें उन्होंने घबराकर देखा, कि चतुर शेर सिंहने उनका यह इरादा एकबार ही निष्फल कर दिया। उन्होंने आहिस्ते आकर एकायक अङ्गरेजी छावनीपर आक्रमण कर अङ्गरेजोंको चकित कर दिया। ब्रटिश-सिंहकी तुलनासे सामान्य तिनके समान सिखोंका यह घमण्ड देखकर अङ्गरेजोंमें क्रोधकी ज्वालामुखी जल उठी। इस घमण्डको तोड़नेके लिये वीर ब्रटिश सेना बड़ी फुर्तीसे गोलोंकी वर्षा करने लगी; पर अदम्य सिख कुछ भी विचलित न हुए। दो घण्टे योंही निष्फल तोपें दागनेके बाद सेनापतिने सेनाको आगे बढ़नेकी आज्ञा दी। ब्रिगेडियर जनरल कौलिन काम्बलकी पैदल पल्टनने सबसे

पहिले धावा किया। यह पल्टन दो भागोंमें बंटी थी; पहिला भाग स्वयं कम्बलकी अधीनतामें हगन साहबसे और दूसरा ब्रिगेडियर पेनिकुइक द्वारा चलाया जाता था। इन विदेशी वीरोंने देखते ही देखते घोर लीला मचा दी; सिखोंकी कई तोपोंमें इन्होंने कीलें जड़ दीं। पर सिख इतने पर भी न दबे; तलवार चमकाते हुए उन तोप बन्द करनेवाले वीरोंकी मुड़ियां धड़ोंसे अलग कर लीं और कीलोंको निकाल कर फिर उनसे अग्निकी वृष्टि करने लगे। स्वयं कम्बल बहादुर इन आगे बढ़े हुए अङ्गरेज वीरोंमें शामिल थे। पर केवल सौभाग्यसे ही उनकी जान बच गई। एक सिखने अपनी प्रचण्ड तलवार उन-पर तानी थी। सेनापतिका जीवन लहमे भरमें निकल जाना निश्चय जानकर एक गोरे सिपाहीने अपनी तलवारसे उस सिखकी तलवारको रोकना चाहा। पर सिखके भीषण आघातसे उसकी तलवार कई हिस्सोंमें बंट गई। तलवारकी गति इस कदर रुकने पर भी वह कम्बल साहबके बदनमें घुसनेसे बाज नहीं आई। साहबको सख्त जखमी होकर सेजकी शरण लेना पड़ी। इतने पर भी कम्बलकी सेनाने सिखोंसे चार तोपें छीनकर अङ्गरेजोंकी प्रतिष्ठा बिगड़ने न दी।

पर ब्रिगेडियर जनरल कम्बल द्वरा गठित यह प्रतिष्ठा उनके सहकारी पेनिकुइककी पराजयसे बहुत बिगड़ गई। पेनि-कुइक बड़ी सेना लेकर सिखोंपर घोर विक्रमसे दौड़े थे। पर तोप बन्दूकोंकी अयथे आवाजोंसे अङ्गरेजी सेनाकी गति रोककर सिख लोग तलवारोंसे उसकी अनन्त दुर्गति करने लगे। अङ्गरेजोंसे यह अटल वीरता सही नहीं गई; पीठ दिखाना पड़ी। तो भी निस्तार नहीं! सिख उन बड़ी तेजीसे भागने-

वाले अङ्गरेजोंमें पहुंचकर रक्तकी नदी बहाने लगे। स्वयं ब्रिगेडियर पेनिकुइक अपने पांच स्वदेशियोंके साथ विदेशी भूमिमें, विदेशियोंके हाथसे परलोक सिधारे ; महारानी भारतेश्वरीकी रक्तरञ्जित विजय पताका सिखोंने अङ्गरेजोंसे छीन ली। ब्रिगेडियर जनरल कौलिन कम्बलकी सेनाने दो हिस्सोंमें बंटकर जब सिख सेनाको दो स्थानोंसे आक्रमण किया था, तब सर जान गिलबर्टकी पैदल सेनाने भी दो हिस्सोंमें बंटकर दूसरे दो स्थानोंसे सिखोंपर हमला किया था। एक हिस्सा ब्रिगेडियर गौडवी और दूसरा ब्रिगेडियर मौण्टेन द्वारा चलाया जाता था। गौडवीके आक्रमणको कुछ देर सम्भालकर सिख भागने लगे। पर अङ्गरेजोंने पीछा न किया। वे अपने अगणित जखमी स्वजातियोंको उठाने पटानेमें व्यस्त थे, इतनेमें सिख फिर लौट आये और पीछेसे ऐसी चालाकीके साथ आक्रमण किया, कि उनके भागनेकी राहतक रुक गई। पर इस कौशलमय आक्रमणसे सम्पूर्ण अङ्गरेजोंके कटकर खेतमें सो जानेसे पहिले उनके बड़े सौभाग्यवश कप्तान डेनने अपनी सेना और तोपोंके साथ पहुंचकर उनकी रक्षा की। अगणित ताजे सिपाहियोंका यह नया आक्रमण तोपोंसे हरदम आग बरसाकर भी सिखोंसे सहा नहीं गया। उनकी तीन तोपें शत्रुओंसे छीन ली गईं। उधर ब्रिगेडियर मौण्टेनकी सेनापर अति गहरी विपद उपस्थित हुई। पहिले ही पांच तोपें छीनकर अङ्गरेजोंकी इस सेनाने बड़ी बहादुरी तो दिखाई थी ; पर थोड़ी ही देर बाद सब बहादुरीकी मट्टी खराब हुई। सिखोंकी अग्निवृष्टिसे अङ्गरेजोंमें महाहत्या मची। महाराजपुरके घोर युद्धमें मरहट्टोंको हटकर अङ्गरेजोंने जो विजय-पताकायें हासिल की थीं,

उनकी विजयी सिखोंके हाथ तिलाञ्जलीकर मौण्टेनकी सेना भाग गई। ३० नम्बर देशी पद्ल पल्टन इन अत्याचारसे अङ्ग-रेजोंकी रक्षा करनेके लिये आगे बढ़ आई थी; पर उसकी भी ऐसी ही दुर्गति हुई।

यों चार स्थानोंसे अङ्गरेजी पैदल सेना सिखोंपर हमला करके केवल दो स्थानोंमें कुछ कुछ हानि पहुंचा सकी। शेष दो स्थानोंसें उलकी नसी हानि हुई, अङ्गरेजोंने इसी प्रपार विचार कर अब पैदलके बदले घुड़सवारोंसे काम लेना ही उचित विचारा। मेजर जनरल सर जोसफ थैकवेल आज्ञा पाते ही अपनी प्रचण्ड घुड़सवार सेना लेकर सिखों-पर जा गिरे। थैकवेलने अपने स्वाधीन अफसर युनेटको दो पल्टन लेकर शेर सिंहके विभाग पर आक्रमण करनेकी आज्ञा दी। एक पल्टनको तो सिखोंने देखते ही देखते भगा दिया। युनेट साहबने शेष पल्टनके साथ फिर सिखोंका व्यूह तोड़नेकी अमानवी कठोरता प्रगट की; पर सब चेष्टा व्यर्थ हुई; स्वयं युनेट साहब यमराजके दरवाजे पर पहुंचे, और स्वयं थैकवेल साहबने अपने पञ्जाब युद्धके इतिहासमें लिखा है, "मुझे मालूम हुआ, कि मेरी सेनाका एक भी मनुष्य जिन्दा नहीं है।" इस विकट पराजयसे भी अङ्गरेजोंने हिम्मत न खो दी। अपनी सेनाके दाहिने भागसे लाट गफने लफ्टएट करनल पोप साहबको चार रिजमण्ट घुड़सवारोंके साथ सिखोंके विरुद्ध भेजा। इनमें घुड़सवार भाला-धारियोंकी भी एक पल्टन थी। सिख लोग प्रचण्ड विक्रमसे इन भीषण घुड़सवार वीरोंका आक्रमण सहने लगे। जब भालाधारी अङ्गरेजी सेना भालोंको बढ़ाने लगी, तब सिखवीर अपनी विशाल ढालोंसे भालोंको

रोकते हुए तलवारोंके भयावने आघातसे घुड़सवारोंको घोड़ों-समेत काटने लगे। भाले उनकी ढालोंमें टोकर खाकर तलवारोंकी चोटोंसे टुकड़े टुकड़े होने लगे। एकवेल साहबके इतिहाससे मालूम होता है, कि इस लड़ाईमें सिखोंका एक एक पैदल सिपाही तीन तीन अङ्गरेज घुड़सवारोंको यमराजके घर भेजने लगा। लड़ाईका दृश्य अति भयानक हुआ ; सिख लोग बिजलीकी भांति अङ्गरेजी सेनामें घुसकर उसका सर्व्वनाश करने लगे। घुड़सवारोंके सेनापति पोप साहब भी रणक्षेत्रमें सो गये। मुखिया-रहित अङ्गरेजी सेना अब भागनेको लाचार हुई। पर सिखोंने पीछा न छोड़ा। महाभयसे भागनेमें रोगी, जखमी, कहार डाक्तर सब पीछे रहकर यमदूतोंके समान शत्रुओंके पदाघातसे कुटने लगे। रसद इधर उधर छितरा गई। तोपोंकी खबर किसीसे लेना बन न पड़ी। घुड़सवा-रोंमेंसे किसीने एकबार लाट गफके पास निरापद ठौरमें पहुं-चनेसे पहिले घोड़ोंकी लगाम कहीं भी न थामी थी। मेजर क्रिष्टी तोपोंको लेकर भागते थे। मेजर साहब सिखोंकी तल-वारोंसे साथियों समेत जमीन चूमने लगे ; तोपें सिखोंके हाथ लगीं। सिख आगे बढ़ने लगे ; गोलन्दाजोंकी रक्षाके लिये कुछ महावीर अङ्गरेज दुर्जय सङ्गीन लेकर दौड़ने लगे थे। पर हाथकी सङ्गीन हाथमें लेकर वे खेतमें बिछने लगे। प्रधान सेनापति गफका मुकाम भी अब निरापद मालूम न हुआ ; सिख जिस विक्रमसे आगे बढ़ रहे थे, उससे थोड़ी ही देरमें सेनापति गफके स्थानतक उनके पहुंच जानेकी पूरी सम्भावना देखकर लोग उनको भागनेकी सलाह देने लगे ; केवल सौभाग्य-वश सेनापतिके शरीररक्षकोंके बड़े वेगसे तोप दागते रहनेके

चारिश लाट गफ इस समय भागनेकी चेष्टातीमें लग्न गये। विजयी सिख अङ्गरेज घुड़सवारोंको परास्त कर, अङ्गरेजी छावनीमें घुसके अङ्गरेज गोलन्दाजोंका सर्व्वनाश कर और पदलोंको पैरोंसे रौंदकर विजयके इनाम रूपी अङ्गरेजी तोपोंके साथ अपनी छावनीमें लौट गये।

अब लाट गफने विजयका अन्तिम उद्यम किया। ग्राइरूड और क्राइट साहबोंको अपने बांये भागसे सिखोंके दायें भागपर आक्रमण करनेकी आज्ञा दी। वे तोपोंकी गर्जनसे आसमान फाड़ते हुए चले। कुछ कालसे अतर सिंहकी तोपोंको बन्द देखकर ग्राइरूड साहबने विचारा, कि मेरी तोपोंने ही अतर सिंहकी तोपोंकी गर्जन रोक दी है। पर उनको यह कपोल-कल्पित सुख देरतक भोगनेका सौभाग्य न हुआ। देखते ही देखते अतरकी तोपें फिर गरजने लगीं। अगणित अङ्गरेजोंके धुर्रे उड़ गये, उनकी तोपें तथा रसद समेत गाड़ियां चूर चूर हो गईं। पांच बज गये थे; सन्ध्या प्रायः आगई थी। अङ्गरेजोंसे सिख सेनाका अत्याचार अब सहा नहीं गया। अपने मानके साथ साथ बहुतेरी विजय-पताकाओं तथा संसार-डरावनी तोपोंको शत्रुओंको हाथ छोड़कर थके मांदे भूखे प्यासे स्वजातियोंको रात्रिके सिख-आक्रमणसे बचानेके लिये प्रधान सेनापति लाट गफको रणस्थलसे चिलियांकी तरफ चला जाना पड़ा।

अङ्गरेजोंके बड़े सौभाग्यसे धर्म्म-प्राण सिख उनका पीछा न कर युद्धमें मरे भाइयोंकी अग्निक्रिया करने लगे। पर इस लड़ाइके बाद लाट गफने एक विचित्र लीला दिखाई। चिलियां-वालाके युद्धका विजयमुकुट पहिनकर जब शेर सिंहने विजय-

सूचक तोपध्वनि की, तब अङ्गरेज सेनापतिने भी अपने भागनेके मुकामसे विजयका डङ्का बजाया। पर "ईल होसीका भारत शासन" नामक एक प्रसिद्ध अङ्गरेजी इतिहासमें लिखा है, "यदि सिख लोग इस प्रकार और एक विजय प्राप्त करते तो पञ्जाब ही क्यों, ब्रटिश भारतसे भी अङ्गरेजोंको हाथ धोना पड़ता।" उनदिनोंके "कलकत्ता रिव्यू" पत्रमें एक अङ्गरेजने लिखा था, "भारतमें अङ्गरेजोंने जितने युद्ध किये हैं, उनमेंसे चिलियांवालाका युद्ध उनके लिये अति भयानक हुआ।" हिन्दू विद्वेषी सर लेपिल ग्रिफिन साहबको भी अपनी "पञ्जाबके राजा" नामक पुस्तकमें स्वीकार करना पड़ा है, "चिलियांवालाका युद्ध अफगानस्थानकी महाहत्याकी भांति अङ्गरेजोंके लिये भयावना हुआ।" के साहबने अपने प्रसिद्ध "सिपाही-युद्धके इतिहास"में लिखा है, कि चिलियांवाला युद्धमें ब्रटिश तोपें छीन ली गई हैं, ब्रटिश-पताकाओंने हाथ लगकर विजयी सिखोंका गौरव बढ़ाया है, "ब्रटिश घुड़सवार-सेना सिखोंसे परास्त होकर जान बचानेके लिये भेड़ोंकी भांति भाग गई है।" सदा बढ़ती चढ़ती आई हुई अङ्गरेजी जातिसे यह भयानक अपमान सर्व्वथा असह्य हुआ। प्रसिद्ध लड़ाके लाट गफको प्रधान सेनापतिके पदसे च्युत करना ही अङ्गरेजोंको उचित जंचा। नेपियर साहबके इतिहाससे मालूम होता है, कि इङ्गलण्डके अद्वितीय वीर नेपोलियन-दर्पहारी ड्यूक आव वेलिङ्गटनको भी इस हारसे इतना उत्साहित होना पड़ा था, कि सिन्धविजयी नेपियर साहबको प्रधान सेनापति बनाते समय उन्होंने कहा था, "यदि तुम नहीं जाना चाहते हो, तो स्वयं मुझे हिन्दुस्थान जाना होगा।"

अङ्गरेजोंकी सौभाग्य-लक्ष्मीको देखकर लाट गफको इस अपमानके सोतेमें बहाना अभीष्ट न था। चिलियांवालाके युद्धके बाद अङ्गरेज चिलियांमें और सिख रसूलमें पचीस दिन तक बैठे रहे। यहां दोनों विरोधियोंकी सेना बढ़ाई जाने लगी। लाट गफको अन्य सेनाओंके उपरान्त जनरल ह्वीलकी सहायता मिली। वह मूलराजको दबाकर अब अपनी १२ हजार सेनाके साथ प्रधान सेनापतिसे मिलनेको समर्थ हुए थे। उधर शेर सिंहको अफगान नरेश दोस्त मुहम्मद खांसे १५ सौ सेनाकी सहायता मिली और इतने दिनके बाद शेरके पिता सरदार छत्र सिंह अपनी सेना सहित पुत्रकी सेनामें मिलनेको समर्थ हुए। सरदार छत्र सिंहके साथ युद्धके कैदी मेजर लारन्स तथा लफटण्ट हरबर्ट और बोई शेर सिंहके खेमेमें आये। ये तथा दूसरे कैदी अङ्गरेज सिखोंकी सज्जनतासे मोहित होगये थे। सामरिक नियमोंके अनुसार फिर लौट आनेकी प्रतिज्ञापर सिख लोग इन्हें अपने खेमोंसे दो कोसपर स्थित अङ्गरेजोंसे बराबर मिलने देते थे। इससे सिखोंको एक बड़ी हानि भी हुई। उन्होंने एकबार सिखोंके खेमेमें ऐसी चर्चा होते सुनी थी, कि सिख अङ्गरेजोंकी जिन तोपोंसे इतना डरते हैं, न जाने वे उन्हें क्यों बहुतायतसे नहीं चलाते हैं? डेविनपोर्ट अडाम साहबके इतिहाससे मालूम होता है कि उक्त कैदियोंने अङ्गरेजोंसे मिलनेकी इजाजत पाकर उनको वह बात सुनाई थी। इस लिये इस बार तोपोंका प्रबन्ध खूब पक्का किया गया। उक्त अङ्गरेजोंके रहनेसे शेर सिंहको और एक हानि उठाना पड़ी थी। शेर सिंहने उनसे कहा था, कि हमारे सदाके उपकारी अङ्गरेजोंसे लड़नेमें हमे बड़ा दुःख होता

है। नन्धि हो जानेसे हमारी भांति कोई भी प्रस न होता। उन अङ्गरेजोंने अङ्गरेजी खेमेसे लौट आकर कहा, कि हमने जङ्गी लाटसे सन्धिका प्रस्ताव किया था। सो शेरने इस प्रस्तावका उत्तर न आने तक अङ्गरेजोंपर हमला करना अनुचित माना। इस सज्जनताकी ढिलाईके लिये अङ्गरेजोंको बल सञ्चय करनेका वड़ा सुबीता हुआ। जब उत्तर आया, कि सन्धि करना मञ्जूर नहीं है, तब अङ्गरेज लोग लड़ाईके लिये विलक्षण तय्यार हो चुके थे।

सन १८४८ ई॰ की ६वीं फरवरीको एकाएक अङ्गरेजोंको खबर मिली, कि सिख लोग अपनी रसूलकी मजबूत छावनीको छोड़कर चले गये हैं। पहिले अङ्गरेज लोग इस यात्राका अभिप्राय समझ न सके। उस समय वे सिखोंको मूर्खताके कालङ्कसे मढ़ने लगे; क्योंकि रसूलमें सिखोंको परास्त करना अङ्गरेजोंके लिये असम्भव नहीं, तो वड़ा कठिन होता। पर पीछे जब सुना कि वे लाहौरकी तरफ पधारे हैं, और चालाकीसे अङ्गरेजी सेनाके पाससे चले गये हैं, तो उनकी घबराहटका पार न रहा। उन दिनोंके "कलकत्ता रिव्यु पत्रसे मालूम होता है, कि इस रणयात्रासे पञ्जावका सम्पूर्ण सार भूखण्ड और दिल्लीसे लाहौर तककी राह सिखोंके हाथ लगी। यदि इस यात्रामें शेर सिंह सफल मनोरथ हो सकते तो पञ्जाब क्या, सम्पूर्ण भारतमें उनकी विजय-पताका उड़ना असम्भव न होता। पर भगवानको भारतमें अङ्गरेजोंका सौभाग्य सितारा ही चमकाना था। लाट गफकी अटल चेष्टासे शेर सिंहकी लाहौर पहुंचनेकी राहमें कांटे बिछ गये। उनको गुजरातमें चलकर अङ्गरेजोंसे लड़नेकी तय्यारी करना पड़ी।

सन १८४६ ई०की २१ वीं फरवरी सिखोंके लिये कराल मूर्त्तिमें उदय हुई। प्रातःकाल होते ही गुजरातमें १०० ब्रटिश तोपोंकी भीषण वर्षा होने लगी। केवल ५६ छोटी छोटी तोपोंसे सिखोंको उसका उत्तर देना पड़ा। सिखोंकी अमानवी फुर्त्तो भावसे कब गिरिविदारी वृहत तोपोंका सामना करना सम्भव था? अनेक सिक्खतोपें चूर हो गईं। अब इस समय सिखोंकी चिरसहेली तलवार ही भरोसेकी ठौर थी। तलवार मात्र अवलम्बन कर सिख लोग अङ्गरेजी सेना भेदकर लाट गफके पासतक पहुंच गये। पर इसी समय थेकवेल साहबके सिंह-विक्रमसे अफगान सेनाके राह देते ही, सिखोंका उधरका व्यूह टूट गया। अङ्गरेजी सेना चटपट व्यूहके भीतर घुस गई। सो सिख सेनाको तितर बितर होना पड़ा। इस अवसरपर भी अङ्गरेजी सेनाकी सङ्गीन बांये हाथसे धारण करके दांये हाथसे तलवार चलाकर जिस विक्रमसे सिखोंने शत्रुओंमे घोर हत्यालीला मचाई वह वीर अवीर सबके ही स्मरण रखने योग्य घटना है। पर अब नहीं। रावलपिण्डीमें रसदके अभावसे, अस्त्रके अभावसे छत्र सिंह, शेर सिंह आदि सरदारोंको १६ हजार सिखों समेत १४वीं तारीखको अङ्गरेज अफसर गिलवर्ट साहबके हाथ आत्म समर्पण करना पड़ा, जिस रीति पर परराज्यहारी लाट डेल-हौसीने अपने सिवपुत स्वाधीन बालक दलीपका राज्य हरकर युग युगके लिये पञ्जाबियोंकी स्वाधीनता छीन ली—वह सब दृश्य इस पुस्तकमें नहीं दिखावेंगे। यदि सुबीता हुआ, तो फिर कभी चेष्टा की जावेगी।